*डॉ० हरेकृष्ण मेहताब भारत की आजादी की लड़ाई के प्रमुख सेनानियों तथा उन कुछ ख्याति प्राप्त मनीषियों में से हैं, जिन्होंने एक ओर देश के संगठन और विकास के लिए संघर्ष किया है, दूसरी ओर वैचारिक व साहित्यिक कृतियों से साहित्य का भंडार भरा है।

आपकी श्रेष्ठ कृतियों से उड़िया साहित्य की प्रचुर समृद्धि हुई है।

*घर की चार दीवारों में बन्द एक नारी की द्विधा, पलायनवादी मनोवृत्ति और पथ के प्रति आग्रह, तीन उदात्त चरित्रों के प्रेमभावों का त्रिकोणात्मक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रारंभिक कलेवर के चित्रण और वर्ग-संघर्ष के बीच पनपती प्रेम-कथा, जो घुटन और द्विधा को एक लक्ष्य देती है। उड़िया की एक विशिष्ट कृति का हिन्दी रूपान्तर।

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी-१

डॉ॰ हरे कृष्ण मेहता

अनु. अनुसूया प्रसाद पा





80 : PRATIBHA : NOVEL.
Dr. Harekrishna Mehatab

प्रथम संस्करण
१९६४

*

1/-

*

प्रकाशक
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
पो. बॉक्स नं. ७०, पिशाचमोचन
वाराणसी–१

मुद्रक
विद्यामन्दिर प्रेस (
मानमन्दिर
वाराणसी–१

प्रतिभा

******

गरीब घर के लिये, आदमियों के साथ सम्बन्ध करने में विष्य जितना आनन्दमय होता है, समस्याओं के समाधान में उससे हीं अधिक दुखद भी होता है। जिस दिन से सनातन ा कन्या के विवाह की बात रामहरि के लड़के के साथ र हुई, उसी दिन से सनातन के सिर पर मानों बोझ-सा पड़ या। कितनी ही आशाओं की लहरें उसके दिल में उठतीं और से अस्त-व्यस्त कर देती थीं।

रामहरि जमींदार और धनीमानी व्यक्ति हैं। उनके वंश की ज्जत है, वहीं सनातन की लड़की जायेगी, इस विषय में गाँव-लों को कल्पना तक नहीं थी। किन्तु भाग्य की बात कहो या ातन की चतुरता का जोर कि सनातन की लड़की की शादी ीं तय हो गयी। रामहरि का पुत्र कटक कॉलेज से बी० ए० स कर वहीं वकालत पढ़ता था। रामहरि खुद पूरे ग्रामीण थे किन उनकी अभिलाषा थी कि पुत्र वकील बने और हाकिम के मने एक मातबर आदमी होकर खड़ा हो। वकील होकर वह ये तो कमायेगा ही, नाम भी कमायेगा। यही सोचकर कृपण ो पर भी पुत्र के पढ़ने में जो अर्थ-व्यय होता था, उसमें उन्होंने सी नहीं की। लड़के को वकील होने में दो वर्ष बाकी थे, इसी य उसकी माँ ने जिद की—"अब लड़के की शादी हो जानी हिए।"

घर के एक कोने में पड़ी रहनेवाली स्त्रियों के मन में पूर्णिमा-आदि को छोड़ कर दुनिया के और अन्य आमोद-प्रमोद उप-ा करने का अवकाश नहीं मिलता। जिसके घर में लड़के-कियाँ होती हैं, वे अपने बच्चों के शादी-ब्याह कराने—उसी न्ध में बातचीत चलाने, जन्मपत्री देखने-दिखाने, मिलने-

मिलाने, फिर ब्याह, कन्या लाना और विदा कराना, उसके
पर अपना अधिकार जमाना, फिर बाल-बच्चे होने पर नाती-न
को लेकर खेलने तक के अनेक आनन्ददायक काम सामने आ
हैं। रामहरि की स्त्री स्वामी के पीछे लगी कि लड़के के
की बात क्यों नहीं चलती ? रामहरि ने स्त्री की इच्छा में
देने का कोई कारण नहीं देखा। वे खुद ही अपनी जात-बि
में नजर दौड़ाने लगे। गरीब घर की कन्या हो, सुन्द
हो, इस प्रकार की बहू की कल्पना उन्होंने की। कारण कि ब
की बेटी बात नहीं सुनती। लड़की जितने गरीब
की होगी, उतनी ही आज्ञाकारिणी बनेगी—ऐसा उनका वि
और अनुभव था; क्योंकि खुद उनको पत्नी अति गरीब घ
लड़की थी। केवल इतना ही नहीं जन्मपत्री भी ठीक मिल
जिससे कि कन्या के ग्रहदोष से पुत्र पर किसी प्रकार की
न आये। ये सब बातें सनातन की कन्या में पूर्ण हुईं, वहीं
की बात पक्की हो गयी। प्रारम्भ में और जन्मपत्री मि
कुछ दिक्कतें आई थीं; किन्तु ज्योतिषी को हाथ में कर
गया और जन्मपत्री मिल गई। वर की ओर से रामहरि ने
को देखने के लिये जिसे भेजा था, वह कन्या के सौन्दर्य को
जितना मुग्ध नहीं हुआ, उससे कहीं अधिक मुग्ध हुआ था
के अतिथि-सत्कार और पुरस्कार से। शुभ लग्न देखकर ब्य
दिन भी तय हो गया, इसके बाद सनातन के सिर पर चिन्ता
लगी। सनातन एक जमींदार के घर गुमाश्ते का काम कर
मासिक ३) वेतन पाते हैं। अवश्य कुछ ऊपरी आमदनी भी
है। साधारणतः मासिक ७-८ रुपये पड़ जाते हैं। इसके
उनकी आय का दूसरा जरिया नहीं था। घर में एक पुत्र, स्त्र
और एक कन्या है। कन्या देखने, पुरस्कार देने, जन्मपत्री
आदि में, तथा अन्य खर्च करने में तेज दीखे। वे जब यह सो

जमींदार घर की बहू होगी, दामाद तो धन का स्वत्वाधिकारी
ो। एक जमींदार के यहाँ इतने दिन तक काम करने की जो
ता है, वह दामाद और समधी से अज्ञात नहीं रहेगी।
दिल को यह पूरी तसल्ली हो गयी कि समधी की जमींदारी
करी मिलना कोई कठिन कार्य नहीं होगा। नौकरी मिल
के बाद जमींदार के साथ जो सम्बन्ध जुड़ रहा है, इसके
ाम-स्वरूप थोड़े समय में वह कर्ता बन जायेंगे—इस प्रकार
विष्य की छवि जब सनातन के मन में अंकित हो जाती, तो
ो छाती के अन्दर से एक आनन्दमय निःश्वास निकलती और
विघ्न-बाधाओं को दूर कर आगे बढ़ने में उनको काफी शक्ति
ती। उनके लिये सबसे सौभाग्य की बात तो यह थी कि
की ओर से दहेज की माँगें नहीं हुईं, कारण कन्या को दरिद्रता
क गुण समझ लिया गया। फिर भी शादी में दो सौ रुपये
का खर्च तो होने का नहीं, बारात आयेगी, तो उस की सेवा
। ही होगी; और फिर लड़की को दो-एक गहने तो देने होंगे।
श्य यह सब खर्च मय ब्याज के वसूल करके आजीवन सुखसे
। कटेगा। यह आश्वासन भी मन के अन्दर था—"इस ब्याह
ो खर्च होगा, वह भावी आशा की तुलना में कुछ नहीं है।
र फिर अगर लड़की ने जरा भी बुद्धि होगी, तो दो साल के
दर भाग्य का नक्शा ही बदल जायेगा।" ये बातें वह लड़की को
ा कर कहते।

सनातन की पत्नी मन में यह धारणा थी, कि घर-गृहस्थी में
प्रवेश करने के समय से आज तक जो कुछ संपत्ति उसने जमा
ो है, वह सनातन को मालूम हो गयी है और वे उसे लेने की इच्छा
रते हैं। किन्तु वह इसको हाथ से छोड़ना पसन्द नहीं करती। वह
ातें सुनती और कहती—"देखो, कहीं से रुपये का जुगाड़ करो,
ं लुगाई भला क्या कर सकती हूँ?" सनातन समझ जाते, निशाना

ठीक नहीं बैठा। फिर कोशिश करते—इसी प्रक चलता।

वास्तव पत्नी के पास दो सौ रुपये थे। अपनी से लेकर आज २० वर्ष के भीतर घर खर्च से बचा-ब व्योंत करके पैसे जमा करती, जब एक रुपया हो जा सूत्र से रुपया बनाकर सबसे छिपा कर रखती जाती; सौ हो गये हैं। बीच-बीच में उस पूंजी देख कर व होती, रोज शाम को वहीं पर धूप-दीप दान करती भी इसको लक्ष करते। उन्हें विश्वास था कि 'वन विचरण करते हैं, वे सब राजा के ही हैं।' पति-पत्नी खींचातानी होने लगी। पत्नी सोचती, 'जरा-सा दृढ़ ह से स्वामी कहीं-न-कहीं से रुपये का जुगाड़ अपने-अ स्वामी सोचते—'चुपचाप रहने से अपनी लड़की की भविष्य की सुखद आशा के लिए स्त्री अपने-आप निकालेगी।'

✤

सनातन की कन्या केवल देखने में ही सुन्दर न थी, स थी। उसका सौन्दर्य और स्वास्थ्य देखने से उपेन्द्रभंज या का नारी-सौन्दर्य का वर्णन मन में अंकित हो जाता। गाँव स्थिति के अनुसार अन्नचिन्ता ही सबको अस्थिर किये थी असुन्दर देखने की फुर्सत भला किसे! किन्तु कन्या इतनी थी कि वास्तव में अन्नचिन्ता को भुला कर गाँववालों की ब में उसने स्थान पा लिया था।

गाँव में एक उच्च प्राथमिक पाठशाला है। वहाँ का पाठ ...की पढ़ चुकी है। पाठशाला में आनेवाले परिदर्शकों की दृष्टी ...भावत: इस लड़की पर पड़ती। माता-पिता बिटिया को 'अपुछि' से पुकारते थे। इसी के अनुसार पाठशाला के हाजिरी- ...में 'अपुछि देई' नाम लिखा गया था।

एक बार महेन्द्र बाबू इस पाठशाला को देखने के लिये आये ...वे कटक कॉलेज में पढ़ते थे, इनके पिता सब-डिप्टी मजिस्ट्रेट ...उन्हें खूब स्वच्छ-साफ रहने की आदत। गाँव में शिक्षा की ...ति के उद्देश्य से उतना नहीं, जितना कि "हम शिक्षित हैं" ...गाँव के लोगों को मालूम कराने के लिए, ऐसे ही पाठशाला में ...आते-जाते थे। इसका फल यह भी होता कि पाठशाला के गरीब शिक्षक के ऊपर हजार मालिक के साथ एक और शामिल हो जाता। महेन्द्र का ऐसा कुछ उद्देश्य नहीं था। उसके गाँव के घर ...कोई नहीं था। माता-पिता विदेश में थे। घर में केवल एक ...नौकर रहता था। वही घर की देख-भाल करता था; अतएव महेन्द्र का गाँव के प्रति निजी कुछ भी स्वार्थ नहीं था। केवल उनका ...ल यही था कि गाँव में शिक्षा के विस्तार के प्रति प्रत्येक शिक्षित युवक का एक विशेष कर्त्तव्य है। कर्त्तव्यवश ही वे पाठशाला में आये थे। उस समय 'अपुछि' को उम्र १३ साल की थी। वह पाठशाला की ऊँची श्रेणी में पढ़ती थी। महेन्द्र बाबू पाठशाला में चारों ओर नजर डाल गये, तो उनको आँखें 'अपुछि' पर अटक गईं। उन्होंने कनखियों से उधर देख कर शिक्षक से पूछा––"इस लड़की का नाम क्या है?" नम्रता के साथ सिक्षक ने कहा––"अपुछि देई!"

महेन्द्र बाबू गंभीर हो कुरसी पर बैठ कर बोले, "हमारे देश में बाल-बच्चों का सुन्दर नाम भी नहीं दिया जा सकता।" उसके बाद महेन्द्र बाबू ने शिक्षक की ओर देख कर लड़की से कहा––"अच्छा जिस किताब को पकड़ी हो, जरा पढ़ो तो?"

लड़की पढ़ने लगी। मधुर स्वर, सुन्दर-स्पष्ट उ
उसके पढ़ते समय महेन्द्र लड़की के मुख की ओर टकटकी
देखते रहे। इस बीच लड़की तीन पन्ने पढ़ गई। महेन्द्र
याद न रहा कि बन्द करने को कहें। लड़की ने सोचा
करनेवाले महाशय किसी दूसरे काम में लग गये हैं। उ
पर से मुख ऊपर उठा कर महेन्द्र बाबू की ओर देखा
सम्पूर्ण नेत्रज्योति सिमिट कर उसके मुख पर जमी है
लज्जित हुई, महेन्द्र बाबू ने भी थोड़ा संकोच अनुभव कि
उसके बाद शिक्षक से हाजिरी-खाता माँगा। 'अपुछि'
पर लिखा हुआ था, उसपर अपनी कलम से एक लम्बी ल
दी और कहा—"यह नाम 'अपुछि' न होकर 'प्रतिभा' हो
है। सो मैं लिखे देता हूँ 'प्रतिभा देई'!" इतना कहनेके
को देखकर कहा—"समझे मास्टर! नाम सामान्य बात
नाम के अनुसार मानव का गुण भी विकसित होता है।
साइकॉलोजिकल एफेक्ट है।" मास्टर के अंग्रेजी न समझ
फिर समझा कर कहा—"नाम में अर्थ के अनुसार मन
क्रिया-परिक्रिया करने की शक्ति होती है।" शिक्षक उ
पर बराबर 'जी हाँ, जी हाँ!' करते जाते थे। महेन्
थोड़ी देर हाजिरी-खाते को देख कर लड़की की ओर
जाने के लिये उठे। होशियार शिक्षक ऐसे परिदर्शक
आसानी से कैसे छोड़े! नम्रता से बोले, "इस साल पा
छप्पर बंद नहीं हो सका है, आप यदि.....!" महेन्द्
५) रुपये निकाल कर शिक्षक के हाथ में दे दिये।

उस दिन से लड़की का नाम 'प्रतिभा' पड़ गया। घ
पिता ने जिस समय कन्या का कृतित्व सुना, बड़े खुश हु
प्राथमिक परीक्षा में प्रतिभा को सरकारी वृत्ति मिली
उसको और अधिक पढ़ाने के लिये माता-पिता राजी

कटक में रहकर पढ़ने आदि के खर्च का समूचा भार महेन्द्र बाबू लेने को तैयार थे। इससे सनातन लड़की को और पढ़ाने में राजी भी हुए और फिर नाराज भी।

लेकिन जब स्त्री ने मुख खोलकर कहा, "इतनी बड़ी लड़की को कटक भेजकर वहाँ वेश्या-घर में नाम लिखवाने की इच्छा है क्या?" तो महेन्द्र बाबू को पूर्ण विश्वास हो गया कि अब आगे लड़की पढ़ नहीं सकेगी। इससे उनके मन को बड़ा आघात लगा। सोचा—'अशिक्षा और अज्ञानता के कारण कितनी वनवल्लरियाँ प्रस्फुटित हो अनजान में ही नष्ट-भ्रष्ट हो जाती हैं...!" और दीर्घ साँस छोड़ी। लेकिन कटक से शिक्षक के जरिये पुस्तकें और मासिक पत्रिका नियमित भेजते रहे।

पाठशाला से निकल प्रतिभा घर के एक कोने में बन्दिनी हुई। घर से निकल कर बाहर आनेका उपाय नहीं था। माँ हमेशा उस पर आँख रखकर चलती थी, बात-बात में कहती—"इतनी बड़ी लड़की घर के बाहर जायेगी? अरे बाप रे!"

केवल प्रतिभा का छोटा भाई पाठशाला में आता था। उसी के हाथ महेन्द्रबाबू के द्वारा भेजी पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ मिल जातीं और सुविधा के अनुसार प्रतिभा उन्हें पढ़ती थी। अधिक समय पढ़ते देख माँ नाराज हो कहती—"लड़की पाठ पढ़कर क्या नौकरी करेगी? इतनी पढ़ाई भला क्यों होती है?" लेकिन माँ की विरक्ति प्रतिभा के पढ़ने की ओर विरक्ति नहीं पैदा कर सकी।

प्रतिभा सबेरे पौ फटने के पहले उठती, आँगन में गोबर-पानी से लीपती। गाँव के गोइंड़ेवाले तालाब पर अपना नित्यकर्म कर आती और दिन भर के काम के लायक पानी भर रख देती। फिर गोसार का गोबर साफ करती, तब कहीं माँ बिस्तर पर से उठती। उठते ही माँ की अभ्यस्त आँखें घर की चारों ओर घूमतीं। जरा-सी कहीं त्रुटि दिख जाती, तो गालियों की पुष्प-वृष्टि होती। तब

माँ मुख में दाँतुन दबा कर तालाब की ओर चली जा समय गाँव भर की स्त्रियाँ वहीं तालाब पर जमा होतीं के अन्तःपुर की आलोचनाएँ होतीं। आलोचाएँ कभी-कभ रूप धारण कर लेतीं और अगर उस कलह में प्रतिभा भाग ले लेती, तो फिर घर लौटते दिन के दोपहर हो जाते के भीतर प्रतिभा गोसार को साफ करके गो दुहती और रसोई का सारा सरंजाम रखकर कुछ लिखती-पढ़ती। लगता है कि उसका मन वर्तमान अवस्था से संतुष्ट नहीं और ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ी की खोज में था। किन्तु की चाह की खोज करे, तो कौन? वह गरीब घ जो ठहरी!

✤

महेन्द्रबाबू फिर एक बार घर गये। पूर्व रीति पाठशाला भी गये। प्रतिभा के छोटे भाई को पास बुल पर स्नेह-जनित नम्रता के साथ हाथ फेरते हुए पूछा—"तु क्या है?" बालक कुछ समय तक इधर-उधर देखता र कुछ भी उत्तर नहीं दिया। शिक्षक ने आँख दिखा कर क हैं, तुम्हारा नाम क्या है—कह दो न!" बालक धोती हाथ में लेकर मोड़ता रहा, कभी शिक्षक के मुख को देख महेन्द्रबाबू को। आखिर शिक्षक का गर्जन सुनकर धीरे- "सिद्धेश्वर।"

महेन्द्रबाबू साथ में जो किताब और मासिक पत्र आ बालक की ओर बढ़ाते हुए बोले—"इसे ले जा कर प्रति

झे !" सिद्धेश्वर ने धीरे-धीरे आगे हाथ बढ़ा कर गम्भीर भाव
उनको पकड़ा और उदास हो अपनी जगह पर जा बैठा। उसने
र आकर पुस्तक और मासिक पत्र प्रतिभा को दिये। सिद्धेश्वर
ठशाला में एक निरीह बालक जान पड़ता था, किन्तु घर में उसकी
दमाशी से सभी त्रस्त थे। दोनों किताबें ला कर प्रतिभा के ऊपर
क कर बोला—"ले, हमारे स्कूल में महेन्द्रबाबू आये थे, उन्होंने
ते पढ़ने के लिये इन्हें दिया है!" यह कथन प्रतिभा की माँ के काम
पड़ा, वह दौड़कर आई और फुफकारती हुई बोली—"किसने दिया
?" सिद्धेश्वर खेलने के लिए घर से बाहर जाते-जाते बोला—
महेन्द्रबाबू ने दिया है।" अब तो प्रतिभा की माँ को संभाले कौन ?
ली—"वह तुझे किताबें क्यों देता है ? उसे और क्या कोई आदमी
हीं मिला, मेरी ही लड़की को सस्ता पाया है ? धनी है तो क्या,
ब जो इच्छा होगी करेगा ?" आदि-आदि नाना बातें बोलते हुए
गर्जन-तर्जन करने लगी।

प्रतिभा मन-ही-मन खूब लज्जित हुई। कुछ समय नीरव रही,
र धीरे-धीरे बोली—"वे तो हमेशा किताबें भेजा करते हैं, क्या
स बार कोई नयी बात है ?"

माँ क्रोध के मारे बात करने में भी असमर्थ थी, "क्या कहा—
राबर भेजता है! मैं तो जानती थी कि बिटिया पाठशाला में पढ़ती
...और ये किताबें सरकार की ओर से आती हैं। यह महेन्द्र-
बाबू भेजा करते थे ? हमें भी क्या खानगी-खानाबदोश समझ लिया
? जाती हूँ, मास्टर को जरा देखूँ तो!" यह कह कर वह हठात्
बाहर चली गई।

प्रतिभा की माँ को सारा गाँव 'अपुछिमाँ' कह कर पुकारता
था और उस मुँहफट से सभी डरते थे। वह जिस समय लड़ाई-
झगड़ा या गुस्सा करती, उसका चेहरा काफ़ी भयंकर मालूम देता!
उसकी गाली के डर से कोई उसके पास फटकता तक न था। स्कूल

को छुट्टी करके शिक्षक महाशय बरामदे में बैठे हु
समय अपुछिमाँ विकराल रूप धारण किये उपस्थित
उसने बिना कुछ पूछ-ताछ किये, महेन्द्र बाबू और शि
के चौदह पुरखों का नाम गिनना शुरू कर दिया—'
करता है या भड़ुआगिरी करता है ? तेरे पास पाठश
लड़की पढ़ती थी इसलिए तू दूती बना है। तुझे डाकि
डायनी खाये, कुलबोरन !" शिक्षक अवाक-सा कुछ सम
ओर देखता रहा। फिर उसका खून भी गरम होने लगा
उठकर बाँह झाड़ते हुए बोला—"चुप बदमाश ! सरक
के सामने आकर हल्ला मचाती है ?" लेकिन इससे अपु
भी जोरों से चीत्कार किया, "क्या कहा रे कम उमरिया,
खाये ! तेरी औरत रांड़ हो जाय, तेरा वंश बूड़े !" इ
गोल-माल सुनकर आस-पास के पाँच-सात आदमी भी अ
देख अपुछिमाँ, उसी प्रकार गर्जन करके, अपनी ओर सब
उद्देश्य से बोली--"सुनते हो, मेरी लड़की इस की
पढ़ती थी, इसलिये यह लुका-लुका कर उसके छोटे
में किताब इत्यादि भेजता है। इसी मुहल्ले का महेन्द्र
हाथ में करके, मेरी लड़की के पास ये सब जिन्सें और
है। इस निगोड़े ने मेरे घर को समझ क्या रखा है ?"

दर्शकों ने अपना विस्मय प्रगट किया और शि
कैफियत देने लगे--"महेन्द्र बाबू विद्वान् आदमी हैं;
इसकी लड़की अच्छा पढ़ती है, यह जान करके उन्होंने
ही पुस्तकें और मासिक पत्र उसे देने के लिए भे
उन्हें ही भेजा था। इसी पर यह आकर मुझे उलंग भ
देती है।"

यहाँ एक कैफियत चलती थी, उधर गाली भी
आदमी इधर सुनते थे, कुछ उधर। अन्त में यह फै

"शिक्षक से गलती हुई है, सयानी कुमारी कन्या के पास अन्य ... कागज-पत्र देना अन्याय्य है ! लेकिन मास्टर बेचारे ने ... जाने-सुने ऐसा किया है, भविष्य में अब ऐसा नहीं होना चाहिए !" लोगों ने अनुछिमाँ को समझा-बुझाकर घर भेजा। घर पहुँचने तक मास्टर पर गाली की वर्षा होती रही; पर घर जाते ही क्रोध की गति प्रतिभा की ओर मुड़ी, "सुनेगी, जा सुन ! गाँववाले क्या कहते हैं। कुलच्छिन आज घर का मान मिट्टी में मिला दिया ! महेन्द्र कौन है ? क्यों तुझे इतने आदर से किताबें देता है ? पाठ पढ़ कर बबुआइन बनेगी क्या ? तेरे कर्म में न जाने क्या लिखा है ?" इत्यादि कहते-कहते क्रोध की धारा अपने-आप सूख गई।

धीरे-धीरे यह बात समूचे गाँव में फैल गई। गाँवों में जनरव ऐसा चलता है कि उसका थाह पाना नामुमकिन है। गाँव में इस बात पर कानाफूसी होने लगी कि राघव बाबू के पुत्र महेन्द्र और सनातन की लड़की में परस्पर गुप्त कागज-पत्र चलते थे। उस की माँ ने खुद उन्हें पकड़ा है। चारों ओर सोच-समझ कर बात दबा दी गई।

धीरे-धीरे वह जनरव राघवबाबू के घर तक पहुँचा, वहीं महेन्द्र के भी कान में गया। यह सुन कर वह बहुत विचलित हुए कि गाँववालों की निन्दा किस भाषा में करें ! प्रथम तो उसके मन में आया कि इस बात को किसने उठाया, उसी को पकड़ना चाहिए। लेकिन फिर सोचा—यह घटना उनके पिता के कान में पड़ेगी, तो वह क्या समझेंगे ? इसलिये इस बात की जाँच-पड़ताल करना उचित नहीं। केवल शिक्षक को बुला कर सारी बातें सुन गये। कुछ क्षण बाद बोले—"नारी का जहाँ इस प्रकार का निर्यातन है, वहाँ उसका मंगल नहीं है।" इतना कह महेन्द्र ने

शिक्षक को विदा कर दिया। खुद कटक चले गये;
के मन में दिन-दिन नयी बात जगने लगी।

✣

जिस मासिक पत्रिका के लिये इतना हंगामा
मासिक पत्रिका मे 'समाज में नारी का स्थान' शी
छपा था। लेखक थे—हमारे चिर-परिचित महेन्द्रबा
पत्रिका का नाम था "नारी"। उसमें विभिन्न प्र
जागरण और प्रगति के सम्बन्ध में नाना भांति के ले
ने पढ़ा—उसके सम्बन्ध में भी लिखा है कि किस प्रका
का नाम बदला गया, बुद्धि की विचक्षणता होते हु
पढ़ने की कोशिश किस प्रकार व्यर्थ हुई, ये सा
उल्लिखित थीं। उसमें यह भी लिखा था कि अगर प
जिक बाधा न आती, तो प्रतिभा एक दिन नारी-नेत्री
निकलती! लेख को प्रतिभा ने बार-बार पढ़ा।
अपने सम्बन्ध में नाना प्रकार के प्रश्न उठे—"पुरुष
है, तो नारी क्यों नहीं पावेगी? नर मुक्त-आकाश के
उधर घूमेगा, तो नारी ही क्यों अँधेरे घर के भीतर
पक्षी के समान बन्द रहेगी?" उस दिन माँ ने जो गा
उसे याद कर वह लज्जित हुई और क्रोध के मारे वह
माँ कहती थी, "क्या यह वेश्या घर है?...इस का म
क्या सोचती है कि नारी केवल वेश्या-वृत्ति करने के
हुई है? संसार में उसका क्या कोई काम नहीं है?
पुरुष के द्वारा कुछ पढ़ने को पाती थी, तो उस को ले
तक कल्पना कर डाली गई।"

महेन्द्र बाबू अपनी सम्मान रक्षा करने के उद्देश्य से जल्दी ही क वापस चले गये। उनके मन को कठोर चोट लगी थी : "पुरुष लायक मुझे जो सुविधा मिली है, उस का मैं उपभोग करता उसके सम्बन्ध में अगर केवल मुझ तक ही लोग आँखें उठाते, तो आपत्ति नहीं थी; लेकिन मेरे कारण एक निरीह बालिका की बदनामी हुई, उससे तो उसे अति वेदना मिली होगी। गाँव में जो एक हलचल मच गई, वह प्रतिभा के कान में निश्चय होगी, सुनकर उसके मन पर क्या बीती होगी? मेरे प्रति की क्या धारणा हुई होगी? लज्जा के मारे मुख न उठा सकी गी! उसकी माँ ने उसके सम्मान की ओर दृगपात तक नहीं या। सारी बातें घूरे में फेंक दी। दो किताबें भेजना कौन-सा सा पाप था, जिसके कारण एक बालिका के नाम पर ऐसे कलंक काला दाग लग गया? समाज ही इसका दोषी है। किन इस समय तो मेरे कारण ही प्रतिभा कलंकिनी बन हीन वन बिताती होगी। गाँव भर के स्त्री पुरुष उसे क्या-क्या कहते गे? प्रतिभा ने यह सम्भवतः प्रमाणित करने के लिये कि महेन्द्र साथ उसका कुछ भी सम्बन्ध नहीं, शायद मेरी किताबें और ासिक पत्रिकाओं को फाड़ फेंका होगा अथवा अग्नि में भस्म कर दिया होगा। यह भी हो सकता है कि मेरे लेख पर प्रतिभा की जर भी न पड़ी हो? मेरी सारी चेष्टाएँ मिट्टी में मिल गईं। ब तो मैं कभी उसे देख भी नहीं सकूँगा, पुस्तक आदि भी नहीं भेज सकूँगा। अगर किसी तरह भेजूँ भी, तो वह लोकनिन्दा के डर से उन्हें फाड़कर दूर फेंक देगी। यह भी हो सकता है कि उनको माँ के सामने रखकर अपने को शुद्ध प्रमाणित करे। इससे तो उसका सुन्दर जीवन जङ्गली तुलसी के बिरवा के समान कुम्हला जायेगा। क्या मैं किसी प्रकार उसकी सहायता नहीं कर सकता?" ऐसी थी महेन्द्र बाबू की चिन्ता की धारा!

महेन्द्र बाबू जिस कॉलेज में पढ़ते थे, वहाँ भ
सेवा करने के लिये कुछ छात्रों ने मिल कर एक दल ग
दल की बैठक में वे नियमित भाग लेते थे। किन्तु उनके
में नारी का स्थान क्या है ?' इसके साथ प्रतिभा का व्य
भी, अन्तःसलिला बन प्रवाहित होता रहता था।
पूर्व 'प्रतिभा को समाज में यथायोग्य स्थान दिलाया
नहीं'—यही महेन्द्र की चिन्ता का प्रधान विषय होत
उनके मन में आया कि प्रतिभा के साथ शादी
सारी झंझट दूर हो जायेगी; लेकिन शादी कर लेन
किसी के हाथ की बात नहीं थी। इसके लिए प्रथ
की सम्मति जरूरी थी। वे जिस समाज के अन्दर
तो ऐसे विवाह का पक्षपाती नहीं था।

आखिर में बहुत सोच-विचार के बाद, प्रतिभा क
के जरिये, सहायता करने की बात उनको सूझी।

वह अविलम्ब अपने गाँव गये। उन्होंने देखा कि
प्रतिभा के सम्बन्ध में कोई चर्चा नहीं है। ग्राम्य जी
और कुमारी युवती कन्याओं के सम्बन्ध मे नाना
और प्रकाश रूप से उस पर चर्चा होती है। अगर
नाओं को लड़कियाँ सुनें, तो जहर खा लेने की इ
किन्तु कुछ दिन की तुला-अग्नि के समान वह बात
गायब हो जाती है कि उसका चिह्न तक भी देख
मिलता। गाँवों में सभी अपनी-अपनी चिन्ता में
भला किसको दूसरे की चिन्ता करने का समय होता है
स्वार्थवश ऐसे विषयों की बार-बार आलोचना कर
प्रतिभा के सम्बन्ध में किसी को स्वार्थ-सिद्धि नहीं
बात दब गई थी। वास्तव में 'अपुछिमाँ' की गाली
उस विषय को दबाने में काफी सहायता की थी।

इस प्रकार का वातावरण देख महेन्द्र के मन का शान्ति
ी। वे पूर्व नियमानुसार पाठशाला देखने के लिये गये।
शाला की माली हालत के सम्बन्ध में शिक्षक के साथ
आलोचना भी हुई।

जरा सोच महेन्द्र ने कहा—"मैं मासिक ५) रुपये पाठशाला
दान-स्वरूप सहायता दूँगा। मुझे पिताजी मासिक ५०) रुपये
जेज के लिये देते हैं। उसमें से ५) रुपये मैं आपको दिया
गा।" यह सुन आनन्द के मारे शिक्षक की छाती गज भर की
गई। ऐसी सहायता की उसने कभी कल्पना तक न की थी।
-कृत हो शिक्षक ने कहा—यह पाठशाला हमेशा के लिये आप
कृतज्ञ रहेगी, आपकी कीर्ति का गान करेगी। आपकी शिक्षा
होते-होते यह स्कूल हाई-स्कूल होकर रहेगा।"

महेन्द्र ने चिन्ताशील भाव से पूछा—"अच्छा, छात्र-संख्या
ाने का क्या उपाय है?"

शिक्षक ने अपनी मजबूरी प्रकाश करते हुए कहा—"मैं तो
शा ही कोशिश करता हूँ; लेकिन गांव के गँवार आदमी शिक्षा
महत्व क्या समझें! उसके बाद मेरे साथ और जो दो शिक्षक
वे भी मुझे सहायता नहीं करते। मैं सबेरे गाँव के अन्दर...!"

बीच ही में टोक कर महेन्द्र ने कहा—"अच्छा, देखिए! मैं
वता हूँ अगर बीच-बीच में छात्रों को कुछ पुरस्कार दिया जाया
, तो छात्र-संख्या बढ़ाने में खूब सहायता होगी।"

शिक्षक ने अति कृतज्ञता-सी प्रकट करते हुए कहा—"आप
र सहायता करें, तो मैं दुगुनी छात्र-संख्या कर दूँगा।"

महेन्द्र बाबू के मन में बार-बार आता कि प्रतिभा का हाल पूछ
लेकिन साहस नहीं होता था। सोचते, कहीं फिर दबी बात न
जाय। शिक्षक को प्रतिमास ५) रुपये मिलने लगे। साथ ही
तकें और मसिक पत्र आदि छात्रों के लिए भी प्राप्त होने लगे। प्रति

2

मास एक पुस्तक और मासिक पत्र सिद्धेश्वर के न
भेजने लगे। इसके अलावा कुछ अन्य किताबें भ
शिक्षक के मन में कभी न आता कि सिद्धेश्वर के
और किताबें आती हैं। वह सोचता, इस बालक
बाबू जानते हैं; इसीलिये प्रतिमास उसके नाम पत्र-
हैं। अगर अन्य बालक का नाम उनको मालूम ह
भी अवश्य भेजते।"

इसमें सन्देह नहीं कि महेन्द्र बाबू को पूर्वनिश्च
सफल हुई थी। नई किताबें ले जा कर सिद्धेश्वर अ
दिखाता; वह परिचित मासिक-पत्रिका पा खुश हो
पढ़ने के लिए रख लेती। सिद्धेश्वर प्रथम-प्रथम जब
और किताबें लाया, तो प्रतिभा ने उसे भीतर ले ज
"ये किताबें किसने दी हैं?"

सिद्धेश्वर ने कहा—"महेन्द्र बाबू ने कटक
भेजी हैं।"

प्रतिभा ने मुख के भाव में किसी प्रकार का
दिखा कर फिर पूछा—"तेरे लिए ही या अन्य
लिए भी?"

सिद्धेश्वर आनन्द से नाचता हुआ बोला—"औ
के नाम भी भेजी हैं; लेकिन भेजने से क्या?...मेरी
से अच्छी हैं। इसमें मेरा नाम लिख कर भेजा है।"

अब और कुछ पूछने की जरूरत प्रतिभा ने नहीं
निःश्वास छोड़ कर उसने पुस्तक को अपनी छाती से

✣

सनातन और अपुछिमा प्रतिभा के विवाह की बात-चीत
तिभा से छिपा कर नहीं करते थे। ऐसा करने का न उनका अभ्यास
ा और न वैसी सुविधा ही थी। गाँव में प्रकाश्य या अप्रकाश्य
ालोचना कुछ भी नहीं होती। हर कोई अपने-अपने विषय की
ालोचना खुल कर करता है। इसके बावजूद, सभी के घर छप्पर के
ते हैं। ऐसे कमरे नहीं होते कि अलग जा कर एक-दूसरे से मन्त्रणा
रें। सनातन के घर में दो कमरे थे, तथा एक था दो पल्ले का छप्पर!
ास ही एक और छोटा-सा छप्पर था, जिसमें गोरू रहते थे।
ास के और एक छोटे घर में रसोई होती थी। एक कमरे में सना-
न अपनी स्त्री-बच्चों के साथ वास करते थे; और एक में घर
हस्थी का सरंजाम—हाँड़ी, आदि के साथ कुछ कूड़ा-कचरा भी
ास करता। सनातन प्रायः नौकरी के कारण गाँव से बाहर ही
हते; अतएव प्रतिभा और सिद्धेश्वर माँ के पास ही सोया करते
। जब कभी सनातन आते, तब भाई-बहन उसी कचरेवाले कमरे
सोते। भीतर का आँगन भी अति छोटा था। ऐसी हालत में
कसी से छिपा कर बात-चीत करना नामुमकिन था; इसलिए
िवाह की सारी बात-चीत प्रतिभा के कान में पड़ती थी।

जिस समय प्रतिभा के ब्याह की बातें चल रही थीं, उसी समय
िद्धेश्वर पाठशाला से पुरस्कार स्वरूप मिले मासिक पत्र लाया था।
सममें एक लेख था, जिसके लेखक थे महेन्द्र। उसमें लिखा था कि
आजकल प्रचलित विवाह-प्रथा नारियों को नाना-झंझट में डालती
ै। उसमें स्वयम्वर की चर्चा में यह भी लिखा कि माता-पिता स्वार्थ-
ाश कन्या के हित-अनहित पर विचार न करके हमेशा के लिये उसे
एक बन्धन में फाँस देते हैं, जिसका नतीजा होता है कि नारी का
ीवन भार हो जाता है और वह जिन्दगी भर कुढ़ती रहती है। इससे
मााज तथा देश का बड़ा ही अनिष्ट होता है। इन सबके प्रतिकार
का एकमात्र उपाय है—वर-कन्या अपना-अपना मत दें। उनकी

ही इच्छानुसार विवाह-कार्य सम्पन्न हो।" इस ले
बाद जब कभी प्रतिभा सुनती कि पिता ने अपनी
करने के निमित्त यह विवाह-सम्बन्ध तय किया है, त
पिता के प्रति रोष उत्पन्न होता। वह सोचती—"
दिया है, तो क्या यह इन्हीं की सम्पत्ति है, जिसका जी
क्या कुछ भी अधिकार नहीं ? ये लोग यह तो क
करते कि बेटी का भविष्य कैसा बीतेगा ? इसके
का मन क्या कहता है ? माता सोचती है—बिल्ली
रक्षा के समान युवती कन्या को घर में वह कब
किसी प्रकार सिर का बोझा हल्का हो। पिता सो
को सामने रख कर खुद किस प्रकार सुख से जीवन-य
तो क्या लड़की का कुछ भी कर्त्तव्य नहीं है ?" आदि-
विचार बेचारी प्रतिभा के मस्तिष्क मे उमड़ते रहते
निरुपाय थी ! मन की बात मन ही में मसोस कर
से इसी प्रकार का निर्यातन सहती आती है। शह
कुछ आलोचना हो; लेकिन गाँव में, और फिर गरी
के लिए ऐसी आलोचना करना कल्पना से बाहर की बा
जितना ही अपने माता-पिता से विवाह की बातें सुन
उसका मन विवाह का विरोधी होता जाता। यहाँ
रोजसे विवाह की चर्चा उठी, उस रोज से किसी ने प्र
हुए नहीं देखा, मशीन की तरह वह घर का काम करत
काम से छुट्टी पाती, तो बैठ कर पुस्तकें उलटती।
कोई संगी-साथी भी नहीं, जिसके साथ बैठ कर विच
अपने मन की साध पूरी करे। उसकी माँ का यह
घर छोड़ कर कहीं नहीं जाना। इस प्रकार का
शून्य पशु-पक्षी के लिए सम्भव हो सकता है, लेकिन
तो सम्भव नहीं है। इतना होते हुए भी युग-युगसे यह

ा रही है। समाज मनुष्य के ऊपर किस प्रकार शासन करता है, ह इसी से मालूम हो जायेगा।

प्रतिभा का मन जब कभी ऊबता तो महेन्द्र बाबू की ओर ही ुकता। सोचती—'काश एक बार उनसे मुलाकात हो जाती, तो वह ढ़ता के साथ पूछती कि माता-पिता बिना कन्या का मत लिये ादी कर देते हैं, ऐसी हालत में उसका क्या कर्तव्य है? इस संबंध ें कोई निर्दिष्ट मत तो दिया ही नहीं?"

प्रतिभा के मन में यह बात दृढ़ बन गई कि वह इस विवाह ो पसन्द नहीं करती, इसका विरोध करती है। विवाह के प्रथम ंस प्रकार नवयुवक और युवतियों के मन में भावी आनन्द की ारसता खेला करती है, वे जिस प्रकार सुख-स्वप्न देखा करते हैं, तिभा के मन में ठीक इसके विपरीत भाव थे। उसे ऐसा भान ोता, मानों माता-पिता उसे घसीट कर यमदूत के द्वार पर बैठा हे हैं।

ससुराल जाने पर लड़की किस प्रकार अदब-कायदे से चलेगी, वामी, सास-श्वसुर से कैसा वर्ताव करेगी—आगे ऐसी शिक्षा गुरुजन देया करते थे। वह शिक्षा और अन्यान्य पारिवारिक शिक्षाएँ आज गरीबी तथा आधुनिक सभ्यता के भार से लोप हो गई हैं। ाठशाला में जिस प्रकार की शिक्षा दूसरे देशों में दी जाती है वह भी यहाँ नहीं है। नयी सभ्यता के प्रवाह में प्राचीनता न जाने कहाँ बह गयी है; किन्तु नूतनता भी तो अपनी प्रतिष्ठा नहीं कर पा रही है। ऐसी सन्धि-स्थल में नाना प्रकार की समस्याएँ सामने आयेंगी। अशान्ति की चरम सीमा तक पहुँचने के कारण प्रतिभा ने मन में सोचा—"माता-पिता के शादी कर देने पर भी वह कभी अपने को विवाहित नहीं कहेगी।" जितना ही उस की शादी के बारे में विचार-विमर्ष होते, उतनी उसके मन में विद्रोह की गाँठ मजबूत होती कि "वह कभी अपने को विवाहित नहीं मानेगी!"

गीता में लिखा है :—

ध्यायतो विषयान् पुंसः सङ्गस्तेषूप
संगात् संजायते कामः कामात् क्रोधोऽभिज

जिस किसी विषय के प्रति पूर्ण अभिलाषा रख करते हैं; आखिरकार वह चिन्ता निश्चय ही, कभी- होती है। महेन्द्र के साथ यही हुआ। प्रतिभा के लिए उसका दैनन्दिन कार्य हो गया था। मासिक-पत्र निकल रहे हैं, उसे प्रतिभा जरूर पढ़ती होगी, उस वह क्या सोचती होगी, यह अपनी कल्पना और अनु जानने की चेष्टा करता। "प्रतिभा के साथ मुला सुविधा अगर मिले, तो वह किस-किस विषय पर बा समय उसकी बातचीत की स्वर-भंगी कैसी होगी, आनन्द वास्तविक इस जगत् में देवभोग्य होगा! प्रकार की कल्पना करता, तो वह आनन्द-सागर में हुआ किसी दूसरी दुनिया में पहुँच जाता। उस क सिहर उठता। वह एक प्रकार की अधीरता का हुआ दीर्घ निःश्वास छोड़ता और फिर उसी कल्पना- कल्पना को किस प्रकार रूप दिया जा सकता है, इसकी काश प्रतिभा के साथ मेरी शादी हो जाती! यह चिन् और बैठ जाती। विवाह में क्या क्या बाधाएँ हैं, किस प्रकार हो सकता है, आदि विषयों की आलोच मन करता। उसके पक्ष में प्रथम बाधा वह सम सदस्यों ने देश-सेवा का व्रत लिया है और जो चलते हैं, वही इस समाज के सभ्य हो सकेंगे। उ नाम रखा गया था—वीर समाज!

जो परम्परा से रूढ़ीवादी समाज चला आता है लिए घातक है, अतः उसके विरुद्ध विप्लव करना है

स्कार के विरुद्ध छाती तान कर खड़ा होना ही वीरों का काम
जिन में इस पुराने समाज के विरुद्ध लड़ने का बल और हिम्मत
वही इस समाज के सभ्य हो सकते हैं। इस समाज में देश की
ा प्रकारकी समस्याएँ आलोचित होतीं। जातिभेद, पर्दाप्रथा और
में अशिक्षा और कुशिक्षाएँ कितनी प्रकार की समस्याओं पर
ीं होती। बिना विप्लव के इन समस्याओं का हल सम्भव
ं; इस पर 'वीरसमाजी' वृन्द विश्वास करते थे। विप्लव
ने के लिए जीवन-दान की जरूरत भी पड़ सकती है, यह बात
सदस्य भूले नहीं थे। अपने जीवन को किस प्रकार विप्लव-
र्ग पर चला सकेंगे, इसके लिये किन-किन तैयारियों की जरूरत
इसकी भी चर्चा करते थे। सब का एक स्वर से यही निर्णय
कि पढ़ाई खतम करने के बाद उन में से कोई सरकारी
करी नहीं करेगा। उसके बाद यह भी निश्चय हुआ कि
ी सभ्य अविवाहित रहेंगे। कारण विवाह करने से
ी पुरानी प्रथा का दास बनना पड़ेगा, फिर उपार्जन करने के
ये बाध्य होना पड़ेगा और फिर विप्लव का काम छोड़ कर उसी
साथ रफानामा करना पड़ेगा। यही सिद्धान्त महेन्द्र के सामने
तिभा के साथ शादी करने में बाधा-स्वरूप खड़े थे। एक बार
माज की साप्ताहिक बैठक में महेन्द्र ने विवाह-प्रथा की आलो-
ना करनी शुरू कर दी। उसने कहा—"हम लोगों में विवाह न
रने का जो सिद्धान्त तय किया गया है, उसमें जरा दुर्बलता की
या भी झलकती है। जिस प्रथा के जरिये आजकल विवाह
म्बन्ध होता है, उसके विरोध में अगर हम लोग शादी न करेंगे,
वह वीरोचित कार्य नहीं होगा। हम सब असवर्ण विवाह करेंगे,
ही सिद्धान्त हम लोगों को मानना चाहिए। विवाह-प्रथा के
रोध में हम खड़े हों, किन्तु विवाह के विरोध में कुछ काम करना
रा अति होती है; ऐसा मैं सोचता हूँ।

इसके प्रतिवाद में नवीन ने कहा—"अगर सभ्य
के विरोध में रह कर खुद विवाह करेंगे, तो ऐसी अनेक
के साथ बँध जायेंगे कि दूसरे-दूसरे काम करने का सम
पा सकेंगे। और फिर यह बात भी ठीक है कि विवाह
बाँध कर रख देता है, उसके पैर में लंगर डाल देता है,
नहीं देता—बुद्ध, चैतन्य, आदि तक ने भी आखिर अ
को छोड़ कर वैराग्य लिया था। दूसरी ओर विवाहित
के कारण अनेकों को देश-सेवा बाध्य हो कर छोड़नी प

यहीं से तुमुल युद्ध शुरू हुआ। विवाह एक ऐसा क
युक्ति तर्क की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता। शत
अवलम्बन करने पर भी मालूम न किधर से एक फूल-
पर आकर लगता है, जिससे प्राण व्याकुल हो उठते हैं।
के अन्दर नहीं आता।

अनेकों आलोचनाओं के बाद अधिकांश सदस्यों की
महेन्द्र बाबू का मत मान्य हुआ और समाज की निय
संशोधन किया गया कि विवाह न करना उत्तम है; लेकिन
शादी किये नहीं रह सकता, वह असवर्ण विवाह करेगा अ
आदि के सम्बन्ध में कोई माँग नहीं करेगा।

ऐसा नियम बन जाने के बाद महेन्द्र को जरा शान्ति
उसने सोचा—"अब प्रतिभा के साथ शादी करने में बाधा न
यह असवर्ण विवाह भी कहलायेगा; कारण वह खुद त
था, लेकिन लड़की खण्डायत घर की थी। दायिज पाने क
तो थी नहीं; अतएव माँग करने की बात भी नहीं।
बात एक—दोनों पक्ष के माता-पिता का राजी होना। म
अब उसी मासिक पत्र में प्रेम-काव्य, कविता, आदि की च
लगी, जिसके ग्राहक उसके माता-पिता भी थे तथा एक
सिद्धेश्वर के नाम, ग्राम्य पाठशाला के पते पर भेजी ही ज

महेन्द्र बाबू के पिता जनार्दन बाबू बहुत दिनों तक सबडिप्टी रहे। ...न उनकी नौकरी में कोई उन्नति नहीं हुई। उसका कारण है ...वे ज़रा तीखे स्वभाव के व्यक्ति हैं। अपना शौक पूरा ...ने के लिए मासिक पत्र के ग्राहक तो थे, लेकिन उसे कभी भूल ...भी खोलने का कष्ट नहीं उठाते थे; अतएव वहाँ महेन्द्र का ...उपाय नाकामयाब रहा। दो-तीन मास बीत गये फिर भी उसकी ...ी की बात नहीं उठी। महेन्द्र ने जब बी. ए. पास कर लिया, ...तीन-तीन जगह से शादी का प्रस्ताव जनार्दन बाबू के पास गया। ...ा की जिद थी कि जो लड़के को विलायत पढ़ने के लिए भेज ...पूरा खर्च देगा, उसी की लड़की के साथ शादी होगी। यह सब महेन्द्र के कानों में भी पड़ती, तो वह मन-ही-मन पिता पर ...ा करता।

पढ़े-लिखे इस युवक ने विवाह के सम्बन्ध में न मालूम कितने लिखे; लेकिन कभी भी जनार्दन बाबू ने यह नहीं सोचा कि एक विवाह के सम्बन्ध में पुत्र से भी तो पूछना चाहिए! महेन्द्र ने ...ा—"अब पिता जी को रास्ते में लाने का यही एक उपाय है कि ...घोषणा कर दे कि वह शादी नहीं करेगा। ऐसा करने से माता-...ा व्याकुल होकर मनायेंगे, तब मैं अपनी मंशा जाहिर करूँगा ...में अपनी मर्जी के अनुसार शादी करूँगा। तभी आन्तरिक ...लाषा पूर्ण होगी।" यह निर्णय कर महेन्द्र ने पिता के पास एक ...लिखा—"शादी की बात सुन कर मुझे बड़ा दुःख हुआ; कारण आजीवन अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा की है।" यह चिट्ठी पा जनार्दन बाबू जरा विचलित हुए और अपनी पत्नी के साथ ...र्श किया और अन्त में यह निश्चय हुआ कि कुछ काल तक ...ी की चर्चा ही बन्द रखी जाय। यही नहीं, वे महेन्द्र की ...-ढाल पर भी नजर रखने लगे, खोज-खबर भी लेने लगे।

✤

नवीन उन लोगों में से है, जो 'वीर समाज' के सदस्
शादी करना उचित नहीं समझता था। वह श्यामहरि बा
और महेन्द्र का सहपाठी है। दोनों एक साथ बी. ए. प
निकले हैं। नवीन ने विवाह न करनेका जो विरोध किया है,
तर्कवश नहीं, बल्कि उस का पूर्ण विश्वास था कि विप
के लिये, आँखें मूँद कर अपने-आपको विवाह-कुण्ड में
जाय, तो वास्तविक विप्लव कभी भी नहीं हो सकेगा।
विवाह पूर्ण प्रतिबन्धक है। स्त्री सहधर्मिणी है, साथ में
भी विप्लविनी बन कर कार्य में सहायक होगी, यह
उसको नहीं था। विवाह करने के बाद स्त्री को खुश
लिये कुछ-न-कुछ पीछे हटना ही पड़ेगा, इसमें सन्देह न
उसकी धारणा थी। वह अपनी आँखों के सामने एक चित्र
अपनी जीवन-धारा चला रहा था। वह विप्लव-स्
हमेशा विभोर रहता! विप्लव के प्रबल तूफान में, प
सूखे घास-तृण के समान अस्त-व्यस्त हो कर, न मालूम
जाती है! तूफान के धक्के से तमाम पेड़ जिस प्रकार
लटका-पटका खा रहे हैं, इसी प्रकार की छवि हमेश
आँखों के सामने नाचती थी। इसी में उनको अपू
मिलता था!

एक दिन उसको पिता का पत्र मिला--"तुम्हारी
हो गई है। निश्चित समय के दो-तीन दिन पूर्व तुम्हें
पड़ेगा।"

पत्र पढ़ कर वह म्रियमाण-सा हो गया। जीवन
जितनी मधुर कल्पनाएँ उसने कर रखी थीं, वे सारी धूि
गईं। विवाह का अर्थ उसने समझा था कि एक गाँव
क्षित बालिका ला कर उसके पैर से बाँध दी जायेगी। य
सांसारिक सुखस्वच्छन्दता के लिये उससे पूर्ण दावा करेगी

गा, यह कि वह भी एक गाँव का जमींदार बन अपना पेट करेगा।

श में अन्नाभाव, रोग, अशिक्षा और नाना दैविक विपत्तियों दिन नर्तन होता रहता है। उसके साथ ही फिर देश की ता को दूर करने में जो अपना जीवन-दान करेंगे, वे ही में धन्य हैं। उन्हीं को इतिहास याद रखेगा। क्या वह उन क नहीं बन सकेगा? किन्तु यह विवाह उसके जीवन को कर देगा। किन्तु अगर यह बाधा नहीं देता, तो विवाह ा ही होगा। वीर-समाज में असवर्ण विवाह करने की अनुमति केन वह तो घोषण कर चुका है कि वह शादी नहीं करेगा। के पर वह इसके सम्बन्ध में अपने साथियों से चर्चा करे भी ? लज्जा जो लगती है।

तः चर्चा नहीं हो सकी। शादी तो करनी है ही नहीं, झूठ-थियों में चर्चा करने से लाभ भी क्या? यहाँ तक कि अपने बन्धु महेन्द्र तक को भी उसने कुछ नहीं बताया। उधर की तिथि निकट आने लगी। अगर उत्तर कुछ न दिया तो विवाह का आयोजन चलता रहेगा। यह निश्चय कर दी नहीं करनी है, उसने पिता के पास एक पत्र लिखा—

"मेरे जीवन में जितनी कल्पनाएँ हैं, उनकी साधना में विवाह बाधक होगा और फिर अभी तो काफी उम्र पड़ी है, फिर शादी ऐसी जल्दी क्यों?" इसी प्रकार की युक्ति दिखाकर पिता स पत्र तो लिखा गया; लेकिन अन्दर से एक आवाज आती —'पिता जी क्या मानेंगे? क्या उनकी बात को तुम अमान्य कोगे?'

✣

नवीन अपने मन की बात की खुलासा आलोच
प्रकाश बाबू के साथ कर सकता था; इसलिये जब उ
कि इस विवाह-प्रस्ताव से जीवन के आदर्श का धक्का
है, तो सलाह लेने के लिये वह प्रकाश के पास गया
विप्लव-विज्ञान का पण्डित था। वह इस प्रकार वर्णन क
सभी उसी के सामने हो कर गुजरे हैं। उसी ने उनक
और अवसान किया है। युवकों में वह एक आदर्श पुरुष था
समय जहाँ बाढ़ आदि विपत्ति आई, प्रकाश अपनी युवक
साथ उन दुखियों को सहायता के लिये जा पहुँचा; अत
साधारण में उनका नाम है। यही नहीं, साधारण जनत
को अपना आदमी समझती है और अपने मन के भाव
से प्रकाश से व्यक्त करती। कॉलेज के सभी छात्र प्रकाश
थे। उनमें प्रथम था महेन्द्र। 'वीर-समाज' गठन की प्रेरण
ने प्रकाश से ही ली थी। आरम्भ में प्रकाश 'वीर-समाज' क
में नियमित भाग लेता, लेकिन बाद में उसे विशेष दिलच
रही। परन्तु नवीन के साथ उसकी घनिष्टता बराबर ब
नवीन सोचता कि मेरे जीवन की आदर्श-नौका को च
शक्तिशाली व्यक्ति एक मात्र प्रकाश ही है। प्रकाश भ
का हृदय से विश्वास करता है। यह नवीन को भलि-भाँति
था। इसी विश्वास को लेकर नवीन शाम के समय
पास गया।

प्रकाश उस समय घर में नहीं था। नवीन ने कुछ स
बैठकखाने में उसकी प्रतीक्षा की। बैठके में दो पुरानी कुरसि
एक मेज रखी थी, पास ही एक आलमारी में कुछ पुस्त
हुई थी। इस बैठकखाने के अगाड़े एक कमरा सोने के
बालक नौकर भी अन्दर जाने का करता था। बाहर ख

वाज सुनी, तो आकर देखा कि नवीन बाबू आये हैं। देखते
ला—"बाबू अभी आते हैं। आप बैठिये।"

वीन चारों तरफ देखता, प्रकाश के बारे में भी सोचता
वह आदमी, जिसका घर नहीं, संसार नहीं, गरीब होते हुए
से धन का लोभ नहीं—हमेशा लोक-सेवा में लगा रहता है।
ी दुर्दशा का वर्णन करते समय उसकी आँखों से अश्रु-धारा
लती है। मानों उसका हृदय पिघल कर बह चला हो। वह
रता—"देश की मुक्ति के लिये लाख-लाख सेवकों की जरूरत
से कर्मी जिनका एकमात्र लक्ष्य होगा देश-सेवा! जिस प्रकार
की उन्नति के लिये लाखों संन्यासी घर-बार छोड़ कर
धारण करते हैं, उसी प्रकार हमें भी सब त्याग कर देश-सेवा में
होना चाहिए। इस संन्यासी-जीवन की कल्पना कितनी मधुर
य और सुन्दर है। इस प्रकार की जीवनयापना कितनी सुख-
होगी, वह सुख केवल प्रकाश ही अनुभव कर सकता है और
सुख की कल्पना, नवीन के जीवन से, स्वप्न के समान विलीन
जा रही थी।

नवीन को याद आया कि गत दो साल पहले, ब्राह्मणी नदी
ाढ़ से जब अनेक ग्राम बह गये थे, लोग भूख एवं रोग से
ा रहे थे, उस समय प्रकाश अपनी जान पर खेल कर लोगों
वा करता था। उन को साहस, धैर्य और कुछ सामयिक
ता दे कर जीवन देता था। नवीन भी उस समय प्रकाश के
था।

उस समय माता भूख की यन्त्रणा न सह कर, पुत्र को त्याग,
बचने के प्रयास में थी। घर में खाने-पीने की व्यवस्था नहीं
लेकिन लगान वसूल किये जा रहे थे। घर के टूटे कपाट और
ट कुर्क किये जा रहे थे। सरकारी सहायता प्रदान करनेवाले
आपत्ति करनेवालों पर विरक्ति और उपहास की वर्षा करते

और झूठी रिपोर्ट करके अपनी पदोन्नति की लिप्सा औ
लिये एक उत्तम शस्त्र पा खुश होते। जिनके पास
बुद्धि थी, वे सोचते किस प्रकार कम दाम में ही दूसरों
पर कब्जा कर लें। उधर साधारण आदमी मजदूरी
करने को तैयार नहीं था। उलटे वह भूखे-प्यासे रह क
पसन्द करता था। प्रकाश ने कहा था--"देखा! यह है
जिस की मुक्ति के लिये हमें उपाय करना है। पराधी
शत्रु ही नहीं और भी कुछ है। यहाँ तो एक भी
है; हाकिम से लेकर विपत्तिग्रस्त तक सभी इसी देश के
कोई किसी के मुख की ओर नहीं देखता। जो लोग
इतने निर्जीव बन गये हैं कि महाजन की धन-राशि और
धन लूट लेने की शक्ति नहीं रखते। उनमें सामर्थ्य नहीं,
यदि कुछ है तो बस डर है। जिस प्रकार नमकीन माटी
बढ़ता चला जाता है, उसी प्रकार ये निर्जीव नरकंकाल
रहे हैं; बढ़ रहे हैं और उनके साथ-ही-साथ बढ़ती है
उसके लिये चाहिए ठोस, निर्भीक, कर्मशील एक देशसेवक

"क्या नवीन ऐसा देशसेवक नहीं बन सकता?
उसकी सारी कामनाओं को चूर कर देगा। शेष में 'फलाँ
के पिता हैं'--यही परिचय संसार में रहेगा!" इसी प्रका
सागर में डूबता-उतराता नवीन बैठा था कि हठात् उस
'क्यों नवीन कैसे आना हुआ?"

नवीन ने उठकर नमस्कार किया और कहा--"ऐसे
चला आया।"

प्रकाश नवीन के कन्धे पर हाथ धर कर गम्भी
बोला--"नवीन! जिस समय की प्रतीक्षा मैं कर रहा था,
गया है। मैं इस देश में जैसी परिस्थिति की जरूरत समझ
भी आ गई है। महात्मा गांधी एक प्रबल जन-आन्दोलन
रहे हैं, जिससे एक सौ वर्ष से प्रपीड़ित जनता के मन में
आशा का संचार होगा। वह आन्दोलन कैसा आकार धा

नहीं कह सकता। जब श्रावण मास की उत्तरी वायु चलती
यह वर्षा होने के लक्षण हैं। बहुत काल की अनावृष्टि के
सूखी ऊसर भूमि में अब शस्यांकुर आयेंगे, इतना
झे आभास होता है। इसलिये तुम और तुम्हारे साथी
हो जायें। वर्षा होते ही जिस प्रकार किसान अपना सारा
छोड़ कर, कँधे पर हल रख कर, असीम आशा हृदय में धारण
पने खेतों में जाते हैं और उसी में अपने को मिला देते
लोग भी वैसा ही करोगे। ऐसा भी हो सकता है कि
की आशा सुफल न हो; लेकिन किसान अपनी आशा और
स से काम में लीन रहते हैं।

महात्मा गांधी स्वराज पाने के लिये एक आन्दोलन करने
हे हैं। यह बात नवीन को मालूम थी और इसके सम्बन्ध
त्तों से आलोचना भी हो चुकी थी। किन्तु अपने पर ही
की उसने कभी चिन्ता तक न की थी। प्रकाश के प्रश्न
की सोई हुई आत्मचिन्ता को जाग्रत कर दिया। नवीन ने
—"सचमुच, ऐसी हालत में शादी-विवाह की चर्चा क्यों?
ानेवाले आन्दोलन में शामिल होना ही होगा।"

विवाह के सम्बन्ध में बातें करने में लज्जा मालूम हुई। वह
र चिन्ता में है। प्रकाश कुछ देर तक चुप रहा, फिर नवीन के
ओर देख कर बोला—"यही है चौरस्ता; और यहींसे अपना
निर्दिष्ट मार्ग पकड़कर चलना होगा। यहीं प्राचीनता के साथ
ता का संघर्ष होगा। हर विप्लव के समय ऐसा ही होता है।
रानी बातें धुल जायेंगी और कितनी नयी बातें पैदा होंगी!
में हल चलते समय जिस प्रकार ऊपर की मिट्टी नीचे और
की ऊपर आती है, तुम वही करने के लिये तैयार हो जाओ।"
कुल दृष्टि से प्रकाश की ओर देखकर नवीन ने कहा—
जीवन का तो अब यही आदर्श हो गया है।"

इसी समय रसोइये ने प्रकाश को खाने के लिये बुला
ने कहा—"जरा सोचो तो! देखो दुनिया जैसे चल रही है,
और विप्लव भी हो, यह तो असम्भव है! माता पिता बे
कहते रहेंगे। उनकी इच्छा के अनुसार सारा काम हो
मन की सारी इच्छाएँ जो प्रकाश-अप्रकाश अवस्था में
पूर्ति होती रहेगी। धनी-मानी बन कर चारों तरफ ज
होती रहेगी और विप्लव-पथ के पथिक भी होते च
नामुमकिन है। नौका की पाल की रस्सी काट कर नौक
समुद्र में छोड़ देना होगा। किसी की ताड़ना से
दबेगा, किसी के क्रन्दन से हृदय विगलित नहीं हो
आशा के वश हो हृदय आलोड़ित नहीं होगा तथा किसी
की अतृप्ति से निराशा नहीं आयेगी—केवल ये हैं
लक्षण! मैंने आज दिन भर कुछ नहीं खाया, जाओ
मुलाकात होगी!"

कुछ ही दिनों के बाद भारत भर में एक चर्चा
गई—"अंग्रेजों के साथ असहयोग करना है। स्कूल, कॉल
कचहरी यहाँ तक अपनी-अपनी पदवियाँ भी छोड़ देन
यह भारत की मुक्ति के लिये आन्दोलन है, इसमें देश
ष्ठित व्यक्ति तक अपने प्राण उँड़ेल चुके हैं। वे छात्रो
हैं कि स्कूल-कॉलेज छोड़ कर बाहर आओ। अन्यथा
को रह जायेगा कि जिस समय देश की आशा पहाड़
के समान संचरण करती थी, उस समय अनेक विश्वास

क्ति-संग्राम में भाग नहीं लिया। कालेज न छोड़ना
क ललाट पर काला दाग बनकर हमेशा के लिये लगा
।

ोर-समाज' के सभ्यों को इस चीत्कार ने चंचल कर दिया। में अपने जीवन में जिस मोड़ की कल्पना वे किया करते आकर द्वार खटखटा रही थी। कल्पना करना कितना है और उसे कार्य-रूप में परिणत करना कितना है यह सभी अनुभव कर रहे थे। आनन्दमय जीवन बीतता जायेगा और उधर देश-सेवा भी होती चलेगी--यह त्व है।

ोर-समाज' के नेता महेन्द्र ने अपने को अधिक अव्यवस्थित में पाया। उनकी कामना थी, एक अच्छे वकील होंगे, ामिति में व्याख्यान झाड़ आयेंगे, मासिक पत्रों में सुन्दर ला प्रकाशित करेंगे, अपनी पसन्द की एक संगिनी होगी। में एक पक्का घर बनायेंगे, वहीं सुरुचि और सुपरिपाटी सार संगिनी को सुसज्जित करके सुन्दर जीवनयापन करेंगे। साथ-ही-साथ देश-भक्ति की दुन्दुभी भी बजती रहेगी। इस कल्पना को नाना रंग से बहुत सुन्दर ढंग से चित्रित था। वह देख रहे थे कि एक प्रबल बाढ़ उमड़ती चली आ जिसके द्वारा शस्यश्यामल हरा-भरा अरहर का उर्वर खेत फ़ेद बालू के स्तूप में परिणत हो जा सकता है, अथवा मरुभूमि र्वर भूमि में परिणत हो सकती है।

हेन्द्र इस समय अपने को कैसे सँभाले, सोच नहीं पाता? भी तो सोचता--"क्यों न इस स्रोत में अपने को छोड़ दूँ, अनिश्चित भविष्य को परीक्षा कर देखूँ।" किन्तु इस के आते ही छाती धड़कने लगती। स्रोत में बहने के लिये और साहस की जरूरत पड़ती है—वही महेन्द्र के पास

नहीं। वह अनुभव करता, चिन्ता करता, बाद में अ
पथ का पथिक होता। जितना वह अपने बारे में चिन्त
उतना ही गम्भीर निराशा में डूबने लग जाता। 'वी
के संगियों के मतामत का उसको ख्याल नहीं होता। ज
खुद की रक्षा नहीं कर सकता वह भला दूसरे की चिन्त
क्यों कर? अतएव तूफान के बीच में पड़े सूखे पत्ते की
होती है महेन्द्र की ठीक वैसी ही गति थी। वह जिस
व्यतिव्यस्त था उसके 'वीर-समाज' के संगी-साथियों की
गति थी। केवल नवीन यह निश्चय कर चुका था कि
को इस प्रबल तूफान के बीच में छोड़ देगा। पिता मा
शादी ये तो सब सप्रसङ्ग मन के सामने आते और एक
छोड़ कर चले जाते।

नवीन के कहने पर महेन्द्र ने 'वीर-समाज' की ए
बुलवाई। इस बैठक में प्रकाश भी शामिल हुआ था
समाज' की दूसरी-दूसरी बैठकों में जो उत्साह, तेज देख
था वह अब वहाँ नहीं था, बरफ-सी जमी पड़ी थी। ऐस
मानों बाध्य होकर सब इसमें शामिल हुए हैं। वे प्रकाश
देखकर लज्जित हो शिर नीचे झुका लेते थे।

नवीन ने कहा--"आज तक हम लोग बड़ी-बड़ी बा
आये हैं, आज परीक्षा का समय है। इस समय हमें यह
करनो है कि जो आन्दोलन आ रहा है उसके प्रति हमा
कर्त्तव्य है।"

महेन्द्र ने बीच में पूछा—"तुम्हारी क्या राय है नवीन

नवीन ने दृढ़ता के साथ कहा—"मेरी राय में तो य
समय है जब कि हम देश के लिये कुछ कर सकेंगे। देश-
लिये इससे बढ़कर और दूसरा मौका नहीं मिलेगा।"

महेन्द्र ने विरक्ति-सी दिखाते हुए कहा—"तो क्या
कालेज छोड़ दें।"

नवीन ने जोर दे कर कहा—"अवश्य! कालेज की पढ़ाई
ौरव तो देखते ही हो। सबेरे के कुहरे के समान न मालूम वह
गायब हो जाता है।"

महेन्द्र ने गम्भीर होकर कहा—"सो तो सच है, लेकिन......
व्य अवश्य करना है, यही बड़ी बात नहीं है। इस समय हम
पर विरोधी विचारधारा को लेकर चल रहे हैं। देश के
जिस प्रकार हमारा कर्त्तव्य है, उसी प्रकार माता-पिता के
, समाज के प्रति और अपने प्रति भी तो कुछ कर्त्तव्य है। इन
विरोधी वातावरणों के कारण मेरा मत है कि जल्दीबाजी
र आन्दोलन की गतिविधि को गौर से देखना उचित है।"

महेन्द्र के इस कथन से अधिकांश को जरा शान्ति-सी मिली,
लगा मानो सभी वही चाह रहे हों। किन्तु लज्जा और
चवश कोई इस पर मत प्रकाश नहीं कर रहा था। नवीन भी
हो गया, उन लोगों के मन में जो 'किन्तु' आज तक परदे के
र था प्रबल हो बाहर आ गया।

प्रकाश ने सभी की ओर देख कर कहा—अपेक्षा करने का
है खुद ही कुछ निश्चय न कर सकना। बहती धारा में तृण
मान बहना, भाग्य का फल कहना, पुरुषत्व नहीं है।

महेन्द्र दूसरों का मौन समर्थन पाकर बोला—'देखिए प्रकाश
, आप हैं दुनियाँ से अलग। दुनियाँ को छोड़ अकेला जीवन
ते हैं। आपकी बात अलग है और हम ठहरे युवक। नाना
र की अभिलाषाएँ हैं। सम्भोग की अभिलाषा नहीं, काम
की जो अभिलाषा हमारे मन में निहित है उस पर विचार
ा क्या उचित नहीं है?"

अधीरता प्रकाश करते हुए प्रकाश ने कहा—'कहिए तो किस
की अभिलाषा पर विचार करना चाहते हैं?"

महेन्द्र ने दृढ़ता के साथ कहा—"समाज में जो दुर्नीति फैली

है उसका संस्कार करना क्या बड़ा काम नहीं है ? इ
सँभालना क्या कम बात है ?"

महेन्द्र को लक्ष्य कर प्रकाश ने जोर देकर कहा—"स
तो चिल्लाते हो, लेकिन उसमें जीवन भी है ? वह तो व
चुका है। क्या कभी जरा-सा भी सोचा है कि बिना
समाज-संस्कार बिलकुल असम्भव है। विधर्मी राजदण्ड
महा सभ्यताओं का संहार किया है, उसकी गवाही है
रिका के मय और अस्टेक की कीर्ति के ध्वंसावशेष ! अ
भूगर्भ से उनका उद्धार किया गया है। उसका साक्ष
एशिया के वेलिनीएन इजिप्सिएन पुरानी सभ्यता
इतिहास ! उसका साक्षी है मध्य एशिया और भारतवर्ष
का निर्माण ! हिन्दूसमाज संकोच के कारण विलोप से
कर रहा है। यह संस्कार विदेशी विधर्मी सभ्यता के ऊप
है। चाहे जितने संस्कार हों अगर वे विदेशी राज्य-शक्ति
नहीं हैं, तो वे सभी समाज से वर्जित हैं ! हमारे सामाजि
की नींव है, विदेशी राजशक्ति का अवसान। आज
संस्कार जरूरी है। इसीलिए यदि सभी आशाओं को
देकर निकलते हो तो निकलो। विप्लव तुम्हारी अपेक्ष
करेगा, वह किसी प्रकार के ऊबड़-खाबड़ और बन्धन
न कर आगे बढ़ता जायेगा। केवल तुम लोगों का जी
प्रमाणित होगा। पूर्व दिशा में जब सूर्य उदय हो गय
उजाले की वन्या सर्वत्र फैल जाती है। गिरिशिखर से
छोटे-छोटे पेड़-पौधे तक उससे आलोकित हो जाते हैं
आलोक के प्रति तर्क करता है और युक्ति दिखलाकर उ
होने की चेष्टा करता है, उसे सघन जंगल के बीच गुफा ब
करना चाहिए। वह वहीं अपना निरर्थक जीवन बिता
पायेगा। आलोक की बाढ़ तो अब आयेगी ही।"

प्रकाश का मुखमंडल लाल और गम्भीर हो गया था। दोनों आँखों से मानों ज्वाला निकल रही हो। जब उसने चारों ओर घूम कर देखा, तो ऐसा लगा मानो सर्वत्र उजाला फैल गया हो। एक क्षण के लिए ही यही ऐसा लगा मानों सभी उसी बाढ़ में कूदने के लिये लँगोटा कसे किनारे खड़े हैं। किन्तु थोड़ी ही देर में मन में एक द्वन्द्व खड़ा हो गया। हृदय में विप्लव में शामिल होने की इच्छा है, किन्तु दिमाग उसके विरोध में खड़ा है, ऐसी हालत में सभी नीरव और म्रियमाण हो गये थे। थोड़ी देर बाद नवीन ने कहा—"मैं अपनी इच्छा सबके सामने प्रकट कर रहा हूँ। आप लोग जो भी करें, लेकिन मैं पढ़ाई छोड़ इस आन्दोलन में शामिल होता हूँ।"

महेन्द्र और अन्य छात्रों ने नवीन को जिस निगाह से देखा उसमें स्नेह का अभाव था। जिस काम को एक पसन्द करता है, और खुद नहीं कर पाता, किन्तु दूसरा उसे कर रहा है, उस पर जिस प्रकार अकारण क्रोध वर्षा हुआ करती है उसी का केन्द्र बना नवीन। सभी मौन थे। प्रकाश जाने के लिये उठा, नवीन भी उठा। 'वीर-समाज' की बैठक का यहीं अवसान हो गया, बाढ़ के जल से सर्व प्रथम यही घर टूटा।

✤

सन् १९२१ साल में जो गांधी जी की आँधी इस छोर से उस छोर तक चली उससे न जाने कितने विशाल तरुवर जड़ मूल से पुछ गये, कितने पेड़ ठूठे बन गये और फिर उनमें शाखाएँ आईं और नई-नई कोपलें उठीं। उस समय अनगिनत सूखे पत्र पवन की

वेगवान धारा में पड़कर अनजाने कहाँ आकाश में जाकर वि
गये। उन सबका इतिहास खोज करना असम्भव है। 'वीर-स
विच्छिन्न होते ही विकल होकर कौन कहाँ, किस रास्ते
ऐसी हालत में कौन किसकी क्या खबर रखता है अ
कालेजी-जीवन में जो बन्धुता स्थापित हुआ करती है, वह
वैसे ही है जैसे रेलगाड़ी में बैठे यात्रियों में हुआ करती है
के किस स्टेशन पर कौन उतरेगा, किसे पता है। केवल
अन्दर बैठे रहने तक की बन्धुता रहती है। महेन्द्र के मन
किसी बन्धु के प्रति चिन्ता नहीं। उसकी खुद को इतनी चिन्
वह सबको भूल गया है। अगर वह आंदोलन में भाग
तो उसे घरबार छोड़ना पड़ेगा। कारण पिता सरकारी
डिप्टीकलक्टर जो हैं। भिक्षुक के समान उपार्जनहीन होक
किस प्रकार जीवन बितायेगा, वह समझ भी नहीं पाता
अनिश्चितता में मन को दुर्बल करने की जो शक्ति है वैस
किसी में भी नहीं है।

गम्भीर अन्धकाराच्छन्न अवस्था में रहते हुए भी
का चित्र महेन्द्र मानस-पट पर अंकित हो बिजली के
गायब हो जाता। जरा-से परिचय में ही कितना प्रेम, अप
होते हुए भी वह उँड़ेल गयी है? आज उसकी ठीक वही
जैसे बिजली के बुझा देने पर अन्धकार से घनीभूत उजा
की होती है।

मन की अस्थिरता ने महेन्द्र को किसी एक किनारे त
पहुँचने दिया था कि उसी समय उसके पिता आ पहुँचे
जिला मजिस्ट्रेट ने उनको खत लिखा था कि आपका
सरकार विरोधी आंदोलन में भाग लेने जा रहा है।
लड़का है इसलिए आपको सावधान कर दिया जाता है
आपके ऊपर भी आपत्ति आ सकती है। पुत्र तो विशेष
विपद में है ही। आन्दोलन के आरम्भ होते ही पुलिस

न्धि-स्थलों को खोज कर कौन कहाँ किस स्थान में है, इसका नुसन्धान कर रिपोर्ट दे चुकी है। महेन्द्र बाबू के नेतृत्व से रिचालित 'वीर-समाज' एक विप्लवी अनुष्ठान है। इसके सदस्यों नाम, जिसमें अधिकांश छात्र हैं, उनके माता-पिता का पता-ठकाना देकर मजिस्ट्रेट को लिखा दिया गया है। वे छात्र हैं सलिए दया करके प्रथम उनके अभिभावकों को खबर दे दी ई है।"

पत्र मिलते ही जनार्दन बाबू पुरी से बिना खबर दिये हाजिर ो गये। वे एक सरकारी कर्मचारी हैं, इसलिए सरकारी कार्य-कलाप उनको मालूम है। सच हो या झूठ, एक बार पुलिस के रजिस्टर में नाम चढ़ जाने से फिर चाकरी मिलना नामुमकिन है। महेन्द्र से वे अनेक आशाएँ किये बैठे थे; अतएव चिट्ठी पाते ही उनकी अस्थिरता की सीमा नहीं रही। उन्होंने महेन्द्र को देखते ही व्यग्रता के साथ कहा—"यह क्या हो रहा है? यहाँ पाठ पढ़ने के लिये आये हो या लफंगों के साथ लफंगा बनने आये हो? लो देखो"—ऐसा कह जेब से एक पत्र निकाल कर महेन्द्र की ओर बढ़ा दिया। इधर जनार्दन बाबू का मुख भी काम करता रहा। "मैं एक डिप्टी हूँ। तू एक डिप्टी का लड़का है। तेरे नाम ऐसी रिपोर्ट क्यों आई? एक साल के बाद तेरी नौकरी रखी है, इस सम्बन्ध में मैं चर्चा चला ही रहा था कि यह रिपोर्ट मिली। इससे तेरा जीवन मिट्टी में मिल जायगा और मुझ पर भी विपद आयेगी।"

उसी दिन जनार्दन बाबू महेन्द्र और पुलिस के इन्स्पेक्टर को साथ ले कर मैजिस्ट्रेट के पास गये। पुत्र निर्दोष है उनको समझाया। और कालेज से नाम कटा कर महेन्द्र को अपने साथ लेते गये।

जिला मजिस्ट्रेट द्वारा जिस प्रकार का पत्र जन
को मिला था उसी प्रकार का एक पत्र रामहरि बा
मिला था। लड़के को नौकरी में भरती करने की उन
नहीं थी इसलिए वे उतना विचलित नहीं हुए; किन्तु श
में इनकार का उत्तर पाकर रामहरि बाबू के मन में
हो उठी, कि लड़का कहीं गृहत्यागी न बन जाय। उ
घर में एक-दो बार नाक दबा कर प्राणायाम करते
लेकिन उस समय इस काम को गम्भीर नहीं मानते थे
करते थे इस निराशा का एक प्रतिकार है, विवाह क
परन्तु विवाह के प्रति उसकी अनिच्छा देख कर मन
"मर्ज क्या लाइलाज हो गया है ?" मजिस्ट्रेट के पत्र ने
पथ दिखलाया। उन्होंने पत्र नवीन को लिखा, उस
स्ट्रेट के पत्र की चर्चा की। उसे दे कर एक आदमी
भेजा और कहा, 'नवीन को साथ लाना।' लेकिन चिट्ठ
के प्रथम ही कालेज छोड़ कर नवीन सत्याग्रह के रङ्ग
रँग चुका था। सभा, जुलूस, विलायती कपड़ों की दुक
धरना आदि देने के काम में लाखों आदमी अपने-आप
शामिल होने लगे थे, प्रोत्साहन और आवाहन की ज
नहीं पड़ी, वह खुद-ब-ख़ुद आरम्भ हो गया। जिस प्रक
छोटे नाले नदी में मिल कर बाढ़ ला देते हैं, उसी प्र
सत्याग्रह-आन्दोलन पूर्ण वेग से चल पड़ा। लोगों के दिल
नदी धारा के समान भाव-धारा बहती चलती है। उस
विप्लव की ही सृष्टि हुई थी। उस समय वहाँ केवल वि
ही चिह्न नजर आता था। असंख्य लोगों के व्यक्तिगत उ
वहाँ नाम निशान न था। ऐसा लगता था कि मानो प्रब
प्रवाह में असंख्य जनता बही चली जा रही हो।

नवीन ने अभी इस बाढ़ में प्रवेश किया ही था, दूर तक आ नहीं पाया था कि पिता का बुलावा आया। नवीन जरा विचलित हुआ। लेकिन उसे खुशी हुई कि चिट्ठी में जिला मजिस्ट्रेट की चर्चा तो है, लेकिन विवाह का जिक्र नहीं है। उसने सोचा मेरी युक्ति का फल फला है, विवाह बन्द हो गया है। अब पिताजी को समझा सकूँगा। मजिस्ट्रेट की चिट्ठी का डर नहीं है।

दो दिन बीत गये वह कुछ निर्णय न कर सका। दूसरे दिन सवेरे इस निर्णय पर पहुँचा कि पिता के पास जाने की जरूरत नहीं। सब बातें चिट्ठी में ही लिख देगा। यों सोच नहा-धो कर पिता को पत्र लिखने बैठा ही था कि रामहरि बाबू खुद ही आ उपस्थित हुए। उनको पता लग गया था कि नवीन गांधी की आँधी के झोंके में पड़ गया है। उसका फल होगा कि सरकार जमींदारी छीन लेगी और नवीन को जेल में बन्द कर देगी। अभी तो यह विपद सीमा के अन्दर है, लेकिन पीछे कितनी विपद छिपी है, किसे मालूम? वे पुत्र को ले जाने के लिये आ पहुँचे। पिता को देखते ही नवीन घबड़ा गया। रामहरि ने एक मिनट भी विलम्ब न कर कहा—"चलो, झटपट तैयार हो, रेल का समय और आधा घण्टा है। घोड़ा-गाड़ी तैयार है, देरी मत करो। यदि कपड़े-लत्ते बँधे नहीं हैं, तो रहने दो पीछे फिर कभी ले जाना।"

रामहरि की यह ताड़ना सुन नवीन हतबुद्धि हो गया। अपने को सँभाल कर और शरीर में जितनी शक्ति थी सबको केन्द्रीभूत कर बोला—"अभी न जाकर रात की गाड़ी से चलने में क्या हानि है?"

यह सुनते ही रामहरि गरज कर बोले—"नहीं, अभी साथ चलना होगा, चलो गाड़ी में बैठो।"

आगा-पीछा सोचने का समय नहीं था। बाध्य हो नवीन
को पीछे-पीछे चल कर घोड़ागाड़ी में जा बैठा। गांव आ प
पानी से निकाल कर सूखी जमीन में फेंक देने से मछली जिस
छटपटाती है, नवीन की ठीक वही हालत गाँव में थी। दो
दिनों तक रामहरि कुछ भी नहीं बोले। लेकिन बाद में
करते या जब देखते नवीन कुछ खुश है, कथन पर कान दे
नाना प्रकार के उपदेश देते। "हमारे पास क्या नहीं है,
तुमको नौकरी के लिये पढ़ाता था? जितना पढ़ा उतना ही बहु
अब तुमको अपने घर-द्वार, जमीन-जायदाद की देखभाल
चाहिए। जो है उसे सँभालो, अधिक बढ़ाने की कोशिश
निकम्मे निठल्लू लौंडों के पीछे पड़कर 'हुआ, हुआ, हुक्क' चिल
और कहना कि देश से अँग्रेजी शासन को लोप करेंगे, इससे
अंग्रेजी राज उठ जायेगा? ऐसी बातें किसी जमींदार के
के लिये अशोभनीय हैं। जमींदारी तो अंग्रेजी राज के का
टिकी है। अगर वह छीन ले, तो फिर कहो कहाँ जायेंगे?
कुली की तरह मजदूरी करनी पड़ेगी।"

बातों के सिलसिले में जब रामहरि अपने बालक के
ये सारी बातें कहते, तो समझते इन बातों से बालक को स
में उन्होंने कुछ भी बाकी नहीं छोड़ा है। लेकिन नवीन यह
दीर्घ निश्वास छोड़ता, इधर-उधर देखता, सोचता—"क्या
इसी जमींदारी के लिये निर्मित हुआ है?"

लेकिन उत्तर में पिता से कुछ कहने का न अभ्यास था
न साहस था। बालक बालपन से जितने दबाव के सहारे ब
उससे उसका साहस भी उतना ही नष्ट हो जाता है। फल
न तो पिता का, न तो माता का और न गुरु का प्रभाव प

सब के मिश्रित प्रभाव के नीचे दब कर बालक का हृदय और
स्तिष्क कितना निस्पेषित हो जाता है उसका ठिकाना ही नहीं।

घरगृहस्थी की परिचालना करने में जो अनुभूति रामहरि ने
ार्जन की थी, जो कौशल आज तक सीखा था, वह सब नवीन के
छे खर्च कर दिया। बेटा बैराग छोड़कर घर-गृहस्थी सँभाले,
ादा-से-ज्यादा सांसारिक विषय बढ़ाये और खुद रामहरि नाती,
ातियों के कोलाहल के बीच खड़े हो आनन्दमय जीवनयापन
रें, यही सुख स्वप्न नवीन को वास्तविक जगत की ओर खींचने का
यम करता। वे रोज सबेरे उठते, नहा-धोकर पूजापाठ करते,
न्दिर जाते, ठाकुर से प्रार्थना करते, 'प्रभु ! नवीन को सद्बुद्धि
।'

नवीन अनेक समय एकान्त में गुमसुम बैठा रहता, किसी
ाम में मन नहीं देता और न पिता की बातों का असम्मान ही
रता। इससे रामहरि समझते ठाकुर ने मेरी प्रार्थना सुन ली है।
थम तो रामहरि को शक था कि शिक्षित पुत्र कहीं उनकी बात
ल न दे? जिस समय कटक नवीन को लाने गये थे उनको डर
ा—कहीं नवीन उसकी बात अमान्य तो नहीं करेगा? अब वह
शंका जाती रही। लेकिन अब चिन्ता थी नवीन का मन किस
कार सांसारिक विषयों में जमाया जाय, उसके लिये केवल एक
ाय था नवीन की शादी कर देना। यह नवीन से भी छिपा
हीं रहा। जल्दी उसकी शादी होगी लेकिन घर में कोई भी इस

सम्बन्ध में उससे पूछने को जरूरत नही समझता। वि
तारीख जितनी निकट आती जाती थी उतना ही नवीन के
विषाद ढ़ता जाना था। इतना समझाकर पिता को प
था लेकिन उसका फल कुछ भी न हुआ। उलटा ताड़ना
कटक से लाया गया। नवीन का मन और दुर्बल हो ग
पिता के सामने किसी बात के लिये "न" कहने का सा
होता। वह विवाह का इतना विरोधी था कि जिसके साथ
होना है उसके सम्बन्ध में जानकारी पाने का कौतूहल
में नहीं आता था। जिस प्रकार दुर्बल आदमी कि
के प्रति निराश हो अपनी कार्य-सिद्धि के लिये देवता
धरना देता है, नवीन को भी वही स्थिति थी। वह सो
किसी प्रकार यह विवाह रुक जाता, कोई दैविक आपत्ति अ
तो कितना अच्छा होता। पिता की बीमारी की बात मन
पर उसे ठेल कर सोचता—कन्या के घरवाले अगर बीमार प
तो कितना सुन्दर हो! यदि वह कन्या ही मर जाती।

नवीन इस प्रकार की कल्पना में गोते लगा ही रहा
कटक से प्रकाश का एक पत्र मिला। उसमें खास कोई ब
थी। केवल लिखा था—"तुम कैसे हो? मैं बहुत कार्यव्य
सोचता हूँ काश मेरे सौ हाथ होते, सौगुनी शक्ति होती,
मैं जनसाधारण की विपद अपने हाथ से उठा सकता।"
आदि। चिट्ठी में कोई खास बात नहीं थी, पर इससे न
मन और भी खराब हो गया। सारा जीवन माटी में मि
भगवान ही रक्षा करे तो कुछ हो। लेकिन दुर्बल आद
सहायता दैव भी तो नहीं करता।

इस प्रकार—नवीन विवाह के द्वार तक आ पहुँचा
धूम-धाम के साथ जुलूस और रोशनी आदि की अच्छी
थी। विभिन्न प्रकार के बाजे बुलाये गये थे, चारों ओ

ोलाहल मचा था। ग्राम्य-जीवन में यह एक उत्साह का साधन
ला था। सभी आनन्द-मग्न थे, केवल एक वर ही ऐसा था जो
ड़वत् मुख सुखाये बैठा था। कन्या का घर अति गरीब है, यह
ज नवीन का मन और खराब हुआ। कारण गरीब घर की
ड़की होने से नाना प्रकार के विषय विलास वासना का उपभोग
रने की इच्छा रखेगी। अगर विवाह ही करना था, तो क्या किसी
भ्रांत कुल की कुलीन शिक्षिता कन्या न थी। यह सोच पिता
 ऊपर क्रोध आता।

अन्त में वर-कन्या वेदी पर आये। ब्राह्मण, पण्डितगण शुद्ध
ाशुद्ध संस्कृत के वेद मन्त्र उच्चारण करने में लगे। नवीन जड़वत्
ठा रहा, कोई भी चिन्ता क्षण भर के लिये भी उसके मन में
थान नहीं पा रही थी, नाना प्रकार की चिन्ताओं से वह अस्थिर-
ा हो गया था।

उधर प्रतिभा की भी वही दशा थी। माता-पिता के ऊपर,
माज के ऊपर उसे क्रोध आता था; किन्तु मुख खोल कर कुछ
कह नहीं सकती थी, साहस जो नहीं था। इस प्रकार असहायता
ा मानसिक कष्ट उसके मन को भी मथे डालता था। वह भी
ड़ बन गई थी। इस शादी में आखिर हो क्या रहा है—न तो
वीन जानता था न प्रतिभा ही। लेकिन जब ब्राह्मण देवता ने
र और कन्या के दाहिने हाथों को इकठ्टे करके जोड़ा और
ोर से मन्त्र उच्चारण किया तो नवीन को ऐसा अनुभव हुआ
ानो शरीर की नस-नस में एक बिजली की शक्ति का संचार-सा
ो गया। ऐसी अनुभूति इसके प्रथम उसको कभी नहीं हुई थी।
उसके हृदय के निचली सतह से एक आवाज आई—"यह तुम्हारी
आजीवन संगिनी है, इसे अपना लो।" लेकिन यह आवाज नवीन
को दुर्बलता का चिह्न मालूम हुई। उसने सोचा—मेरा जीवन

घर-गृहस्थी बनाने के लिये नहीं है। कितने उतम-उत्तम
मेरे द्वारा हो सकते थे।

बिचारी प्रतिभा को भी हस्त-संयोग से एक नई अनुभू
संचार का अनुभव हो रहा था, "अच्छा हो या बुरा, सारा
तो बँध ही गया।" मन का सारा असन्तोष नेत्र-पथ से आँसु
साथ बह चला। "अब जिसका हाथ पकड़ा है उसी को सँ
से सँभलेगा अन्यथा पाप-समुद्र में डूबेगी।"

असहाय हालत में उसका मन स्वामी की ओर ढुलका।
का मन अपनी-अपनी चिन्ता में लगा था। जब ब्राह्मणों में सि
दान की दक्षिणा के लिये झगड़ा होने लगा, तो दोनों का मन त
उस ओर फिरा और फिर अपने-अपने स्थान को लौट आया।

✤

हेमन्तकालीन शीतल पवन के चलने से शस्यपूर्ण खेत
जिस प्रकार उताल तरंग मालाएँ खेलती-सी जान पड़ती हैं,
उसी प्रकार या उससे भी अधिक नव-विवाहित दम्पति के हृद
नई-नई उमंग मालाएँ, नयी कल्पनाएँ और आनन्द की लहरें खे
चाहिए थीं। पर नवीन को खुद ही नहीं मालूम था कि
क्यों अच्छा नहीं लग रहा है। अगर माँ स्नेह से कुछ कहती
उसे ऐसा लगता मानो उसका तिरस्कार हो रहा है
अगर पिता प्रेम से कुछ कहते, तो उसके शरीर में आ
लग जाती। पत्नी का स्वर तो ऐसा मालूम होता मानों बिच्
डंक मार दिया हो, बैठना, उठना, सोना और जागना सब

नीरस लगता था। सँपेरा जिस प्रकार साँप को पकड़ कर मोड़ मरोड़ कर अपनी पिटारी में भर कर बन्द कर देता है और साँप भीतर छटपटाता रहता है, वही हालत नवीन की थी, लेकिन भेद केवल इतना ही है कि वह खुद पिटारी का निर्माण करने वाले हैं और सँपेरा भी खुद हैं।

उधर प्रतिभा अपने को एक अद्भुत अवस्था में बँधी पाती है। गरीब घर की लालित-पालित और माँ की ताड़ना को सहकर बढ़ी कन्या का दिल सूखा-सा था। उसमें महेन्द्र बाबू के द्वारा भेजी किताबों से आनन्द का एक बूँद ही सही पड़ा, उसी की प्रतिक्रिया के फल-स्वरूप प्रतिभा महेन्द्र बाबू को ओर आकर्षित हो गई। परन्तु अब वह यहाँ गरीब घर की लड़की नहीं है, वह यहाँ है बड़े घर को पुत्र-वधू और इस घर के एकलौते पुत्र की पत्नी। माँ के रुक्ष व्यवहार के स्थान पर यहाँ सास का प्रेम कोमल व्यवहार मिला। प्रतिभा ने कभी सोचा न था कि सास का व्यवहार माँ से इतना अधिक कोमल होगा। उसकी धारणा थी कि सास का घर एक अत्याचारपूर्ण काल-कोठरी होगी; लेकिन उसने यहाँ ठीक उलटा देखा।

दो-चार दिनों के बाद रामहरि की पत्नी जाह्नवी ने प्रतिभा से कहा—"देखो बहू! मेरे और कोई नहीं, नवीन ही मेरा सब कुछ है। तू मेरी बेटी, मेरे घर की लक्ष्मी होकर आई है। तेरी जो इच्छा हो, जो जरूरत हो, मुझसे कहना, मन मसोस कर मत रह जाना। मैं भी एक दिन तेरे समान ही गरीब घर की लड़की थी। मेरी सास मुझे ऐसा हैरान करती थी कि कभी-कभी सोचती थी कि जहर खा लूँ! मैं जानती हूँ; बड़े आदमियों के घर गरीब घर की लड़की आने पर उसे हीन माना जाता है, लेकिन तू ऐसा मत सोचना। कारण तेरी सास भी तो एक गरीब घर की लड़की है। मेरे नवीन को संसार का ज्ञान बिलकुल नहीं है और फिर उसे जानने

की जरूरत ही क्या है । अब तू इस संसार को चलायेगी, यह
तेरा है। वह कुछ भी करे, तू अगर ठीक से पतवार पकड़े र
तो नौका ठीक रास्ते चलेगी । मेरी उम्र अधिक हो गई है, अब
संसार तेरा है ।"

विवाहित जीवन में सास से ऐसा आश्वासन पाना हिन्दू
को कम देखने में आया करता है । प्रतिभा ने अपने को अति भ
वान समझा । विवाह, समाज और अपनी अवस्था के प्रति उ
मन में जो विद्वेष भाव पैदा हो गया था, वह आग में पानी
के समान गायब हो गया । प्रतिभा कुछ ही दिनों में इस प्र
घर के साथ मिल गई कि कोई यह कल्पना ही नहीं कर
कि यह नव-विवाहिता बहू है ।

पर इस ओर से उसे जितनी शान्ति मिलती स्वामी के व्यव
के प्रति उतनी ही उसकी अशान्ति बढ़ रही थी । नवीन उसके
बातचीत नहीं करता था । वह चाहती थी कि मासिक
पत्रिकाएँ पढ़कर जो ज्ञान उसने उपार्जन किया है स्वामी के
उसे और बढ़ाये । महेन्द्र बाबू जिस विषयों पर लेख लिखा क
थे उसकी स्वामी के साथ आलोचना-प्रत्यालोचना करने
इच्छा होती । उसके मन में जो एक सम्माननीय नारी
का भाव अंकुरित हुआ था वह स्वामी के साथ फलता-फूलता
कितना उत्तम होता !

स्वामी के मुख से कुछ सुनने की लालसा में नव वधू की ल
को धकिया कर एक-दो बार वह स्वामी से अस्पष्ट स्वर में
बोली थी, लेकिन उत्तर में उसे मिला—गम्भीर चिंताजनित अ
रता में गोते लगाते मौनावलम्बन । स्वामी के मन में क्या है,
मालूम नहीं था; इसलिए उसको जानने के लिये वह नाना कल्प
करती । वह सोचती—सास आदर करती है यह सत्य है ले
अपढ़ गरीब घर की लड़की समझ कर ही तो वे मेरा आदर

रते।" औरत के मन में यही भाव अभिमान पैदा करते हैं, धीरे-
रे प्रतिभा स्वामी के प्रति अभिमान करने लगी। प्रेमिका के मन
ो अभिमान नीचा करने में समर्थ होता है; लेकिन जहाँ प्रेम है
ी नहीं वहाँ तो उसका उल्टा ही फल मिलता है। प्रतिभा का
भिमान जितना बढ़ता, नवीन उतना ही कठोर होता जाता और
दिन-दिन परस्पर एक दूसरे से दूर हट रहे थे।

कुछ दिन तो जाह्नवी ने लक्ष्य किया कि प्रथम-प्रथम अपरि-
चत होने के कारण ऐसा हुआ ही करता है। लेकिन जब उसने
खा कि नवीन घर में सोने नहीं आता, बहू से बातें नहीं करता,
ो उसने सोचा कि गरीब घर की कन्या समझ कर वह प्रतिभा को
सन्द नहीं करता है। एक रोज खाकर नवीन बाहर के कमरे में
ुछ पढ़ रहा था। जान्हवी किवाड़ के पास खड़ी होकर बोली–
"नवीन तू घर सोने क्यों नहीं आता ?"

उस समय नवीन गांधी जी का––युवकों का कर्त्तव्य नामक एक
बन्ध पढ़ रहा था। माँ को बुलाते देख विरक्त हो बोला––मैं नहीं
जाऊँगा।" जाह्नवी पास जाकर पीठ पर स्नेह से हाथ फेरते बोली,
'बात क्या है? मुझसे कहो न, तब तो मैं समझूँ।"

"नवीन उठ खड़ा हुआ और विरक्त होकर बोला––माँ तू
यहाँ से जा, मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता, मैं कहीं नहीं
जाऊँगा। इसी घर में पड़ा-पड़ा सड़कर मरूँगा।" जान्हवी दुःख
और विस्मय के मारे नवीन की ओर ताकती रह गई। वह अपने
कमरे में गयी, उसने सोचा प्रतिभा ने कुछ कहा होगा, प्रतिभा को
अपने कमरे में बुलाया। और प्रेम से बोली—"बहू तूने नवीन
को क्या कुछ कहा है? बेटी मुझे पराया मत समझ, अपनी माँ
समझ, सारी बातें साफ-साफ कह। भला तुम दोनों के सिवा
मेरे और कौन है?

प्रतिभा की समझ में न आया कि क्या उत्तर दे। वह चुप-
चाप नमस्तक खड़ी रही। जान्हवी देवी प्रतिभा को अपनी गोद

में खींच कर पीठ सहलाते हुए बोलीं—क्या तूने उसे कुछ है?" प्रतिभा उसकी गोद में रोने लगी। गोद में मुँह कर बोली—मुझे तो कुछ भी नही मालूम माँ? वे तो मु बोलते ही नहीं।

प्रतिभा की समझ में न आया कि क्या करे, उसे लज्जा रही थी। उसके मान-अभिमान को भी व्याघात लगता था। सास का अतुलनीय स्नेह वचन सुनकर वह खड़ी हो गई। जा देवी ने कहा—इसमें मान-अपमान की बात नहीं बेटी, तुम तो एक नेरुआ के दो फूल हो। जा बेटी बुलाकर ला।

प्रतिभा ने जाकर देखा नवीन घर में उत्तेजित-सा च कदमी कर रहा है। वह जा कर द्वार पर खड़ी हो गई। प्रति लज्जा के मारे गड़-सी गई थी पर सिर नीचा किये वह कमरे अन्दर चली गई। नवीन की निगाह प्रतिभा पर पड़ी। वह झल कर बोला—"यहाँ क्या मुझे खाने के लिए आई हो? जरा शान्ति में था तो यहाँ भी आ पहुँची। स्त्री जाति मानव को करने बैठी है। जा यहाँ से!" प्रतिभा लज्जा, अपमान क्रोध के मारे बिजली के समान आकर अपने कमरे में लेट और रोने लगी।

उस दिन नवीन को रात भर नींद नहीं आई। बार-बार एक बात की चिन्ता करते-करते सिर खराब-सा हो गया। धीर-स्थिर होकर सारी बातें एक के बाद एक सोचकर उ अपना कर्त्तव्य स्थिर किया। उसने निश्चय किया कि मैं अ जीवन को साधारण घर गृहस्थी में नहीं फसाऊँगा। सोचते-सो उसे प्रकाश की बातें याद आ गईं। "जिस बात को निश्चय लोगे उसे माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध कर तो सकोगे? इस सोचने के बाद ही पुरातन और नूतन के साथ संघर्ष शुरू होता यही है विप्लव। इसको छोड़ देने से विप्लव शब्द का अर्थ

नहीं है। बच्चे के जन्म के समय जो संघर्ष होता है उससे दना के कारण माँ का जीवन मुश्किल में पड़ जाता है। यहाँ तक मृत्यु हो जाती है। लेकिन बिना इसके पुत्र का जन्म भी असम्भव है। पुरातन के गर्भ से नूतन का जन्म होने से पुरातन पर धा तो अवश्य पड़ेगी; अतएव इन बाधाओं पर ध्यान देना चित नहीं है।

उसके बाद आई अपनी स्त्री, अच्छा हो या बुरा, वह तो मेरे ाथ बँध ही गई। उसका दूसरा भविष्य क्या है? स्त्री को साथ कर विप्लव में शामिल हो सकेगा कि नहीं यही चिन्ता का विषय ा। उसका ख्याल था विवाहित जीवन और विप्लव ये दोनों एक सरे के विरोधी हैं।

उसने सोचा माँ अपनी बहू को लड़की से भी बढ़कर स्नेह करती । घर में सब सुख है, वह कभी उपवास नहीं कर सकती। ऐसी शा में अगर उसे छोड़कर वह चला जाय तो कुछ हानि नहीं है। न में दुःख होगा, सो होने दो। यही तो नये पुराने का संघर्ष है।" स प्रकार निश्चय करने के बाद नवीन ने यह पक्का कर लिया क वह घर से चला जायेगा।

सबेरा होते ही मालूम हुआ कि नवीन घर नहीं है। गाँव में ी नहीं। यह सुन रामहरि को अति दुःख हुआ। उसकी समझ में ी न आता कि क्या करना चाहिये। चारों ओर आदमी भेजा। पनी पत्नी और बहू के ऊपर गुस्सा हुए। रामहरि को यह विश्वास ा कि नवीन पागल नहीं है, न आत्महत्या ही करेगा। वह गांधी ोष्ठी वालों के साथ पागल है, वहीं उन्हीं के पास गया है। सांसारिक विषयी आदमी को ऐसी घटना जल्दी विचलित नहीं कर ाती। घटना पर नाना प्रकार युक्ति, तर्क से सोचते हैं, विचारते ैं। सँभल जाते हैं। रामहरि ने सोचा—गान्धी गोष्ठी में गया , जाय। हानि क्या है। जमींदारी कर आँच आने का डर आयेगा ो उसे त्याज्य-पुत्र कर दूँगा नहीं तो घूमे कितना घूमता है।"

प्रतिभा अति लज्जित और चकित हुई। उसने सोचा,
सोचेंगे, उसी के कारण ऐसी विपद आई। निन्दा के साथ भ
हुआ। फूल तोड़ने के लिए अभी हाथ बढ़ाया ही था कि
हाथ में चुभ गया। लेकिन जान्हवी देवी हमेशा कहती—
पुत्र कभी खराब काम नहीं करेगा। मन खराब था कहीं
गया है। घूम-फिर कर फ़िर वापस आ जायगा। जब मेरी
मेरे पास है तो लड़का निश्चय आयेगा ही।"

✣

नवीन घर छोड़कर स्टेशन आ पहुँचा। रेल की तृतीय
में चिन्ताकुल कुछ घंटे बिताने के बाद कटक स्टेशन आ ग
पास में जो रुपये थे उससे टिकट खरीदी गई थी। पास में
पैसा भी नहीं था कि घोड़ा-गाड़ी करके स्वराज्याश्रम जाय; अ
पदयान को छोड़कर चलने का और कोई उपाय नहीं था। च
चलते स्वराज्याश्रम तक आया।

रास्ते में देखा बाजार बंद है, शहर में निस्पन्द नीरवत
जगह-जगह दुकान खोलने के लिए पुलिस वाले दुकान वाल
धमका रहे थे। लेकिन उस धमकी का डर किसी को नहीं
एक जगह उसने देखा कि एक दुकानदार छिप कर पीछे से
बेच रहा है। पड़ोसी जान गये। उसे बहुत गाली मिली,
और बेइज्जती मिली। रास्ते में एक बैल गाड़ी आ रही थी, मु
वालों ने पकड़ कर उस गाड़ी के बैल खोल दिये।

यह देखकर नवीन का मन फूल उठता था। उसने
१८५७ के गदर के बाद यह स्वाधीनता आन्दोलन दूसरा

खता है। लेकिन उस समय राजा-महाराजा और फौज ने विद्रोह किया था, इस समय सारी जनता विद्रोह कर रही है। उस समय मुक्ति के लिये भारत ने शत्रु के रक्त से शस्त्र रंजित किया था लेकिन इस बार बिना शस्त्र के अहिंसात्मक उपाय से भारत गुलामी से मुक्त होने के लिये अहिंसा-युद्ध कर रहा है। यह इतिहास में एक नया अध्याय खुला है। उस नये अध्याय को जिनने खोला है उनमें एक मैं भी हूँ, यह सोचकर उसका मन खुशी के मारे नाच उठा। स्वराज्याश्रम कहाँ है उसे मालूम नहीं था। पिता के साथ जब यह शहर गया तो सुना था कि स्वराज्याश्रम सब जगह है। परन्तु स्वराज्याश्रम कहाँ है? उसका परिचालक कौन है? उसे कुछ भी पता नहीं था। किन्तु उस समय तो एक बालक से भी पूछने पर स्वराज्याश्रम का रास्ता मालूम हो सकता था। अतएव नवीन को स्वराज्याश्रम जाने के लिये कोई असुविधा नहीं हुई। वहाँ जाने पर मालूम हुआ कि वहाँ का परिचालक प्रकाश है। यह सुनकर उसके मन में और अधिक उत्साह आया। आश्रम में प्रायः डेढ़ सौ आदमी थे। दल के दल शराब, गाँजा आदि मादक द्रव्यों की दुकान पर धरना देने जाते थे। दिन के दो बज गये, खाने-पीने का कोई ठिकाना नहीं। बिना खाये-पीये भी स्वयंसेवक दल दुकानों पर धरना देने जाते थे। आश्रम के उत्तेजनामय वायुमंडल को समझना नवीन के लिये बाकी नहीं रहा।

नवीन ने देखा कि उसके छात्र समाज का एक आदमी भी नहीं है। जो २-४ कालेज के छात्र हैं भी उनको वह नहीं जानता। ८-१० स्कूल के छात्र थे। बाकी सभी लिखने-पढ़ने के मामले में निर्दोष थे। लेकिन वहाँ शिक्षित-अशिक्षित का भेद नहीं था। जो अंग्रेजी पढ़े लिखे थे, वे खुद संकोच अनुभव करते थे। कारण अंग्रेजी शिक्षा भारत में दास भाव का ही प्रदर्शन करती है। वह प्रकाश के साथ मुलाकात करने के लिये अति उत्सुक थे। लेकिन वह आश्रम

में नहीं थे। वे सबेरे ही चले जाते और रात ६ बजे आ
कहाँ खाते, क्या करते, किसी को भी पता न था।

उस दिन प्रकाश रात को १२ बजे लौटा। भोजन नहीं
था इसलिये कोई सोया भी न था। नवीन को देखकर प्र
दौड़कर उसे छाती से लगा लिया। प्रकाश ने कहा—मेरी
तुमको मिली तो? धन्यवाद। मैं तो तुम्हारी ही प्रतीक्षा में

नवीन ने मुस्कराकर अभिवादन का उत्तर दिया। दोनों
के ऊपर चले गये। एक चटाई बिछाकर दोनों वहीं पर बैठ
प्रकाश ने कहा—"मैं तुमको कालेज में पढ़ते समय से जानत
तुम्हारी गतिविधि को भली भाँति लक्ष्य भी करता था, तुम
न भी जानते हो। तुमसे मुझे जो आशा थी वह सफल हुई
तुम्हारा रास्ता देख रहा था—यह शिष्टाचार के नाते नहीं क
हूँ, तुमसे मेरा काम है! अगर तुम न होते तो शायद मेरा क
हो पाता।"

यह सुन नवीन ने आनन्द का अनुभव किया।
नवीन जितना आनन्द अनुभव करता था उतना ही दायित्व
समझता था वह यह जानने के लिए उत्सुक था कि उसे क्या
दिया जायगा। कुछ काल चुप रहने के बाद प्रकाश ने पू
अच्छा नवीन! इस आन्दोलन में शामिल होने में क्य
बाधाएँ हैं?

नवीन बोला—बाधाएँ कुछ भी न थीं पिता की इस का
प्रति बिलकुल राय नहीं थी। मैं तो छिपकर चला आया हूँ

प्रकाश—अगर वे तुमको फिर लेने के लिए आएँ?

नवीन—नहीं, वे अब नहीं आयेंगे।

प्रकाश—तुम अविवाहित तो हो?

नवीन इस प्रश्न से विचलित हो गया। उसके मन मे
प्रकार का विरक्तिभाव आ गया। क्या उत्तर दे, कुछ स

सका। धीरे से बोला—मैं विवाहित हूँ लेकिन उस विवाह से मैं सहमत नहीं हूँ। मेरा जबरदस्ती विवाह करा दिया गया है।"

प्रकाश जरा चुप होकर बोला—"तुम्हारी स्त्री का इसके प्रति क्या विचार है ?"

नवीन ने बात की गति को बदल कर कहा—"मैं विवाह को विप्लव का विरोधी समझता हूँ; इसलिए विवाह के पक्ष में मैं बिलकुल नहीं था, अब भी मैं अपने को विवाहित नहीं समझता।"

गम्भीर हो प्रकाश ने कहा—"तब तुम्हारी स्त्री की स्थिति क्या होगी ? नवीन ने हठात् उत्तर दिया, "इसके लिए मैं अपने को अपराधी नहीं समझता।"

प्रकाश ने धीरे-धीरे कहा—"यह सच है; किन्तु यह तर्क स्थायी नहीं है। कहीं-न-कहीं तुम अटक जाओगे। और फिर तुम्हें पीछे घूम जाना पड़ेगा; शायद उस समय इस युक्ति के लिए तुम्हें अनुताप करना पड़े।"

यह सुन नवीन को ऐसा लगा मानों अन्तर से कोई इस बात का समर्थन कर रहा है—यह अनुभव कर उसने इन भावों को दबाने के उद्देश्य से अनावश्यक व्यग्रता प्रकट करते हुए कहा—"नहीं, कभी नहीं। मैं हमेशा अपना जीवन देश-सेवा में ही लगाऊँगा।"

प्रकाश ने हँसते हुए इस विषय को टाल कर पूछा—"अच्छा, आश्रमवासियों से परिचय हो गया है ?" अपनी व्यक्तिगत जीवन की चर्चा समाप्त देख नवीन ने शान्ति का अनुभव किया, उसने कहा—"मैं तो आज ही आया हूँ। अभी किसी से परिचय नहीं हुआ है।" आश्रय का थोड़ा-सा परिचय देकर प्रकाश ने कहा—यहाँ शिक्षित एक भी नहीं हैं। आरम्भ में बहुत से छात्रों और शिक्षित आदमियों ने इसमें भाग लिया था; लेकिन अब प्रायः सब भाग खड़े हुए हैं इसका अर्थ यह नहीं है कि असहयोग आन्दोलन में कुछ त्रुटि

हुई—बात यह है कि सभी युग में सभी देश में जब-जब वि
हुआ है तो नगण्य और अशिक्षितों के ही द्वारा विप्लव के स
उसके नेता का नाम विप्लव के समय सुना गया था। वे समाज के
सतह के आदमी नही थे। नैपोलियन कॉर्सिका का एक अज्ञात-
शील दरिद्र आदमी था। लेकिन उसने पृथ्वी को चमका दिया
श्रीकृष्ण क्या थे ? कारा में जन्म हुआ, निम्न श्रेणी के बीच पा
पोषण हुआ और वे औतार कहलाये। जो शिक्षित हैं उनसे
नहीं होता; परन्तु वे समाज से लाभ उठाते हैं। वे कभी विप्
नहीं बन सकते। जो शोषित हैं, अशिक्षित हैं, उन्हीं के
विप्लव की आवश्यकता है, विप्लव कार्य में उन्हों का आगे अ
स्वाभाविक है।" थोड़ी देर दोनों ने चुप रह कर फिर प्रकाश ने धी
धीरे कहा—एक बार गुरु गोविन्द सिंह ने कहा था—चिड़िया
हाथों अगर मैं बाघ न मरवा सका तो गुरु गोविन्द सिंह ही नहीं। वा
में ये अशिक्षित ही मुक्ति संग्राम चलाएँगे। उन्हीं द्वारा विजय हासि
होगी ! वे ही इस विजय-सुख के अधिकारी हैं।"

इतना कहकर प्रकाश उठ खड़े हुए, अन्यमनस्क रूप से कहा
नवीन, रात अधिक हो गई है, जाओ; सो जाओ।

दूसरे दिन आश्रम के अन्य स्वयंसेवकों के साथ झोली ले
भिक्षा करने के लिए नवीन को भी भेजा गया। सबेरे भीख और स
को शराब की दुकानों में धरना देने का काम भी उसे करना पड़
था। भीख के लिए प्रथम जब कन्धे पर झोली डालकर निकल
तो संकोच-बोध होता था; लेकिन जब उसने सोचा कि द
देश के लिए आनन्द के साथ अर्थ दान करने की सामर्थ्य नहीं
आशा भी नहीं है, जो कुछ मिलेगा गरीबों की हाँड़ी से मिले
जिसमें कि गरीबों का हृदय है, विप्लव के प्रति सहानुभूति है उ
समय कन्धे में झोली डालकर उन लोगों के सामने जाना उसने ए
महत् कार्य समझा, उसमें गर्व का अनुभव किया।

जब वह मद की दूकान में धरना देने गया तो मदपायियों क
बुरी-बुरी गाली सुन कर प्रथम उसके मन में रोष पैदा हुआ लेकि

नब यह भाव मन में आया कि ये सभी अपने ही तो भाई हैं गाली
तुनकर भी अगर उनको सुधारा जा सका तो भाई का कितना
बड़ा कल्याण-साधन होगा।

बड़े उत्साह के साथ वह इस काम में लगा रहा। प्रकाश
नवीन की सारी गतिविधि लक्ष्य कर रहा था।

एक दिन प्रकाश ने उसे बुलाकर गम्भीर होकर कहा—आज
तुम्हीं इस आश्रम के परिचालक हो। बल, बुद्धि और विवेक खर्च
करके काम में लगो और दूसरों को भी लगाओ। जनता के भीतर
ऐसे भाव पैदा करो कि वह अत्याचार के विरुद्ध सभी अहिंसात्मक
उपायों का अवलम्बन करे।

यह कह उसने कागज पर लिख दिया—'कटक आश्रम का
भार नवीन के ऊपर रहा। प्रकाश—।' और कागज नवीन की
ओर बढ़ा दिया।

नवीन अपने सिर पर इस भारी बोझे का अनुभव कर प्रथम
तो कुछ काँपा, लेकिन बाद में गर्व के साथ उस भार को वहन करने
के लिए तैयार हुआ।

प्रकाश ने कहा, "नवीन तुम पावर हाउस बन सकते हो।"

✣

'पावर हाउस' के कथन से नवीन खुश हुआ था। अपने जीवन
का लक्ष्य एक ही शब्द में पाते देख उसके आनन्द की सीमा न थी।
प्रकाश ने जिस समय कहा कि तुम एक पावर हाउस बन सकते हो,
तो इससे नवीन की रग-रग में एक बिजली सी दौड़ गई थी।
उपस्थित कार्यक्रम के सम्बन्ध में वह सोचने लगा कि किस प्रकार
वर्तमान प्रचलित शासन के साथ प्रत्यक्ष संघर्ष कर सके। दो दिन
के बाद डिप्टी के निर्वाचन का काम होने जा रहा था। सब प्रार्थी

जिला मजिस्ट्रेट के साथ मुलाकात करेंगे। प्रायः ४०-५०
उस दिन उपस्थित होंगे। वे लोग भीतर जाने न पायें इ
धरना दिया जायेगा। स्वयंसेवक रास्ते में सो जायेंगे, प्रार्थि
प्रार्थना करेंगे कि अगर उनको सरकारी नौकरी के लिये जाना
हमारे ऊपर पैर रखकर जायें। जिनके पास हृदय होगा वे
जायेंगे। ऐसी स्थिति में जो चुने भी जायेंगे वे लज्जित होंगे

निर्दिष्ट दिन निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार काम शु
गया। मजिस्ट्रेट साहब उपने घर में बैठे थे। प्रार्थियों के लि
कमरे में बैठने और अपेक्षा करने की रात थी। बाहर घर के
द्वार पर स्वयंसेवक आकर सो गये।

प्रार्थी विदेशी पोशाक में अपने को जितना सुसज्जित कर
ये करके आये थे। वे लोग बरामदे के पास इधर-उधर घू
थे, सोचते थे किस प्रकार भीतर जायेंगे। मजिस्ट्रेट साहब
द्वार से अपने कमरे में आ गये। स्वयंसेवक चीत्कार करने लग
से रुपयों के लिए चाकरी करके देश को गुलामी की जंजी
पहनाओ।" यह तमाशा देखने के लिये धीरे-धीरे आदमिय
भीड़ बढ़ गई। तमाम कचहरी में आदमी ही आदमी नज
लगे। भीतर से मजिस्ट्रेट साहब का एक चपरासी बाहर
चीखा --"विनोद बाबू कौन हैं ?"

उस समय प्रार्थियों के मन की चंचलता देखने लायक
अनेक स्वयंसेवकों के ऊपर नाराज होकर दाँत पीस रहे थे।
बहुत व्यस्त हो गया, उसने चपरासी से कहा--जाकर क
साहब, रास्ता बन्द है, जायें कैसे ?

चपरासी भीतर गया और आकर मलिन मुख से बो
"साहेब का हुक्म है कि इन लोगों के ऊपर से चले आओ।"

मजिस्ट्रेट का हुक्म सुनकर प्रार्थी आपस में फुसफुसा
उपस्थित जनता यह आलोचना करने लगी कि साहिबी

धारी देश को रसातल पहुँचाने जा रहे हैं। विनोद बरामदे पर चढ़ा, उसने सोचा चलो चढ़कर निकल जायें", लेकिन वापस आ गया। उसने चपरासी से कहा——साहेब को जाकर कहो कि इन लोगों को यहाँ से उठा दें।" चपरासी चुप रहा, लेकिन उसके मुख से पता लगता था कि स्वयंसेवकों के प्रति उसकी सहानुभूति है और प्रार्थियों के प्रति घृणा। इतने में साहेब ने घण्टी बजाई। चपरासी अन्दर गया और आकर खबर दी——विनोद का नाम खारिज अब महेन्द्र बाबू का नम्बर है।" महेन्द्र बाबू धीरे-धीरे बरामदे में आये। नवीन की आँखें बहुत समय से महेन्द्र पर टिकी थीं। वह दोनों एक समय के अन्तरङ्ग दोस्त थे। उसने सोचा महेन्द्र को समझाऊँ, लेकिन रुक गया। सोचा, 'महेन्द्र जैसे ही आगे बढ़ेगा उसके पैर पकड़कर सो जाऊँगा। मुझे देखते ही महेन्द्र स्तब्ध हो जायेगा, उसका मन बदल जायेगा और वह मेरे साथ आश्रमवासी बनेगा।"

जैसे ही महेन्द्र द्वार पर आया कि नवीन द्वार पर सो गया और बोला——"महेन्द्र, आज तक तुमने विप्लव-विप्लव चिल्लाकर हमें इधर ठेला है, अब उससे अलग नहीं हो सकते।"

नवीन के लाल और सतेज मुख को महेन्द्र ने देखा, उसका मन जरा विचलित हुआ। लेकिन फिर नवीन को देखते ही उसे कौन-सी याद आई और वह क्रोध से तमतमा उठा। वह तनिक-सा पीछे हट गया, उसके मन में पिछली बातें जाग उठीं। रोषपूर्ण स्वर से बोला——"नवीन! तुमने अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा की थी न! वञ्चक!!"

लेकिन नवीन चिल्ला रहा था—"महेन्द्र लौट जाओ" इस चीत्कार की प्रतिध्वनि में जनता चिल्ला उठी लौट आओ।'

नवीन के प्रति क्रोध और ईर्षा होने के कारण महेन्द्र को निश्चय तक तर्क-वितर्क के बाद उसने पक्का निश्चय कर लिया

कि वह नवीन को लाँघ कर चला जायगा। लाँघने जा ही रहा थ
नवीन ने महेन्द्र का पैर पकड़ लिया, चारों ओर से तुमुल चीत
उठ रही थी--"लौट आओ!' लौट आओ!!" किसी की कु
सुन महेन्द्र पैर का झटका देकर नवीन को घसीटता हुआ अ
चला गया। जनता 'देशद्रोही', गुलाम' आदि नाना प्रकार
विशेषण ध्वनि से उनकी भर्त्सना करने लगी। पर महेन्द्र मजि
के सामने उपस्थित हो गया।

कुछ ही देर बाद सदलबल पुलिस आई और उसने स्व
सेवकों को पकड़ लिया। उपस्थित जनता को लाठी के सहारे
तक उस पर घेरा डाल दिया गया। सिवा चीत्कार के स्वयंसे
और जनता के व्यक्ति कुछ भी नहीं कर सके थे।

बाद में मालूम हुआ कि महेन्द्र के विशेष अनुरोध पर मजि
ने ऐसी अनुशासन की कार्यवाही की थी।

✤

नवीन के ऊपर महेन्द्र का क्रोध क्यों? इसका उत्तर
महेन्द्र खुद नहीं दे सकता था। पिता के शासन से उसने कॉ
छोड़ा था और कुछ दिनों बाद सब डिप्टी के लिए प्रार्थी बना
कटक में रहने पर भी वह एक दो बार अपने ग्राम भी गया
वहाँ शिक्षक से उसे पता लग गया था कि प्रतिभा की शादी न
के साथ हो गई। शिक्षक को ५) रुपये की सहायता फजूल
थी। शिक्षक ने उसे धोखा दिया है यह सोच कर वह उस
नाराज हुआ। लेकिन शिक्षक को इस नाराजी का कारण
मालूम हुआ। महेन्द्र का प्रतिभा के प्रति प्रेम है या नहीं, है
कैसा है आदि शिक्षक की कल्पना के बाहर की बातें थीं।'

नवीन ने उस प्रतिभा के साथ विवाह किया था, जिसका कि महेन्द्र ने नाम बदला था। जिसके रूप का स्मरण कर खुश होता। नवीन ने व्याह किया। जिसने आजीवन ब्रह्मचारी रहने की कसम खाई थी।

प्रेम गत ईर्षा की यह विशेषता है कि दूसरे के ऊपर क्रोध का कारण खुद नहीं खोज पाती। वह जिसको प्रेम करता था उसकी शादी दूसरे के साथ हो गई है। उसके लिए कौन जिम्मेदार है कौन नहीं—इन सब बातों पर विचार करने की शक्ति ईर्षा के कारण महेन्द्र में नहीं थी।

उसको नौकरी मिल जाती और जीविका की चिन्ता मिट जाती तो वह अपनी चिरपोषित समाज-सुधार की परिकल्पना असवर्ण—विवाह करके पूरी कर लेता लेकिन वह सारी कल्पना आकाश कुसुम के समान विलीन हो गई।

कालेज में पढ़ते समय महेन्द्र छात्र-नेता था और नवीन उसका एक अनुचर मात्र था। महेन्द्र इस विप्लव में शामिल नहीं हो सका और नवीन शामिल हो गया था। ऐसी बातों से यह धारणा हो गयी थी कि महेन्द्र नवीन से छोटा ही है, और ईर्षा का एक कारण यह भी तो है। जो भी हो पूर्व बन्धुत्व के महेन्द्र के पास ईर्षा के सिवा कुछ भी नहीं है। नवीन की छाती पर जूता पहिने निकल जाने के कारण छिपा अनुताप हृदय में उठता भी था तो ईर्षा की आभा उसे दबा देती थी।

मनुष्य ऐसा तर्कवादी है कि हर एक काम के समर्थन के लिए वह अनेक युक्तियों का सहारा ले लेता है।

नवीन और अन्य पकड़े गये स्वयंसेवकों का विचार अ
हुआ। महेन्द्र के हृदय में एक नैतिक धक्का उसने दिया है,
सोचकर उसे बहुत सन्तोष मिला। मुकदमे के विचार के
हजारों दर्शक उसके तेज और उत्साह से प्रभावित हुए थे। ह
ने पूछा था—'तुम अपने को दोषी समझते हो या निर्दोष ?
नवीन ने गम्भीर हो उत्तर में कहा—"अगर देश को गुलामी
जंजीर से छुड़ाना अपराध है तो मैं एक अपराधी हूँ, देश प्रेम
अपराध है तो मैं अपराधी हूँ। विचारक महोदय, आप मुझे
से कड़ी सजा देने में दया मत दिखाइये। मुक्ति पाने पर अपनी
शक्ति लगा कर मैं वही करूँगा जो मैंने किया है।

"इस प्रकार का निर्भीक उत्तर सुनकर जितने दर्शक
मौजूद थे सभी के मन में एक नया उत्साह जागरित हो उ
उनके दिल दिमाग में नवीन की वाणी झंकार कर रही थी। स
वाणी से एक स्वर निकल पड़ा 'महात्मा गांधी की जय', चारो
से आनन्दमय निनाद सुनकर नवीन का कलेजा फूल उठा।
स्थिति को देख विचारक मन ही मन लज्जित था। उसने उप
दर्शक को कचहरी से निकल जाने का हुक्म दिया। इस हुक
फलस्वरूप जनता उत्तेजित हुई, और दूने उत्साह से 'महात्मा
का जय' निनाद कर चली गई। १५ मिनट के बाद ठीक
है कि नवीं, यह देखने और विचारने की किसी को जर
इच्छा नहीं थी। लेकिन अपनी राय लिखते समय पुलिस के
परामर्श कर लिया था। वह न्याय बच्चों के खेल के जैसा
था। मध्ययुग में यूरोप में 'जोन-डि-आर्क' इत्यादि का जिस प्र
विचार किया गया था उससे भारत के देश-प्रेमियों के प्रति अ
शासन के न्याय की तुलना आसानी से की जा सकती है।

सजा पा नवीन को कटक जेल ले जाया गया। जेल के फ
के सामने खड़े हो नवीन ने एक बार बाहर की दुनिया से बिद

लिये चारो ओर गौर से देखा। सामने एक साइकिल मरम्मत दुकान थी वहाँ एक आदमी साइकिल में हवा भर रहा था। एक तन बसन भिखारी दुकानदार के सामने हाथ पसार कर अति भाव से भीख मांग रहा है। इसी समय प्रकाश के नायकत्व में विराट जुलूस निकला और उसी राह से गुजर रहा--हात्मा की जय" के साथ "नवीन की जय" भी जोड़ दी। वीर सैनिक की भाँति प्रकाश आगे आगे चल रहे थे। उसके की गति ने विचित्र शौर्य था। यह दृश्य देखकर नवीन एक ट तक आपा सा खो दिया। इन सबसे बिदा लेने में नवीन दिल करुणापूर्ण हो गया। एक साल के लिए सबसे अलग हो था।

जेलका फाटक खुला मानों कोई असुर जीवन्त मानवों को में डालकर निगल रहा हो। नवीन बाहर की दुनिया से अलग गया।

✣

जेल के नियमों के अनुसार नवीन और उसके समान नये ये हुए और ४० कैदी अलग रखे गये। शाम के समय जब द्वार ताला पड़ गया तब नवीन की चिन्ता कारा-जीवन की ओर। एक आधी जाँघ तक का जाँघिया, कमर तक झूलता बे-का कुरता, शायद बिलकुल सफेद हो जाने पर कैदी के जीवन छ स्वच्छ प्रभाव पड़े, इसलिये जेल के सभी कपड़ों म चार-अंगुल छोड़कर काले सूत की पंक्तियाँ बिनी हुई थीं। तिकोने की एक तख्ती पर कैदी का नम्बर, जो लोहे के तार से बाँध-

कर पीठ की ओर लटका दिया गया था। नवीन अपने को नये वे
देख कर जरा क्षुब्ध हुआ। थोड़ी देर मन में अवसाद आ
लेकिन यह सब एक क्षण के लिये था। उसका अन्तः
पुकार उठा—"यही तो है देश-प्रेम का पुरस्कार, यही तो है तुम
तपस्या, जिसके फलस्वरूप देश गुलामी से मुक्त होगा, भारत
सुखी होगी।"

खाने के लिये, पानी पीने के लिये तथा दैनन्दिन सारे
के लिये लोहे के दो तसले दिये गये थे; बिछाने के दो कम्बल
कुछ साल के बाद दूसरे कैदी एक-एक कर के आ नवीन के
घेर कर बैठ गये। उनके मन में उत्कण्ठित प्रश्न था कि कब
अंग्रेज जायेंगे और गाँधी राजा होंगे और सभी कैदी जेल
होंगे।" सभी ने सोचा—अपनी-अपनी बातें इस स्वराज्य बाबू
मालूम करा रखने से मुक्ति में सुविधा होगी।" एक कैदी आब
विभाग के कर्मचारियों की आँखों में किस प्रकार धूल झोंक
चार मास तक शराब बना कर बेचता रहा। इसलिये उसे
साल की जेलयात्रा मिली है। एक कैदी जाजपुर में डाका डा
पुलिसवालों को दो साल तक चकमा देता रहा। उसका वर्णन
लगा। तृतीय कैदी पिता के श्राद्ध में एक सौ रुपये खर्च करने
लिये जाति के आदमियों ने जोर दिया; फलस्वरूप एक रात
किसी ने एक पोटली धान उसके घर में रखकर पुलिस को
दे दी कि अमुक धान चुरा कर ले गया है। पुलिस के विरुद्ध
ने उसके पक्ष में साखी नहीं दी। उसे छः मास की जेल
सजा मिली।

अपनी-अपनी रामकहानी सब कैदी आ कर सुनाने
नवीन को विस्मय हुआ कि दो शराब बिक्री करनेवाले और
डकैत को छोड़ देने से बाकी सभी निर्दोष ग्रामवासी थे। नवी
कचहरी के प्रति घृणा थी। अतः उसे विश्वास था कि गरीब

ा कर जेल भेजते समय विचार का नाटक करना ही एकमात्र
लिस तथा कचहरी का काम है। नवीन ने सबको समझा कर
हा—स्वराज्य हो जाने पर किसी को बिना दोष के सजा नहीं
ल सकेगी।"

जाह्नवी देवी ने कहा था—'बहू, तू तो अपने मैके से बहुत-सी
तकें लाई है मुझे भी पढ़कर सुना, मैं पढ़ना जानती नहीं, तेरे
ख से ही कुछ धर्म-चर्चा सुनूँ।"

प्रतिभा पढ़ने की ओर उत्साहित हुई। जब कभी उपन्यास
र आधुनिक कविता पढ़कर प्रतिभा सुनाती, तो जाह्नवी मुख फेर
तीं। कहती—अरे, यह तो झूठी बातें हैं, झूठी बातें क्यों पढ़ती
बहू। इसमें राधाकृष्ण, सीताहरण, सावित्री-सत्यवान की कथा
हाँ है? कथाओं का पाठ आरम्भ हुआ। सावित्री की कथा के
द रामायण की कथा शुरू हुई। रामायण में राम-वनवास की
था सुनकर जाह्नवी देवी की माँ आँखों से पानी बह निकला।
मायण की कथा आरम्भ होते ही नवीन की याद उनके अन्तर
मरोड़ने लगी। "कब मेरा पुत्र वनवास से लौटेगा? कब मैं
सका भी मुख देखूँगी!"

उस गाँव के विद्यालय द्वारा अखबार मँगाया गया। प्रतिभा
ढ़ती और जाह्नवी देवी सुनती रहतीं। एक दिन प्रतिभा ने पढ़ा-
वीन ने कटक में स्वराज्याश्रम का भार ले लिया है। इससे तमाम
हर में एक नया उत्साह छा गया है। इसमें नवीन का संक्षिप्त
रिचय भी—'वह एक जमींदार का इकलौता लड़का है। बी० ए०
ास करने पर भी देश सेवा में यती होकर भिक्षान्न से गुजारा
रते हुए अपने जीवन को उसने देश की सेवा में ढाल दिया है।'
ीरव हो प्रतिभा उसी सम्वाद को बार-बार पढ़ती रही। प्रतिभा
ो चुप देखकर जाह्नवी देवी बोलीं—"पढ़ती क्यों नहीं?" प्रतिभा
े उस सम्वाद की ओर अँगुली से इशारा किया। अब जाह्नवी

को यह समझना बाकी नहीं रहा कि नवीन की कुछ ब
फिर वे बोलीं—"पढ़ो, मैं तो पढ़ना नहीं जानती।"

प्रतिभा नवीन का नाम छोड़कर सब पढ़ गई। जान्ह
दीर्घ निश्वास लेकर कुछ काल तक चुप बैठी रही। थोड़ी दे
आँसू आँखों से झरने लगा। "लड़का क्या खाता होगा, कह
होगा, वह क्या हम सबों को भूल गया है?" प्रतिभा ने अ
सास के सामने सम्भालने की बड़ी कोशिश की लेकिन उस
तरैयाँ भर आईं। जब उसने देखा कि आँखों में पानी उमड़
है, बाँध टूटनेवाला है तो जल्दी से उठकर अपने कमरे में
गई। सोचा—"मुझसे रूठकर क्या वे वैरागी बन गये ?"

देश-प्रेम और देश के लिये त्याग आदि का विषय उस
प्रतिभा के वैचारिक चिन्तन के बाहर की बात थी। आ
रहना, संसार में कीर्ति अर्जन करना तो प्रतिभा के समझ मे
था, यह सब महेन्द्र बाबू के लेखों को पढ़कर जानती थी।
जब उसे सास का अनूठा प्रेम मिला, तो मानों मरुभूमि से
कर शीतल स्रोतस्विनी के तट पर आ गई। परन्तु न
व्यवहार ने उसके दिल पर ठेस-सी लगा दिया था। उसको स
ही न आता था कि कौन-सी प्रेरणा नवीन को घर से बाह
ले गई ? वह सोचती—शायद मैं ही उनके घर-त्याग का
हूँ ? वह अपने को धिक्कारती थी लेकिन मन की कठोर
बढ़ती चली जा रही थी।

✤

महेन्द्र को डिप्टी मजिस्ट्रेट की नौकरी मिल गई। लेकिन देश के काम में योग न देने के कारण उसको लज्जा थी, जिसे दूर करने के लिए वह साहित्य-चर्चा में मन लगाने लगा। वह सोचता भीख माँगकर खाना और आश्रम में वास करना ही देश सेवा है ? और क्या दूसरे-दूसरे कार्य नहीं हैं ? इसी उड़िया साहित्य में बहुत काम है। बंगाल के बंकिमचन्द्र एक डिप्टी थे। वे अपना काम करते हुए भी साहित्य को उत्तम वस्तु प्रदान कर गये हैं। निष्ठा के साथ काम करने से साहित्य की वृद्धि भी होगी, कीर्ति भी मिलेगी। समाचार पत्र में जब कभी नवीन का नाम निकलता, कार्यक्रम निकलता, भाषण की सूचना होती—तो महेन्द्र नवीन की कीर्त्ति से आग बबूला हो जाता। वह सोचता नवीन मेरे साथ कालेज में पढ़ता था, वह आज एक नेता बन गया है। मैं क्या नौकर-गुलाम हूँ ? अगर मैं साहित्यिक बन जाऊँ, तो उससे अधिक कीर्ति पा सकता हूँ। मधु बाबू और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी से बढ़कर नाम नहीं पाया था पर जिन लोगों ने उन्हें सिर पर उठाया था उन्होंने उनको फेंक दिया। साहित्यिक की प्रतिष्ठा कभी भी कम नहीं हो सकती।

इस युक्ति ने महेन्द्र के मन को खूब उत्साहित किया। बड़े ही श्रम से उसने उत्कल साहित्य में लेख, समालोचनादि लिखना शुरू किया। महेन्द्र ने लेख लिखने के पहले सोचा कि जिन लोगों ने यह असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ किया है, मैं उनका उपहास करूँगा। उसकी जितनी विद्या-बुद्धि थी सब लगाकर उसने 'असहयोग' शीर्षक का एक विशाल लेख लिखा। वह 'उत्कल साहित्य' में तीन मास तक लगातार प्रकाशित होता रहा। उस लेख में असहयोग से क्या-क्या हानियाँ हैं और ये असहयोगी कैसे पथभ्रष्ट हो रहे हैं तथा देश का क्या-क्या अनिष्ट कर रहे हैं—इसका विवरण उपस्थित किया था।

ये सभी लेख प्रतिभा ने भी पढ़े थे। वह केवल
पढ़कर सन्तुष्ट नहीं हुई थी, उसने मासिक पत्र भी मँगाया
सास जिस विषय को पसन्द करती—प्रतिभा उसी को सुन
बाकी मौका पा वह खुद पढ़ लेती। 'असहयोग' लेख को
खूब मन लगाकर पढ़ा, इसलिए और कि उसको महेन्द्र ने लिखा
महेन्द्र ने उसके जीवन का अन्धकार दूर कर उसे आलोक
दिया था! अन्यथा वह मर्ख ही रह जाती।

विवाह के सम्बन्ध में महेन्द्र ने लेख लिखा था। प्रतिभा
याद नहीं--हिन्दू युवती को लेकर सास के सम्बन्ध में उन्होंने
लिखा था वह उसके लिए बिलकुल झूठ साबित हो गया था।
महेन्द्र बाबू हमेशा मासिक पत्र में लिखते हैं। ऐसा नवीन तो
लिखते नहीं। अतएव प्रतिभा के लिए वह लेख अति मूल्य
थे। उसकी धारणा होने लगी कि नवीन घर छोड़कर गये
लेकिन किसी उत्तम कार्य के लिए नहीं गये हैं। घर का
छोड़कर निम्न श्रेणी के बीच मनोभाव लेकर वे क्यों पड़े
अखबारों में नवीन की और असहयोग आन्दोलन की जो प्र
निकला करती है, वह कुछ भी नहीं है। महेन्द्र बाबू ने जो
लिखा है, वही सही है।

प्रतिभा ने समाचारपत्र में पढ़ा था कि महेन्द्र नवीन के
से पैर रख कर अन्दर चला गया, प्रतिभा को मालूम हो गय
वह यही महेन्द्र है। यदि वह उसके पति को एकदम तुच
समझते, तो एक आदमी के ऊपर से कैसे जाते?

इन सब चिन्ताओं के मन में आते ही नवीन के प्रति प्र
के मन में घृणा भाव-सा जमता था लेकिन मन में बाँधा
थी। 'मैं उनसे भला कैसे घृणा कर सकती हूँ, वे तो मेरे आज
साथी हैं।' प्रतिभा जिस हालत में थी उसमें ही वह अप
भाग्यवान समझती थी।

समाचार पत्र में नवीन को एक साल की सख्त कैद का समाचार बड़े-बड़े अक्षरों में छपा था। घर में वज्रपात-सा हुआ। जेल क्या है? कैसा है? वहाँ क्या होता है? आदि विषयों की ओर प्रतिभा और जान्हवी देवी की धारणा थी कि वहाँ चोर डाकुओं को घुसाकर खूब मार दी जाती है और कठोर-से-कठोर काम दिया जाता है। जान्हवी देवी अर्द्ध-मूर्छित-सी हो गईं। उस दिन चूल्हा नहीं जला।

बाहरवाले कमरे में बैठे-बैठे रामहरि बाबू ने सुना—नवीन को एक साल की जेल हुई है।

रामहरि बाबू उस अंचल के एक सम्माननीय व्यक्ति थे। २०-२५ गाँवों के आदमी उनके सामने एक शब्द उच्चारण करने को साहस नहीं करते थे। एक बार एक आदमी ने उनका अपमान किया था तब वे उसके पीछे पड़ गये। सैकड़ों रुपये खर्च कर उसे जेल भिजवाया था लेकिन आज उसी का पुत्र जेल में है, लोग भला क्या कहते होंगे? सिर ऊँचा करके वे रास्ते में चल सकेंगे क्या? ऐसी आशंका उनके मन में उठने लगी। सरकार के विरोध में पुत्र जेल गया है। इस घटना से क्या जमींदारी के ऊपर आँच आयेगी? ऐसा शक उनको भयभीत कर रहा था। इसी समय जान्हवी देवी द्वार की आड़ में आकर रोने लगीं।

रामहरि बाबू ने अपने मन के भाव को छिपाकर सान्त्वना देते हुए कहा—"ऐसा अधीर क्यों होती हो? जो होना था हो गया, भाग्य में जो लिखा होगा—होगा। माँ-बाप का कर्त्तव्य है जन्म देना, पढ़ाना, लिखाना; लेकिन कर्म तो उनके हाथ का लिखा हुआ नहीं है। भगवान सहायक हैं, जाओ, चुप होकर घर में बैठो।" जान्हवी देवी हिचकियां बँधी होने की वजह से बात नहीं कर पा रही थीं। रोते हुए बोलीं—"तुम जाकर लोगों से पूछते क्यों नहीं? छूट सकेगा? भले ही कितने रुपये खर्च क्यों न हों!"

रामहरि रुपये की बात सुनकर विचलित हुए। "यह सरक के घर की बात है। वहाँ भला रुपये-पैसे का क्या काम ? मैंने यह सोचा नहीं ! इससे कुछ भी नहीं होने का। भाग्य में होगा, वही होगा।" जान्हवी देवी विरक्त हो बोलीं--"समझते सब हो, रुपये जमा करने के सिवा तुमको और आता क्या है एकमात्र लड़का, वह आज किस हाल में है!" यह कह जान् देवी फिर रोने लगीं।

रामहरि का धैर्य जाता रहा, बोले--"अच्छा, तुम चुप र तुम जैसा कहती हो, कर देखें। मैं आज ही बाजपुर जाता हू वकील से परामर्श करके जो कुछ होगा, करूँगा। मैं रुपये ख से नहीं डरता, पुत्र के लिये मैं सब कुछ लुटा सकता हूँ; पर भाग्य बली होता है। मनुष्य सब सोचता है, करता है, लेकि फिर भी दैव तो है ही ?"

रात को रामहरि बाजपुर पहुँचे। बाजपुर में अक्षय कानूनन के बड़े विज्ञ समझे जाते थे। रामहरि ने उनसे सबेरे मुलाकात की। नमस्कार के बाद रामहरि ने कहा--"क्या क मेरा तो भाग्य ही खराब है ! मेरे ऐसे ग्रह पड़े हैं कि क्या कहूँ जमींदारी की वसूली भी अच्छी नहीं है, आप लोगों की ब मानकर पुत्र को पढ़ाया-लिखाया, तो वह जेल में है।"

अक्षय बाबू प्रसन्न हो बोले--"हाँ-हाँ, नवीन को तो आप पढ़ ही नहीं चाहते थे। मैंने जिद करके उसे पढ़ाने के लिए कहा थ देखा आपने--आज वह कितना बड़ा आदमी बन गया है।

"रामहरि बाबू, आप गाँव में जमींदार हैं, मान्य हैं; लेकि नवीन आज तमाम देश में पूजा जा रहा है, उसकी ख्याति तम देश में फैल गई है। मेरी तो कभी-कभी इच्छा होती है कि नौ छोड़कर इस सरकार के विरुद्ध हो जाऊँ। पर क्या करूँ ! इत बड़ा परिवार है कि बिना कुछ किये काम भी नहीं चलत

पके पास क्या नहीं है। नवीन ने वास्तव में ठीक काम या है।"

रामहरि ने अपने को समुद्र के बीच में-सा अनुभव किया। त जाने को वे अच्छा कार्य नहीं समझते। लेकिन आजीवन रामर्शदाता अक्षय बाबू के मत का अनादर भी वे नहीं कर पाते थे। रे-धीरे नीचे की ओर ताकते हुए पूछा--"जमींदारी पर कोई च तो नहीं आएगी?"

अक्षय बाबू ने मुस्कुरा कर कहा—"नहीं, वह कानून ही ल गया है। प्रथम १२४ धारा में सारी सम्पत्ति पर अधिकार की त थी; लेकिन आजकल वह बदल गई है।"

रामहरि बाबू के मुख-मण्डल पर परिवर्तन के लक्षण दिखलाई लगे।

अक्षय बाबू ने आगे कहा—"१९०५ में बङ्गाल में जैसा न्दोलन हुआ था वैसा ही यह आन्दोलन है पर नये आकार से ला है। उस समय क्या-क्या कांड हो गये थे। हम सब उस मय स्कूल में पढ़ते थे। मुझ पर शक करके २० बेंत लगे थे, किन यह अहिंसा आन्दोलन गांधी की खोपड़ी की उपज है। इतने बड़े-बड़े व्यक्तियों को जेल की सजा हुई है, चित्तरंजनदास लकत्ते में एक बड़े बैरिस्टर थे, ५० हजार रुपये उनकी आय । आज जेल में हैं। मोतीलाल नेहरू, लाला लाजपत राय, नके यहाँ बड़े राजा-महाराजा आश्रय-प्रार्थी होते थे—वे आज ल में हैं। जो हो रामहरि बाबू, आपके लड़के ने उत्कल का म रख लिया है।" रामहरि बाबू जाने की तैयारी में थे। उठते ए बोले—"आज ही चला जाऊंगा।" अक्षय बाबू को अन्य

मुवक्किलों के साथ बातचीत करते देख रामहरि बाबू ने रास्ता लिया।

❖

बाजपुर से लौटने के बाद रामहरि का मेघाच्छन्न साफ हो गया था। अब नवीन के जेल जाने से अपने को मानित नहीं समझते, जमींदारी जाने का डर था। लेकिन तो उस पर भी आँच नहीं आयेगी, अब वह चिन्ता भी अक्षय बाबू से जो कुछ सुना था जान्हवी देवी के सामने उसे चढ़ाकर कहा—लड़का जेल गया है तो उससे क्या हानि कितने बड़े-बड़े आदमी जेल गये हैं। क्या वह चोरी करके गया है? भगवान की कृपा से महात्मा गांधी की जीत होगी फिर देखना नवीन के द्वारा क्या होता है! चारों तरफ न का नाम हो गया—सभी उसकी प्रशंसा करते हैं। २० व जमींदारी करते हुए मुझे इतना नाम नहीं मिला है। इतने के अन्दर नवीन ने मुझ से दस-गुना नाम कमाया है। रोना प बन्द करके देखो—क्या होता है। भगवान हमारा अहित नहीं करेंगे।"

इधर प्रतिभा नाना प्रकार की बातें सोच रही थी। प्रकार तूफान में पुराने पेड़ लुढ़क जाते हैं, उसी प्रकार उसके म नवीन के प्रति जो अभिमान था वह घुल गया। उसने मै रहते समय अपनी सहचरी से जेल की खबरें सुनी थीं—चोर धान काटने के कारण एक आदमी को ५ मास की जेल हुई थी जेल में कोल्हू चलाया करता था, घास कूटता था, चक्की चलाता

मार खा-खाकर उसकी पीठ में लाल-लाल दाग पड़ गये थे। वह घटना उसको याद आ गई। उसने सोचा—"उसी जेल में नवीन भी है?"

नवीन ने हाकिम के सामने कोर्ट में जो बयान दिया था, समाचारपत्र में उसने पढ़ा, वह उसके हृदय को स्पर्श कर गया। वे तो चोर की तरह पकड़-बँधकर जेल नहीं गये और भी देश के बड़े-बड़े आदमी जेल गये हैं। यह मैंने समाचारपत्रों में पढ़ा है। ये क्या विपथ-गामी हैं? क्या सबके घर में अशान्ति है? अवश्य उन सबने एक बड़े महत्व को लेकर यह पथ पकड़ा है।

अगर यही है तो फिर महेन्द्र इतना बड़ा आदमी होकर क्यों इसका विरोध करता है? उस दिन समाचार-पत्र में उसकी जो आलोचना की गई थी, क्या ठीक है? सभी विषय सोचकर किसी एक सिद्धान्त पर आने का अवसर भावोच्छ्वास नहीं दे रहा था। उसने सोचा—मेरे स्वामी जेल में कितनी तकलीफ भोगते होंगे। पैर में बेड़ियाँ होंगी, बैल की तरह सिपाही पीछे से मारते हुए हाँककर कोल्हू में चलाते होंगे, हाथ-पैर सब फट गये होंगे। वे मन मारकर, आँखें मूँदकर सब सह लेते होंगे। ऐसा कितने दिन सहेंगे? एक वर्ष! ३६५ दिन!!

आगे प्रतिभा की चिन्ता काम न कर सकी। मुँह के बल बिछौने पर लेटे-लेटे उसके मन में नाना चिन्ताएँ उठतीं, बढ़तीं। इस चिन्ता से प्रतिभा के प्राण सूख गये। जीवन बेकार-सा लगने लगा। पढ़ने में मन न लगता, दिन भर गुम-सुम बैठी रहती। बहुधा बिछौने पर पड़ी रहती। बीच-बीच में व्याकुल हो अश्रु-विसर्जन करती रहती।

२-३ दिन खुद व्यस्त रहने के कारण जाह्नवी देवी पुत्र-वधू का दुःख नहीं देख सकीं। किन्तु जब वह खुद सँभलीं, तो बहू की व्याकुलता को समझने में उन्हें देर न लगी। उसके मन के एक

छिपे भाग से आनन्द की छाया झाँकने-सी लगी। उसने देखा दिनों-दिन बहू की दशा खराब हो रही है। बहू ने सोने की चूड़ि उतार कर घर में रख दी हैं और उनके स्थान पर काँच की चूड़ि पहन ली है। वेश-भूषा में जो सरलता पहले थी, वह अब नहीं जान्हवी देवी यह दशा न देख सकीं। सान्त्वना देते हुए बोलीं- "जेल जाने में कोई भय नहीं है, बड़े-बड़े आदमी जेल गये हैं। गां एक महात्मा हैं, उन्हीं की बातों पर पृथ्वी उलट-पुलट रही है कल की भाँति वर्ष भी बीत जायगा। मेरा नवीन देश का रा होकर लौटेगा।"

✤

तेल लगा कर रामहरि स्नान करने जा रहे थे। उसी स प्रकाश ने आकर कहा--'नमस्कार!'

तेल लगाते समय नमस्कार करना शास्त्र-निषिद्ध बात है अतः रामहरि ने कुछ विरक्ति-सी प्रकट की। लेकिन बाद में प्रकाश के मुख की ओर अच्छी तरह से देखा तो मालूम हुआ यह गांधी-दल का कोई बड़ा आदमी है। उसके साथ कैसा व्यवह करना होगा--आसानी से किस प्रकार विदा देनी होगी, अ बातों पर रामहरि का मस्तिष्क विचार करने लगा। प्रकाश सम्मान के साथ आसन देकर पूछा--'कहाँ से आ रहे हैं?'

प्रकाश ने गम्भीर-भाव से कहा--'मैं आश्रम से आया हूँ अ यहाँ कुछ दिन रहूँगा।'

सावधान होकर रामहरि ने कहा—'बहुत अच्छी बात है, रहिए, तो आपका घर है, मेरे अहो भाग्य हैं कि आप मेरे घर पधारे। आपने तो नवीन को देखा होगा, आश्रम में कैसा है ?'

प्रकाश ने हँसकर कहा—कटक जेल में हैं और मजे में हैं।'

लम्बी साँस छोड़कर रामहरि बाबू दुःख का बहाना दिखाते-से ले—"इस अञ्चल के आदमियों ने तो उसकी बातें ही नहीं सुनीं; तः लाचार होकर वह कटक चला गया। महाशय, जाइए हाथ-र धोइए। मैं नित्यकर्म कर लेता हूँ।" यह कह रामहरि चले ये। प्रकाश हाथ-पैर धोने लगा।

जब प्रकाश रामहरि के साथ बातचीत कर रहे थे, उसी समय क नौकर ने जाकर जान्हवी देवी से कहा कि नवीन बाबू के पास एक सज्जन आये हैं। जान्हवी देवी ने किवाड़ की ओट से मुख ड़ाकर प्रकाश को देखा ? रामहरि ने जब यह कहा कि, "इस ञ्चल के लोगों ने नवीन की बातें नहीं मानी; इसलिए वह टक चला गया है। अच्छा ही हुआ है," तो यह सुनकर जान्हवी वी की देह में आग-सी लग गई। प्रतिभा भी खिड़की से प्रकाश ी ओर ताकती हुई सभी बातें सुन रही थी। रामहरि ने नवीन घर छोड़ने का जो कारण बताया उससे प्रतिभा को सन्तोष-सा आ। साथ-ही-साथ उसने सोचा—"अनुकूल वातावरण होने पर टक में नवीन जो करते हैं यहाँ भी कर सकते थे। कटक में ऐसा ा काम करते हैं जो घर करने की सुविधा नहीं होती ?" अधिक ातें सुनने में नहीं आईं। इससे प्रतिभा को मन में आया कि काश के साथ बातचीत करके खुद सारी बातें पूछती! लेकिन च्छा के प्रादुर्भूत होते ही उस पर लाज का पर्दा पड़ गया।

रामहरि स्नानादि से निवृत्त होकर निकले ही थे कि प्रकाश फिर उनके पास आये। और धीरे-धीरे बोले—"क्या मैं नवीन की त्नी से मिल सकता हूँ ?"

यह प्रश्न रामहरि को असंगत, अप्रासंगिक और असम्भ
लगा, कुछ सोच न पाय कि क्या उत्तर दें। बोले--"व
इतनी पढ़ी-लिखी नहीं है, नई है, दुनिया की खबर उसे मालू
नहीं है।"

लेकिन प्रकाश ने हँसते हुए कहा—"उससे कुछ भी
बिगड़ता। मेरे मत से नवीन जिस पथ का पथिक है, उसकी स्त्र
उसी पथ का पथिक होना चाहिए। पढ़ा-अनपढ़ा स्त्रा हो या
जो इच्छा करेगा वही इस पथ का पथिक हा सकता है।"

रामहरि बड़े असमंजस में पड़े, उपस्थित बुद्धि खर्च
उन्होंने कहा—"मुझे कुछ भी आपत्ति नहीं, लेकिन उसकी सा
राय लेना जरूरी है। कारण, वह जरा पुराने ख्यालात की अ
है। मानेगी कि नहीं, मालूम नहीं।"

प्रकाश उत्साहित हो बोला—"पूछ लीजिए। मैं तो उनके
के समान हूँ, नवीन की स्त्री मेरी बहिन के समान है। मैं दोन
साथ बातचीत करूँगा। आप जाइए, पूछिए।"

रामहरि के पास और कोई उपाय बहाने के लिए नहीं रह
अनिच्छा के बावजूद भी भीतर गये। बरामदे में धीरे से बैठ
बोले—"बोल, अब क्या कहती है? सब तो सुना है। न ज
कौन कहाँ से आकर बहू के साथ मुलाकात करने के
कहता है।"

रामहरि ने मन में सोचा था, ऐसी बातें सुनकर जान्हवी
के साथ मुलाकात करने से मना कर देगी, तो सास की बात जा
प्रकाश से कह देंगे। लेकिन जान्हवी देवी चुपचाप कुछ देर
सोचती रही, धीरे-धीरे कहा—"अगर बातचीत करने की उ
इच्छा है, करे। मैं और बहू कपाट के पास द्वार पर बैठेंगी।"

रामहरि मन-ही-मन विरक्त हुए। प्रकाश के पास जा
मुख-भावों को सँभाल कर बोले—"वे तो राजी ही नहीं

ही थीं, मुश्किल से राजी कराया, आप इस द्वार के पास आइए, दोनों भीतर वहीं द्वार के पास बैठकर, बातचीत करेंगी।"

कुछ काल संकोच के साथ धीरे-धीरे बातचीत होती रही। फिर संकोच भी हट गया। जान्हवी देवी के मुख से प्रश्नों की झड़ी लग गई—साथ में कपड़े-लत्ते तो नहीं लिया है, चलता किस प्रकार है? क्या खाता है? सबेरे कलेवा क्या करता है? साग-सब्जी क्या-क्या बनती है? कपड़े धोने के लिए चाकर हैं तो? आदि-आदि नाना प्रश्न जादू की पेटारी से जैसे बेमौसमी आम निकलते हैं, निकलने लगे। प्रकाश उन सभी प्रश्नों को एक ओर छोड़कर प्रेम से बातें करने लगा। इसके फलस्वरूप जान्हवी देवी का मातृ-हृदय पिघल गया और धीरे-धीरे प्रकाश की ओर खिंची। प्रतिभा के साथ बातचीत करने का मौका नहीं मिला। एक-दूसरे की आकृति देखने का सौभाग्य नहीं मिल रहा था। शेष में प्रकाश ने कहा—माँ, तुम्हारा लड़का हूँ। नवीन जैसा है, मैं भी हूँ। हम दोनों दोस्त हैं। माँ और पुत्र क्या इसी प्रकार बातें करते हैं। माँ! मैं तो यहाँ आया रहने के लिए, नवीन के जेल से आने तक मैं यही रहूँगा। मैं तो घर के बच्चे की तरह रहूँगा—ऐसा सोचकर आया हूँ।" जान्हवी देवी के मन में अब आशा का सञ्चार हुआ कि नवीन जेल से आएगा, तो उन्होंने व्यग्र हो पूछा—"जेल से मुक्त हो सीधे घर आयेगा तो!"

प्रकाश ने दृढ़ता के साथ कहा—"निश्चय आयेगा। मैं उसे लेकर आऊँगा। बाद में हम दोनों एक साथ रह सकेंगे कि नहीं—कह नहीं सकता। लेकिन वह घर निश्चय आयेगा।"

जान्हवी ने दीर्घ निश्वास छोड़ते हुए कहा—"भगवान उसे लायेंगे तो!" उनकी आँखों से अश्रुधारा बह चली।

इसी समय प्रकाश उठकर जान्हवी देवी के निकट जा बैठा। और पहले की भाँति उसने बातें शुरू कीं। जान्हवी देवी का पर्दा

हट गया, उसे मालूम भी नहीं हुआ। वे निःसंकोच ब
करती रहीं। जान्हवी ने कहा--"बिना किसी को कुछ कहे
को उठकर चला गया।" ऐसा कहने से उनके हृदय का
शान्त-सा हो रहा था। प्रकाश की सहानुभूति उनको अ
उत्साहित कर रही थी।

बातचीत के उपरान्त जान्हवी देवी ने प्रेमपूर्वक क
"बेटा! तुम्हारा घर कहाँ है?" प्रकाश ने हँसकर क
"माँ! मेरे घर नहीं है। जहाँ रहता हूँ, वहीं मेरा घर है। मेरे
है न द्वार, माँ-बाप भी नहीं, बन्धु-बान्धव भी नहीं हैं, को
है, इसीलिए तो मैं तुमको माँ कहता हूँ!"

जान्हवी देवी स्नेह जताते हुए बोलीं--"बेटा! तुम
रहो। नवीन के आ जाने पर फिर तेरी जहाँ इच्छा होगी ज
वह जिस दिन जेल से छूटे उसे तू सीधे यहाँ ले आना।"

इसके बाद प्रकाश अपने नित्यकर्म के लिए उठ
बाद में सारी बातें होंगी, ऐसी आशा भी जान्हवी दे
दे गया।

जान्हवी देवी के साथ बातचीत करते समय प्रतिभा ब
से प्रकाश की ओर देख रही थी। बीच-बीच में बातचीत की
उसका मन अवश्य जाता था। लेकिन प्रायः वह अन्यमनस्क
जब यह सुना कि नवीन जेल से मुक्त होकर आयेगा, तो उसके
के रोम-रोम में एक सिहरन-सी भर गई। अनेक प्रकार की
नाएँ प्रतिभा को अपना नृत्य दिखलाकर चली गईं। "अ
मुझ से बातें करेंगे तो? ऐसे कौन-से मेरे व्यवहार पर वह
के लिए बाध्य होंगे? अगर मुझ से बातें न करेंगे, तो यह
ही व्यर्थ है।"

रामहरि भी दूर से इनकी बातें सुन रहे थे। उन्होंने
सुना कि नवीन के आने तक वह यहाँ रहेगा, तो वे एक प्र

असमंजस में पड़ गये। उनको ऐसा लगा मानो प्रकाश के रहने से नवीन के मन में एक और शक बैठगा।

✣

रामहरि दोपहर और रात को भोजन करते समय बड़े प्रेम से पत्नी के साथ बातें करते।

पानी जिस प्रकार गरम होते समय कुछ काल गम्भीर रहता है, बाद में खौलने लगता है उसी प्रकार एक दिन रामहरि भोजन के समय गला साफ करके कहने लगे--"आज से एक मास होता है, मैंने मुख नहीं खोला है। देखता था पानी बहकर जाता किधर को है। किन्तु अब बिना मुख खोले काम नहीं चलता है।"

इतना कहकर उत्तर की अपेक्षा में चुप हो गये। उनका ख्याल था कि उनको बातें सुनने के लिए कहीं-न-कहीं आड़ में जान्हवी देवी खड़ी होंगी। इसलिए बिना सम्बोधन के बातें शुरू की थीं। लेकिन वहाँ तो कोई था ही नहीं उत्तर कौन दे? किसी प्रकार का उत्तर न पाकर रसोइए से उत्तेजित होकर पूछा—"मालकिन कहाँ गई है रे?"

रसोइए ने डरते हुए कहा--"चौके में हैं।" रसोइए ने कहा--"वह बाबू खा रहे हैं। इसलिए वहीं बैठी बातें कर रही हैं।"

मारे क्रोध के रामहरि का मुख तमतमा उठा। अपने को सँभाल न सके, गर्जन करते हुए बोले--"क्या वह रसोई के चौके में खाता है? यह क्या धर्मशाला है? सब सत्यानाश किया, धर्म गया, कर्म गया।"

जान्हवी देवी घबड़ाई हुई दौड़ी आईं। खम्भे की ओट से बोलीं
"क्यों बावेला मचाते हो जी, हुआ क्या है?"

रामहरि उत्तेजित स्वर से बोले—"और क्या होता? ज
गई, पाँत गई, धर्म गया और अब आखिर में जमींदारी भी ज
वाली है। अब और क्या बाकी है? शास्त्र कहता है कि अ
कुलशील को बरामदे में भी नहीं बैठाना चाहिए। कहाँ बरामदा,
घर। वह तो दिन और रात घर में ही घुसा रहता है। न
दिन-रात क्यों फुसफुसाता रहता है? किसी दिन घर की अ
पर पुरुष के साथ ऐसे बातचीत करती थीं? क्या ऐसी राजनी
गुत्थियाँ सुलझाई जा रही हैं? वह तो यहाँ से जाकर भंगियो
बस्ती में घूमता है। एक भंगी के लड़के को लाकर उसने कु
पानी निकालने के लिए कहा—मैंने मना किया तो वह रु
उधर दल-के-दल आदमी उसके पास जाते हैं। वह उन्हें न
क्या मन्त्र देता है। एक रोज एक व्यक्ति ने मेरे सामने पैर
नीचे गिरकर लम्बा, साष्टांग प्रणाम किया। इसने उससे कह
क्यों पैर के नीचे गिरते हो? किसी के सामने सिर नहीं नत क
चाहिए। जैसे तुम एक आदमी हो दूसरे भी उसी तरह के आ
हैं। तुम्हारा सिर क्यों दूसरे के सामने झुक जाता है? ह
इलाके में भी एक संगठन हो रहा है, ऐसी खबर मुझे लगी है
किसी से कहूँ तो क्या! मेरे घर के लोग तो उसे बुलाकर अ
के साथ खिलाते-पिलाते हैं। कितनी पीढ़ियों का यह घर है
वही पुराना घर रह गया है न?"

जान्हवी देवी ने जोर देकर कहा—"ये सब क्या उलटी-स
बकते जाते हो? रसोई के पास खाने से क्या रसोई में छूत
गई? मुझसे क्यों नहीं पूछते कि वह अछूतों के साथ क्यों मि
है? हमारे इलाके में क्यों अशांति फैलाता है?" जान्हवी

ानती थी कि रामहरि प्रकाश के सामने कुछ भी नहीं कह सकते। सके सामने तो केवल हाँ भरते हैं।

रामहरि ने अपने को पराजित-सा अनुभव किया और फिर क नया रास्ता पकड़ा। "मुझे जो कुछ कहना होगा कहूँगा, पर म एक हरिजन रसोइया रखो, मन्दिर से ठाकुर को फेंक दो। सके बाद मैं सब जमींदारी प्रजा के नाम लिख दूँगा—बस, और या ?"

उनकी नाराजी सीमा लाँघ चुकी थी, भोजन की थाली छोड़ र वे जल्दी-जल्दी हाथ धोकर बाहर आ गये। परोसी थाली से ठ जाते और इस प्रकार स्वामी को क्रोधित देखकर जान्हवी देवी ीरव जहाँ-की-तहाँ खड़ी रह गईं। कुछ बोल भी न सकीं।

✣

धैर्य की भी एक सीमा होती है। अगर सीमा पार हो जाय, तो फिर खुद को भी सम्हालना कठिन हो जाता है। रामहरि के लिए स्थिति वास्तव में असह्य हो उठी थी। खजाना-वसूली का समय था। जिसने खजाना नहीं दिया वह प्यादे को देखकर लुकता है और अगर पकड़ा जाता है, तो उसका कर्तव्य है कि पुरानी रीति के अनुसार अनेक गालियाँ सुनने के बावजूद भी पैरों के नीचे पड़-पड़ कर सभी बातें सुन लेना, लेकिन आज एक व्यक्ति लम्बा हो पैरों के नीचे पड़ना तो दूर रहा, लम्बा सीधा खड़ा हो कहने

लगा—"घर में खाने के लिए तो दाना नहीं, खजाना
कहाँ से दूँ ?"

आज तक रामहरि के सामने खड़े होकर ऐसा कहने का
किसी ने नहीं किया था। "तेरी ऐसी हिम्मत, अरे कौन
लगाओ चाबुक !"

इतना सुनते ही एक प्यादा कहीं से आकर जिस प्रकार
बाघ शिकार पर कूद पड़ता है उसी प्रकार उस प्रजा पर थ
मुक्के जड़ने लगा। वह आदमी जोर से चीत्कार करने लग
"हाय मर गया ! मार डाला !" यह चीत्कार सुनकर प्रका
बाहर आकर उसे देखा और उसके पास खड़ा हो गया। वह आ
प्रकाश को नहीं पहचानता था लेकिन उस पर आँखें पड़ते ही
मानो नया बल मिल गया हो, चीत्कार बन्द कर के बोला—"
मुझमें ताकत नहीं कि मैं उलटे मार सकूँ, पर मैं हमेशा दुर्बल
रहूँगा। मेरे न रहने पर भी मेरे साथी, पुत्र, नाती जरूर एक
एक दिन उसका बदला लेंगे ही।"

"फिर बढ़-बढ़कर बातें करता है।" प्यादा फिर मारने ल
वह आदमी बेचारा बार-बार प्रकाश की ओर देखता था।
हरि ने लक्ष्य किया—यह प्रकाश की शिक्षा के प्रभाव में पड़
ऐसा कहता है।

आग बबूला हो गर्जन कर रामहरि ने कहा—"कौन तेरे
पीछे खड़े होते हैं देखूँगा। न जाने कहाँ के भिखमंगे आ
प्रजा को भड़काते हैं। देखूँगा कौन खड़ा होता है ? कौन हि
यत करता है ? चार साल का खजाना बाकी है उस पर बढ़
कर बातें करता है !"

मालिक की बातें सुन कर प्यादा दुगुने उत्साह से मार ल
में व्यस्त हो गया। बीच-बीच में वह आदमी कहता रहा—"म

तना मारता है।" वह आदमी मूर्छित हो कर नीचे गिर गया। ोंग दिखाता है?" यह कह प्यादा दाँत पीस कर उस आदमी उठाने लगा, लेकिन वह नहीं उठा।

रामहरि ने एक बार उस आदमी की ओर और एक बार ाश की ओर देखकर कहा—"आप यहाँ क्या करते हैं? यहाँ ींदारी का काम होता है, आप यहाँ खड़े होकर क्या देखते हैं?"

प्रकाश ने हँस कर कहा—"मैं खड़े-खड़े देखता हूँ कि मानव प्राणवायु कितनी जल्दी अपना रास्ता ले लेती है।"

रामहरि उत्तेजित होकर बोले—"आप यहाँ से जाइये! रा यह अञ्चल बहुत नेक था, आपने आकर इसे खराब कर है। आपकी भलमानसाहत मालूम हो गई, आप यहाँ से चले इये।"

प्रकाश ने नीरव पड़े हुए आदमी को ओर देखा। फिर प्यादे बैठे आदमियों की ओर देखा। वे कुछ बोल नहीं रहे थे, कन प्यादा अपने प्रति उनका तीव्र तिरस्कार का भाव लक्ष्य कर था। बैठे हुए आदमी सोच रहे थे कि "हमारा भी क्या कुछ व्य है?" रामहरि भययुक्त शंकित मन होने पर भी अपना बल ाने के लिए बाहर से वही तेजमय भाव व्यक्त कर रहे थे, ो कुछ घटना घटी ही नहीं। उन्होंने प्यादे से जोर से कहा— ो ले जाओ, पानी का छींटा देकर होश में लाओ और फिर ो। देखता हूँ कौन आता है बचाने के लिए।"

प्रकाश कुछ काल वहीं नीरव खड़ा रहा, फिर तेजमयी दृष्टि रामहरि की ओर देखा और फिर भीतर चला गया। सबके ने एक बाहरी अजनबी आदमी का बिना बाधा के अन्दर जाना हरि को भी बहुत खराब मालूम पड़ा। उसने समझा उपस्थित ता को इसकी कैफियत देनी होगी। उसने अपने मन में सब बल

संग्रह करके हँसते हुए कहा—"इस आदमी को कहीं खाना
मिला तो यहाँ आकर पड़ा है। मेरी पत्नी का धर्मपुत्र बना है
जून खाकर पड़ा रहता है।" बाद में गुमास्तों से कहा—"हि
देखकर खजाना लेकर सब को विदा कर दो।"

घर के भीतर ओसारी में बैठे प्रकाश और जान्हवी
आपस में बातें कर रहे थे कि रामहरि जाकर खड़े हो
जान्हवी देवी हड़बड़ा कर सिर का घूँघट खींचकर एक त
गईं। प्रकाश ने हँसते हुए रामहरि की मुखमुद्रा की ओर
रामहरि ने वैसे ही खड़े-खड़े कहा—"देखिये प्रकाश बाबू, अ
यहाँ बहुत दिन रखा—अब आप यहाँ से चले जाइये—
तो......।" इतना कहकर चुप हो गये और जान्हवी दे
मुख की ओर देख इस कथन की प्रतिक्रिया को लक्ष्य किया।

प्रकाश ने हँस कर कहा—"मेरा क्या है? मैं अभ
समय जाता हूँ। मुझे तो केवल माँ की अनुमति चाहिए
उनसे कह कर मुझे अनुमति दिलवा दीजिये, मैं चला जाऊ
इतना कह प्रकाश बाहर निकल गया।

जान्हवी देवी चिन्ताकुल भाव से नीचे की ओर ताकती
रामहरि ने कहा—"जमींदार का घर है, जमींदारी चल
लिए न जाने कितनी बातें समझनी-बूझनी पड़ती हैं।
आदमी का यहाँ रहना अच्छा नहीं है। और फिर मैं दे
कि अगर वह और कुछ दिन यहाँ रहेगा, तो मेरी जमींदारी
हो जायेगी। २० वर्ष तक परिश्रम कर मैं उसे एक रास्ते
सका हूँ, वह सब उजड़ जायेगा। तुम उसे कह दो कि वह
चला जाय। नवीन के आने पर फिर आयेगा। आते-जा
से अच्छा है, हमेशा यहीं पड़े रहना उचित नहीं।"

जान्हवी देवी कुछ काल तक नीरव रहीं। फिर बो
"नवीन के आने में और दो मास बाकी हैं। उसके आने

हीं रहे, फिर चला जायेगा। इसके साथ मेरा क्या वास्ता है? वीन के लिये मैं उसे पकड़े हुए हूँ। इसके चले आने से यदि वीन न आये तो?"

रामहरि ने व्यग्रता के साथ कहा—"नवीन नहीं आयेगा तो जायेगा कहाँ—? मैं उसे जाकर ले आऊँगा। जवान है—इसलिए उसका मन बहक गया है। सब दिन क्या वैसे ही रहेगा?"

जान्हवी देवी ने सिर हिलाकर कहा—"मेरा मन नहीं मानता, तुम नवीन को नहीं ला सकोगे। नवीन के आने तक प्रकाश दो मास यहीं रहे।"

रामहरि का धीरज जाता रहा। वे उठ खड़े हुए और क्रोध से लाल होकर बोले—"अच्छा मैं देखता हूँ कि वह कैसे यहाँ रहता है।" यह कह कर वे बाहर चले गये।

जान्हवी देवी व्यस्त हो प्रतिभा के कमरे में चली गईं। उसने देखा प्रतिभा बैठी सब सुन रही है। जान्हवी देवी बोलीं—क्या कहती है बहू! क्या वह चला जाय?

प्रतिभा निरुत्तर मौन थी। उत्तर की बिना अपेक्षा किये ही प्रतिभा को सुना कर जान्हवी देवी कहने लगीं—"प्रकाश जो कहता है मुझे भी कभी-कभी अच्छा नहीं लगता। वह कहता है, जमींदारी रखना ठीक नहीं है। गाँव के साथ ग्राम्य-जीवन यापन करना धर्म है। लोगों का उपकार करके उनमें ऐसा मिल जाय जिससे वे समझने लगें कि यह भी हम में से एक ही है। तभी उनकी सच्ची सेवा की जा सकेगी। वह कहता है—ठाकुरों की सेवा सेवा नहीं है लोक-सेवा करना ही सच्चा धर्म है। ये बातें मुझे अच्छी नहीं लगती हैं। दो पैसे हाथ में होने से तो दान-धर्म किया जा सकता है। किसी का उपकार किया जा सकता है। हाथ में पैसे न रहने से कौन किसका उपकार कर सकेगा? वह जो

भी कहे लेकिन उसके साथ बातें करने में शान्ति मिलती है
साथ तो ठीक पुत्र की तरह व्यवहार करता है। उसके र
हमारा भला क्या नुकसान हो सकता है? वे कहते हैं—यह
को भड़काता है। अगर मैं उसे मना कर दूँगी, तो वह
जायगा।"

सारी बातें प्रतिभा ने सुनीं लेकिन एक शब्द भी न ब
उसके चेहरे से भी कोई सूचना न मिली।

जान्हवी देवी ने नौकर से कहा—"जा, प्रकाश बाबू को
बुला तो ला।" फिर अपने-आप बातें करने लगीं—मेरा न
जल्दी घर लौट आये, एक युग बीत गया। सचमुच वह
लौटेगा भी! सचमुच क्या मैं उसका मुख देख सकूँगी।"

उधर प्रतिभा की आँखें छलछला आईं। वह वहाँ से उ
चली गई।

नौकर ने आकर कहा—"प्रकाश घर के भीतर नहीं आयें

✤

पुराने शास्त्रकारों ने एक स्वर से यह घोषणा की है कि
की अपेक्षा नारी की बुद्धि उत्तम होती है। इस ओर शास्त्रक
का कथन ठीक है परन्तु यह देखा जाता है कि प्रतिभा
समझने की शक्ति अपूर्व है। प्रकाश जब-जब जान्हवी देवी के स
बैठे-बैठे बातें करता, प्रतिभा वहीं पास बैठकर सब सुना करती। क
कभी बातचीत में भी शामिल होती। प्रकाश की हर बात

ोर करती और उसे आत्मसात करने की कोशिश करती। वह
ह समझ रही थी कि मेरे स्वामी जो चाहते थे, प्रकाश वही सब
ातें कहते हैं।

एक दिन बातचीत के सिलसिले में प्रकाश ने कहा—"माँ! ुम इतने बड़े पक्के घर में रहती हो, काम करने, सेवा करने के लिए नौकर-चाकर हैं। जो इच्छा होती है, खाती पीती हो, दिन-दिन अधिक धन बढ़े यही चिन्ता मन में रहती है; लेकिन तुम्हारे सी घर के आस-पास ऐसे आदमी हैं जिनको दो जून खाना नहीं मिलता, तन ढकने के लिए कपड़े नहीं मिलते। अभाव के वश ी माँ बेटी के प्रति स्नेह दिखला पाती, पुत्र माँ की सेवा करने का मय नहीं पाता। स्वामी पेट-चिन्ता के कारण विदेश में हता है, वह वर्ष में एक बार भी स्त्री का मुख देखने का ौभाग्य नहीं पाता।"

जान्हवी देवी—"जिसके भाग्य में जो बदा रहता है, भोगेगा ी; उसमें मनुष्य का क्या दोष?"—कह कर बात उड़ाने की चिन्ता में थी; लेकिन यह बात प्रतिभा के मन को खटकी। उसे पने माँ-बाप के घर की बातें याद आईं। उसने सोचा—आज ं बड़े घर की बहू बन कर आई हूँ और आनन्द से हूँ। माँ घर के ारे कार्य करके थक जाती होगी, उसकी सहायता करनेवाला कोई ी नहीं है। पिता-माता मेरे विवाह के बाद किस प्रकार सुख से हने का उपाय सोचा करते थे—"बिटिया अगर बुद्धिमान् होगी, ो क्या हम इसी प्रकार दुःख से जीवन बिताया करेंगे?"

पिता की पुरानी बातें याद करके उसे अपने ऊपर लज्जा और लानि हुई कि वह इस प्रकार ससुराल में सुख में है और माता-ता दुःख में अपना जीवन बिताया करते होंगे। मेरे विवाह के मय मेरा भाई सिद्धेश्वर साथ आया था। रामहरि ने उसके ाथ कैसा अपमानजनक व्यवहार किया था। राह खर्च के बिना

उसे बिदा कर दिया गया था। मुझे उसके साथ एक ब
बोलने का मौका नहीं दिया गया था। आदि-आदि नाना
की पिछली बातें उसको याद आ गईं। उसे उस समय
नहीं चुभी थीं। उसने सोचा था कि शायद विवाह के थ
दिन के बाद मायके से किसी का यहाँ आना ठीक नहीं
है। लेकिन आज वे बातें याद आईं और उसके मन में
अपमान और क्रोध का सञ्चार हो गया। मन-ही-मन
कहा—"गरीब आदमियों के प्रति बड़े आदमियों का
अनादर!"

एक दिन प्रकाश ने कहा था—"नारी-समाज को पुरुष-
ने घर की सम्पत्ति समझ कर चहारदीवारी के भीतर
कर रखा है। संसार के विषयों को समझना नारियों के
मुश्किल हो गया है। सम्पत्ति में लड़का तो अधिकारी है
लड़की अपने भाग्य को थाम बैठती है। विवाह होते ही
का मनोभाव होता है कि नारी उसकी एकमात्र सेवादार
विवाह के बाद स्वामी और स्त्री का सम्बन्ध रह जाता है—
बच्चे पैदा करना। मानो उसके जीवन में और कुछ है ही
इसका परिणाम यह होता है कि जितने आदमी हैं उनसे
बेकार हो जाते हैं और वे भरे बस्ते के समान घर के एक
में पड़े रहते हैं।"

जान्हवी देवी ने हँसते हुए कहा—"पुरुष और स्त्रि
तो विधि ने बनाया है आदमी थोड़े ही बनाता है।"
सोचने लगी—वास्तव में स्त्री-समाज के प्रति पुरुष की
नहीं है। जिस प्रकार हाट-बाजार से मवेशी खरीद कर
जाते हैं और गोसार में बाँध दिये जाते हैं उसी प्रकार
के नाम से कन्याओं को लाकर घर के अन्दर बन्द कर दिया
है। उसमें स्नेहबन्धन बिलकुल नहीं है। उसे उस रात की

याद आ गई, जब कि वह स्वामी के पास मानो कृपाप्रार्थिनी होकर गई थी। दरखास्त पर विचारपति जैसे विचार करता है मानो वैसे ही उन्होंने दरखास्त नामंजूर कर दी। इतनी अवज्ञा! लेकिन उसका मूल कारण है नारी को अपनी मान-मर्यादा और महत्व का ज्ञान नहीं है। अगर मैं अपना महत्व समझती होती, तो मेरे स्वामी मेरी अवज्ञा न कर खातिर करते। यह गाँठ उसके मन में रह गई।

एक दिन अधीर होकर जान्हवी ने जब नवीन के कारावास के सम्बन्ध में खोद-खोद कर प्रकाश से पूछा तो उसने कहा--"वह है विप्लव! इसका अर्थ यह होता है कि इसके कारण मनुष्य, मनुष्य के ऊपर अत्याचार नहीं कर सकता। सभी एक-दूसरे के साथ अपने सगे भाई-सा बर्ताव करेंगे। सहायता देंगे, तभी यह दुनिया स्वर्ग में परिणत होगी। कलियुग के स्थान पर सतयुग आयेगा। इसलिए अनेक को विप्लवी बनकर निकलने की जरूरत है। खाना मिलेगा कि नहीं, रहने के लिये स्थान मिलेगा कि नहीं, लोग अच्छा कहेंगे कि बुरा, नीचे गिरेगा कि ऊँचे उठेगा, प्राण जायेंगे कि रहेंगे--आदि बातों पर बिना विचारे विप्लवी को अपने काम में लग जाना चाहिए। जहाँ कहीं अत्याचार होता हो, वहाँ जाकर अत्याचार-पीड़ितों की सेवा करना, सहायता करना, अत्याचार के विरुद्ध उन्हें खड़ा करना और खुद खड़े हो जाना, यही है उसका प्रधान काम। नवीन ने सोच-समझकर ही इस काम में योग दिया है। वह जेलखाना या फाँसी की भी परवाह नहीं करेगा। दुःख तभी बड़ा बनता है जब आदमी उसकी परवाह करता है। अगर दुःख की परवाह न की जाय, तो दुःख खुद लज्जित हो जाता है। इसलिए नवीन को कुछ भी दुःख नहीं है, वह खूब खुश है, आनन्दमग्न है।"

प्रतिभा मन-ही-मन सोचती थी कि "मैं अपने जीवन को भी इसी प्रकार फेंक सकती हूँ कि नहीं?" उसके मन में प्रश्न उठा—

"तुम जैसी युवती इस संसार में अपने-आप की रक्षा दुष
हाथ से कर सकेगी तो!" इस भावना के मन में उठते ही प्र
जरा शंकित हुई। लेकिन हिम्मत कर के सोचने लगी—
तो मेरा है, अगर मैं उसे खोने का संकल्प कर लूँगी, तो मेरा
क्या कर सकता है! रावण तो इतना बड़ा बली था लेकिन
सीता का सम्मान नष्ट नहीं कर सका। अगर सीता का स
नष्ट करने का उद्योग करता तो या तो खुद ही भस्म हो ज
अन्यथा सीता जीवित न रहतीं।

आरम्भ में महेन्द्र के लेख पढ़कर उसकी जो चिन्ता
पर्वत गुफा को भेदकर फूट कर निकली थी, वही आज चारों
फैलकर गङ्गा का आकार धारण कर चुकी थी। जिस प्र
छोटी-छोटी नदियाँ बड़ी नदी में मिलकर अपने उत्पत्ति-स्थल
भूल जाती हैं, वैसे ही प्रतिभा महेन्द्र को भूल चुकी थी। मा
पत्रिका पढ़ना बन्द हो चुका था। कारण उसमें ऐसे अनेक
निकले थे जो उसको अच्छे नहीं लगे। विशेषतः महेन्द्र के अ
लेखों के प्रति उसे घृणा हो गई थी। प्रतिभा ने समझ लिया
कि महेन्द्र अति लोभी आदमी है, वह दुनिया का मंगल
चाहता है।

इस प्रकार के चिन्तन द्वारा महेन्द्र को प्रतिभा ने मन से
दिया। प्रकाश के प्रति रामहरि की विरक्ति भी प्रतिभा के मन
विचलित नहीं कर रही थी। वह आत्मचिन्ता में ऐसी लिप्त
कि प्रकाश के जाने और रहने में लाभ-हानि की चिन्ता करने
भी फुरसत उसे नहीं थी। वह विप्लवी कल्पना में इतनी
रहती थी कि प्रकाश भी अपना प्रभाव उसपर न डाल सका।
भी उसकी इच्छा थी कि अच्छा ही होता यदि प्रकाश यहाँ
कुछ दिन रह जाता।

✤

रामहरि घर से निकले और उन्होंने अविलम्ब थाने को खबर भेज दी कि 'एक बाहर का कोई अजनवी आदमी आकर सरकार-विरोधी बातें कहकर लोगों को भड़काता है, अतएव उसके परिणाम-स्वरूप बहुत जल्दी झगड़ा-फिसाद होने की सम्भावना है।' इस खबर के साथ ही थानेदार को जल्दी चले आने के लिए निमन्त्रण भी दे दिया।

इधर प्रकाश से बोले—"प्रकाश, अगर तुम अभी, इसी वक्त चले न जाओगे, तो तुमको पुलिस के द्वारा गिरफ्तार करवा दूँगा।"

प्रकाश ने हँसकर कहा—"क्या मैं पुलिस से डरता हूँ?"

रामहरि कुछ काल चुप रहे और तब अन्दर चले गये। मारे क्रोध के रामहरि जोर से जान्हवी से बोले—"उस आदमी से कह दो कि चला जाय, अन्यथा अभी थोड़ी देर में पुलिस आकर उसे पकड़ कर जेल भेज देगी। फिर मेरा दोष मत देना।" यह कहकर रामहरि बाहर चले गये।

जान्हवी देवी बैठी प्रतिभा से बातें कर रही थीं। दोनों ने विस्मित हो एक-दूसरे को देखा। मानो आपस में यह विचार-विमर्श किया--"अब क्या किया जा सकता है?"

प्रतिभा धीरे से बोली--"चले जाना ही अच्छा है। हमारे घर में रहकर वे क्यों भला अपमानित हों!"

जान्हवी देवी भी एक दीर्घ निःश्वास छोड़कर जमीन पर लकीरें खींचते हुए गुनगुनाते हुए बोलीं—"चले जाने से मुझे हानि नहीं, मैं तो नवीन के लिए उसे अटकाये हुए थी।" फिर नौकर को बुलाकर कहा—"प्रकाश को जाकर कह दे कि वह चला जाये।"

नौकर के द्वारा यह खबर पाकर प्रकाश अपना सामान लेकर उसी समय चला गया।

रामहरि कचहरी में चिन्ताकुल बैठे मुंशी से खजाने हिसाब समझ रहे थे। खजाने की रकम जालीदार सूत की में जमा कर रहे थे। इसी समय प्रकाश जाकर रामहरि के खड़ा हो गया। उसके मुख में न हँसी थी न दुःख। उसके होते ही सभी आदमी उसकी ओर देखने लगे। कुछ काल के खजाना देना बन्द हो गया। रामहरि भी जरा व्यस्त-से अपने शरीर को आसन से हिलाते हँसी का स्वांग भरते बोले—"जाते हैं। जाइये, कुछ मन में मत सोचियेगा। यह अञ्चल है अन्यथा......।"

प्रकाश न जनता की ओर अँगुली से इंगित करके कहा—"इ आप मूर्ख कहते हैं; इसलिए कि ये अपनी ताकत नहीं समझते। ये आपके वैभव को देखकर डर जाते हैं। पुलिस की लाल पगड़ भय खाते हैं। पुलिस का भय मन से चले जाने के बाद ये बुद्धिमान होंगे, इन्हीं को देश चालाक कहेगा और यही अ वैभव के रक्षक भी होंगे। मैं जाता हूँ, पर डर से नहीं। आपके घर से, माँ ने चले जाने के लिए कह दिया है, इसलि जाता हूँ। मेरी इच्छा है कि मैं हमेशा यहीं रहूँ, यह भविष्य निर्भर करता है। लेकिन प्रकटरूप से हो या अप्रकट, मैं यहाँ दुखी हृदय में हमेशा रहूँगा और आप भी मुझे हमेशा याद रहेंगे।" यह कह प्रकाश शीघ्रता के साथ वहाँ से चला गया

वहाँ जितने आदमी थे सभी ने एक उत्तेजना का अ किया। रामहरि ने खुद अन्तर से एक प्रकार के डर का अ किया। लेकिन लोगों को उनके भय की बात मालूम न हो अ सब सिर पर सवार हो जायेंगे, इसलिए बोले—"हाँ, काम करो, क्या देखते हो?" कितने ही ऐसे घूमा करते हैं, लोगों को भड़क उत्तेजित करते हैं और उनका सर्वनाश करते हैं। चला नहीं तो अभी पुलिस आकर उसे गिरफ्तार करती।"

लेकिन वहाँ जितने आदमी बैठे थे, सभी ने एक-दूसरे की ओर देखा--मानो आँखों के इशारे से गम्भीर मन्त्रणा शुरू की जा रही हो।

जब अनेक वाद्ययन्त्रों को एक सुर में बाँध दिया जाता है, तब एक को बजाने से जैसे सभी बाजों में से अपने-आप सुर निकलता है, उसी प्रकार जनता के दिल में भी समय आ जाने पर एक के हृदय की झंकार अपने-आप अन्य दिलों पर भी आघात करती है। इसके लिए किसी प्रचार या उत्तेजना फैलाने की जरूरत नहीं पड़ती। जो आदमी वहाँ बैठे थे आपस में फुसुर-फुसुर करने लगे। उनके दिलों में एक प्रकार की हलचल देखी गई। रामहरि ने क्रोधपूर्ण दृष्टि से उनकी ओर देखा और उच्च स्वर से बोले--"क्या हो रहा है? जल्दी-जल्दी काम खतम करो।"

उन्हीं के बीच से एक आदमी ने कुछ कहा, वह ध्वनि रामहरि के कानों में पड़ी। चीत्कार कर बोले--"क्या कहा? कौन बोल रहा है?"

एक बूढ़े ने हाथ जोड़कर कहा--"जी, हम आपकी प्रजा हैं, पुत्र के समान हैं। आप माँ-बाप के समान हैं। माता-पिता का कर्तव्य सन्तान का पालन-पोषण करना है, न कि जान से मार डालना?"

"क्या कहा—कौन किसको जान से मारे डालता है?" रामहरि की इस चीत्कार के साथ जनता का मिला हुआ स्वर निकला--"वह बिचारा मार खाकर मर रहा है, यह अन्याय है। ऐसा तो कभी देखा नहीं गया।" यह स्वर क्रमशः बढ़ चला।

सभी हो-हो करते चिल्लाकर उठ खड़े हुए। यह रामहरि की कल्पना से बाहर की बात थी कि जो अभी तक मक्खी के समान चुपचाप बैठे थे—एकाएक भनभना कर उठ खड़े हुए। रामहरि को हठात् खबर लगी कि जो आदमी मार से मर गया था, जिसको

जल्दी जला डालने के लिए उन्हें हुक्म दिया था, उसे जलाने के लिए
नहीं ले जाया गया। जिस पियादे ने उसे मारा था, वह कहीं भाग
गया था।

लोग रामहरि की कचहरी से उठे और वहाँ गये जहाँ
आदमी अर्धमृत पड़ा था। चार आदमियों ने उसे कन्धे पर उठा
लिया और बाकी उसे घेरकर खड़े हो गये। जुलूस बना कर उसे
लेकर वे चले गये।

भय और क्रोध दोनों ने ही रामहरि को कस लिया था। उन्हें
लगा--मानो विपद-समुद्र की लहरें सामने से उमड़ती चली आ
रही हों। उनके मन में आया--इस समय ऐसी हालत में प्रकाश
को घर से जाने देना उचित काम नहीं हुआ। दावाग्नि की
तरह यह बात, बात-बात में फैल गई कि रामहरि ने एक आदमी
को मार डाला है। जमींदारी भर में यह समाचार फैल गया
जिसके फलस्वरूप जमींदार के गुमास्तों को कोई एक बूँद पानी तक
नहीं देता था। थाने के मुंशी से लेकर पुलिस साहब तथा उच्च
अधिकारियों तक से मिल कर जो कुछ करना था, रामहरि ने
किया। मृत देह परीक्षार्थ जाजपुर डाक्टर खाने में जा चुकी थी,
लेकिन डाक्टर ने मत दिया—वात-कफ से आदमी की मृत्यु हुई है।
रामहरि के पैसे ने किसी भी सरकारी कर्मचारी में साधुता रहने
नहीं दी थी। फिर भी दरख्वास्त-पर-दरख्वास्त प्रजा भेज रही
थी। यह बात जानकर रामहरि ने प्रजा की एकता तोड़ने का
निश्चय किया।

उस समय थाने के मुंशी हमेशा रामहरि के घर में रहते थे।
अपने खर्चे से रामहरि ने ४-५ बन्दूकधारी पुलिसवालों को द्वार पर
खड़ा कर रखा था। रामहरि इतना डर गये थे कि घर से कहीं बाहर
नहीं निकलते थे। रात को घर से दूर जरा भी कुछ आवाज या शब्द
सुनाई पड़ता, तो झट बन्दूकधारी पुलिस सिपाही को भेजकर पता

लगाते कि क्या हो रहा है। खुद एक प्रजा को मरवा डालने के कारण उनको हमेशा विभीषिका का डर लगा रहता था कि कहीं कोई आकर मार न डाले !

इस हालत में जान्हवी देवी भी अति म्रियमाण हो गई थीं। तिभा नौकरों के द्वारा सारी बातें समझा करती थी, लेकिन नौकरों की सहानुभूति भी प्रजा के साथ थी, वे यह अनुभव करते थे कि ई मालकिन प्रजा के साथ हैं। कारण अनेक बार नौकरों के ागे प्रतिभा कहती थी कि—"गरीबों का जीवन जैसा बड़े आदमियों का भी वैसा ही है, गरीब होने से क्या उसके ीवन का मूल्य नहीं है?" उधर प्रजा ने यह भी सुना था कि वीन उनके ही मंगल के लिये जेल गये हैं और भीतर-बाहर यह बर फैल गई थी कि नवीन की पत्नी भी प्रजा के पक्ष में है। आगे ही तो जमींदारी के मालिक होंगे ! ये विचार प्रजा के मन को ौर अधिक उत्साहित कर रहे थे। नवीन का नाम ले कर सारी जा एक हो रही थी, यह बात भी रामहरि के कान में जा रही । लेकिन प्रतिभा के बारे में उनको किसी प्रकार का सन्देह नहीं । फिर भी एक दिन भोजन करते समय वे कह ही बैठे—"गाँव सब लफंगे कहते हैं कि हमारी बहू भी उनकी ही तरफ है।"

जान्हवी देवी ने हठात् कहा—"कौन कहता है? मेरी बहू सी के सामने भला मुख भी खोलती है?"

रामहरि ने सन्तोष जाहिर करते हुए कहा—"तो क्या मुझे लूम नहीं है? लेकिन इसी से समझो इन सबकी नीति।" ह कह कर वे हँसने लगे।

रामहरि के खाकर चले जाने के बाद प्रतिभा अपने कमरे से न्हवी देवी के पास गई। जान्हवी देवी बोलीं—'बाहरी दमी जिनके मुख में जो आता है बकते हैं। पुलिस अपने-आप को ठंडा कर देगी।"

प्रतिभा ने नीचे मुख करके दृढ़ स्वर से कहा—"लो
बोलते हैं, सत्य है। एक आदमी को मार-मार कर मार
गया, इससे आदमी क्या बिगड़ेंगे नहीं ? और अगर पुलिस
ऊपर अत्याचार करे तो फिर अन्याय की सीमा नहीं र
इसी को बन्द करने के लिए ही तो कितने आदमी जेल ग
जेल से लौटकर वे क्या कहेंगे ?"

जान्हवी देवी का मन हठात् नवीन को ओर गया। इस
माल को सुनकर तो वह घर लौटेगा ही नहीं, इस आशं
उनको घेर लिया। विह्वल हो बोलीं—"तू ने सत्य कहा
भगवान्! उसकी मुक्ति के समय यह कैसा गोलमाल हो
सचमुच वह नहीं आयेगा! ना-आ..।" उनको और कु
नहीं सूझा।

✣

सूर्य की किरणें विक्षिप्त होकर चारों ओर फैल ज
इसलिए उनकी उत्कटता का ह्रास हो जाता है। अन्यथा
के एक स्थान में एकीभूत होने से असहनीय हो जाता। व
ऊपर एकत्र किरणें आग का काम करती हैं। ठीक मन व
हालत है। उसे विक्षिप्त अवस्था में एक जगह केन्द्रीभूत
का उद्यम करने से मन में नाना प्रकार की उत्कट भावनाए
हैं, जिनको दूसरे समय सोचना भी असम्भव हो उठता है।
का मन बड़ी दुनिया से आकर कारागार में संकुचित बना
सी दुनिया में बाध्य हो विचरण करता है। इसलिए जो ल

भावनाएँ बड़ी दुनिया में दबी पड़ी रहती हैं, वही कारागार
में उत्कट रूप से जाग्रत हो अँगड़ाई लेती हैं। जो चोर है, वह
ल्प बुद्धि खर्च करके जेल में बड़ा हो उठता है। जो देश के लिए
ल गये हैं, वे अनुभव करते हैं कि कितनी छोटी-छोटी चीजों के
नए प्राण व्याकुल हो उठते हैं, कितने लुप्त भाव जाग उठते हैं।
वीन भी विस्मित था कि जो भाव मन में कभी आते न थे,
नका चिह्न तक न था, आज वही यहाँ प्रबल वेग से क्यों
ठते हैं!

वसन्त-ऋतु का आरम्भ था। कारागार के बीच में स्थित पेड़-
ौधे अपने को नूतन वेश में सजाकर निर्दय भाव से असहाय
न्दियों का उपहास कर रहे थे। पेड़ों की डालियों पर निवास
रनेवाले पक्षियों के जोड़े आपस में बातें करते 'चीं चीं' शब्द
अपनी भाषा म परस्पर बन्दियों के प्रति विद्रूप भाव दिखला-
र कहते थे—"तुम कैदी हो, हम मुक्त हैं!"

यह ऋतु ही ऐसी है, मनुष्य का जीवन नीरस होने पर भी
ह सरसता खोजता है। जब सौ-सौ वर्ष के पौराणिक कथाओं के
ढ़े भी तरुणी की खोज में व्याकुल होते हैं, तो ऐसी हालत में
वक नवीन के हृदय में भी प्रेम-पिपासा जागना स्वाभाविक था।
सन्त ऋतु युवक-युवतियों के मन में प्रेम और कामोद्दीपन जाग्रत
रता है। एकान्त में नवीन मन-ही-मन नीरव कल्पना किया
रता कि हमारे पास प्रेम के आदान-प्रदान का साधन तो है।
वाह के समय जब हाथ मिलाया था, उसी समय उसने एक
पूर्व भावसंचार का अनुभव किया था, वह उसको याद आता।
तने दिन प्रेम का अनादर कर वह घर में पड़ा था, वह भी उसे
द आता।

नवीन के मन में विरह की अतीव वेदना अनुभव होने लगी।
री के प्रति उसकी जो घृणा-भावना थी, विप्लव कल्पना में जो

स्मरनाशक की प्रतिमूर्ति है, वह सामने से दूर हट गई।
सोचा —"प्रतिभा का जो अनादर मैंने किया है, वह अनुचित है
बेचारी का भला क्या दोष है, न जाने कितनी आशा-तर
बीच में वह अपनी नौका खेकर लाई थी, मैंने उसे दूर ठेल
उसके मनमें कितनी चोट लगी होगी ? उसका सारा जीव
निश्वासमय हो गया होगा। आज मैं जिस प्रकार उसके
कातर हूँ, वह भी मेरे लिए वैसे ही व्याकुल होती होगी
समय उससे एक शब्द भी तो नहीं बोलकर आया, कितने
और सुहाग से वह मुझे बुलाने आई थी, नव-विवाहिता युव
लिए यह कम नहीं था। मैंने उसके भावोछ्वासों पर प
किया है—यह मूर्खता का काम हुआ। प्रेम से समझा क
काम चला सकता था। नवपल्लवित वृक्ष पर कुठाराघात
खण्ड-खण्ड करने के समान ही नवमुकुलित हृदय को मैंने छिन्न
कर दिया है। अगर प्रतिभा से मुलाकात होगी, तो मैं कि
से प्रथम बातचीत शुरू करूँगा ? क्या उसके साथ मुलाकात हो
क्या तमाम जीवन इसी प्रकार की भयानक यन्त्रणा सहता रह
जैसा देश के प्रति मेरा कर्तव्य है उसके प्रति भी वैसा ही है।
इस कर्तव्य को पालन करने से देश-कार्य में त्रुटि आयेगी ?
क्यों होगा ? कोशिश करने से मैं प्रतिभा को अपने पथ का
बना सकता था—ऐसी चेष्टा मैंने क्यों नहीं की ? इस
की ओर मेरा मन क्यों नहीं गया ?"

नवीन इसी प्रकार की चिन्ता, कल्पना में डूबता-उतराता र
इसी समय दो गौरैया आपस में खेलती, चीं-चीं करती नवी
सिर पर आ गिरीं, और उड़कर चली गईं। नवीन हँस
'मेरी हँसी करती हैं, मेरे मन की बात जान कर मेरी
करती हैं।'

नवीन ने सोचा, "जेल से मुक्त होते ही कुछ दिनों के लि
जाऊँगा। माता-पिता को समझाऊँगा कि मेरे कि जीवन की

बाधक न बनो। प्रतिभा से खुले दिल से क्षमा-प्रार्थना करूँगा, से अपनी सहधर्मिणी बनाऊँगा। मुझे विश्वास है कि वह मेरी बात ानकर आनन्द के साथ मेरा पदानुसरण करेगी। अगर वह मेरे ाथ आने के लिए तैयार हो जाय तब तो मैं और वह एक साथ हेंगे। सब जगह साथ-साथ जायेंगे। किन्तु यह भी तो हो सकता कि वह मुझ से बातचीत भी न करे! उस अपमान को मैं ह लूँगा, कारण वह मेरी भूल थी। वह अभिमान करके जीत ायेगी तो फिर खुश भी हो जायेगी। लेकिन मुझे मुक्ति कब लेगी? अभी तो और तीन मास बाकी हैं! नब्बे दिन!"

दीर्घ निश्वास के साथ नवीन के मन की चिन्ता खत्म हो यी। वसन्त उसे शान्ति नहीं पाने देता था। देश-विप्लव को बाने के लिए उस समय के शासक जो दमन-चक्र चलाते थे, उसके लस्वरूप लाखों व्यक्ति जेल में थे। किसी के घर में आग लग ई, पुलिस को शक हुआ और उस व्यक्ति को पकड़ने गई, दर्शक मा हो गये, उनको भी पकड़ लिया गया। अपराध! पुलिस ो मारने के लिये जमा हुए थे—हाकिम ने ६–६ मास की जेल । जमींदार या किसी राजा के शासन से प्रजा असन्तुष्ट हुई, जब ग सरकार के पास प्रार्थना करने गये तो रास्ते में पुलिस ने न पर गोली चलायी, लोग मरे—जो बचे उनको जेल मिली, र-द्वार लूट लिया गया। गाँव-गाँव के सभी पुरुष जेल भेज ये गये। किसी को दो, किसी को तीन साल की सजा हुई। ी प्रकार के विप्लव के हजारों बन्दी कटक जेल में बन्द थे।

अब नवीन चोर-डाकुओं के साथ नहीं था, वह राजनीतिक न्दियों के साथ था। जो बाद में आये थे उन लोगों ने पहले से ीन का नाम सुना था। और उसके साथ कारागार में रह कर नन्द अनुभव करते थे। नवीन उनसे ऐसा व्यवहार करता कि लोगों का साहस कम न हो। लेकिन कभी-कभी नवीन का

मन दब-सा जाता। सोचता—"इतना अत्याचार-अ
निरस्त्र निरीह लोगों को दबाने के लिए! घर जलाना, घ
लेना, गोली चलाना और फिर ऊपर से ज़ेल—कब त
चलेगा? मनुष्य की आशा के दीप न बुझने तक क्या ऐ
चलता रहेगा?" नवीन को ऐसी ही चिन्ताएँ मथे डा

उसने सोचा, "जेल से मुक्त होते ही मैं उन अत्याच
अंचलों में जाऊँगा और सबको साहस दूँगा। इसके फल
अगर मुझे फिर जेल आना होगा तो हो। आजीवन का
अच्छा है लेकिन अत्याचार के सामने कभी नतमस्तक नहीं
चाहिए।"

इस प्रकार की कल्पना जब मन में उठती, तो उसके ह
कोने से एक प्रकार की वेदना भी निकलती थी। सोचता
यह वसन्त का अभियान व्यर्थ हुआ? उसने जिस आशा क
पकड़ा था, क्या उसके धक्के को सँभालने की शक्ति मुझमें
कान लगाकर नवीन बड़े ध्यान से इस ध्वनि को सुना
दूसरी ओर का कर्तव्य-ज्ञान, चीत्कार करके पुकारता—'यह
है, दुर्बलता—उस पर पदाघात कर—पदाघात कर' इस प्र
भाव नवीन को अपने ओर खींच लाने की कोशिश करते र
नवीन अपने को किसी एक में स्थिर नहीं रख सकता था।

नवीन कभी-कभी सोचता—"प्रकाश तो कभी व्यस्त
चिन्तित नहीं देखा गया, कभी भी मैंने उसे सूखे मुख नहीं
उसके मन में, विचार में कभी द्विविधा परिलक्षित नहीं हु
भी क्या वैसा ही बन सकता हूँ?" इस प्रकार की चिन्ता न
प्रकाश की ओर खींच ले जाती। कभी-कभी बिना प्रसंग
प्रकाश के सम्बन्ध में बन्दियों के साथ बातें करता। सभी क
"उसे देखा है, बातचीत की है, घर में आग लगी थी, ध
करके घर जलता था, आदमी गिरफ्तार हो रहे थे, प्रक

मय घरवालों को सान्त्वना दे रहे थे। लोग उनकी बातें सुनकर पने-आपको भी भूल-से जाते थे। जिनका घर लूटा गया, जो ोली से मारे गये, उनके परिवार के आदमी प्रकाश की बातें ुनकर शांति पाते थे।"

ऐसी बातें सुन नवीन सोचता—"कितना महान् है प्रकाश! कतने ऊँचे विचार हैं। मैं क्या वैसा नहीं बन सकता! उसकी ही ाषा में मैं क्या "पावर हाउस" नहीं बन सकूँगा? मेरे हृदय से नकली बिजली क्या दुनिया में उजाला नहीं कर सकेगी?" प्रकाश ी बातें सोचकर, उसका मन दृढ़ होता—"घर की ममता छोड़नी ोगी, जीवन की सभी सरसताओं को तिलांजलि देना होगा।"

जेल की छोटी-छोटी चिन्ताएँ भी अत्युत्कट होती हैं। इसलिए नको रोकना नवीन की शक्ति से बाहर की बात हो जाती। जैसे-से जल से मुक्ति के दिन समीप आते, उतना ही नवीन के मन का द्वेग बढ़ता जाता। एक दिन रात के समय याद आया—अब जेल मुक्ति की मियाद १५ दिन रह गई है। उस समय उसका उद्वेग तना बढ़ गया कि वह सो न सका, उठकर बैठ गया। इधर-से-धर चहल-कदमी करने लगा। सवेरे उठते ही मन में आया—अरे भी तो लम्बे १४ दिन जेल से मुक्ति के बाकी हैं। ओह, इतने दिन से कटेंगे? चौदह के बाद तेरह, तेरह के बाद बारह और फिर ारह, इसी प्रकार जेल से मुक्ति का दिन आ पहुँचा।

उस दिन नवीन को घेर कर सभी बैठ गये। वह छोड़ कर ला जायगा, इसलिए सभी दुखित थे। कोई-कोई रोने भी लगा। क साथ ही एक ही अवस्था में रहने के कारण परस्पर इतनी ममता जाती है कि लोग यह भूल जाते ह कि इस यन्त्रणा से तो बेचारा क्त हुआ। उनको आनन्द नहीं मिलता। सभी का मन कहता—ा ही अच्छा हो कि नवीन न जाय! इसी प्रकार साथियों के ख की झनकार नवीन के हृदय के तारों को झनझना रही थी। ह खुद भी छोड़कर जाने में दुखित था।

नवीन सभी को सान्त्वना देता। सभी अपने-अपने प
के लिए अति व्यग्र थे। यह देख नवीन के मन में भी परिवा
बात जाग उठी। अपने विषय से मन को हटाकर दूसरों के
को सुनाता, सभी ओर देखकर चिन्ता करता—मेरे घर
कोई उपवासा नहीं रहता होगा ? नवीन ने सोचा—यह
पागल होकर इसके ऊपर पड़ी है। अनेकों के परिवार उपव
पड़े होंगे, हो सकता है कि अनेक अपने परिवार को देख
पायें, गृह-शून्य हो अनेक इधर-उधर घूमते रहेंगे। लेकिन
नाम संसार नहीं जानेगा। इतिहास में केवल सेनापति की
गाथा गाई जायेगी, उनका नाम न जाने किस खोह में जा प
किन्तु इन्हीं से त्याग, इन्हीं के पागलपन से विप्लव चिर
रहेगा।

नाना चिन्ताओं को भूलकर नवीन बिस्तर में जा सोया

एक सिपाही ने आकर लोहे के मोटे छड़वाला फाटक
दिया। नवीन मुस्कराता जेल के फाटक के बाहर आया। अने
से बाहर की दुनिया को देखने के लिए व्याकुल नवीन ने
ओर आँखें घुमाकर देखा। प्रकाश हँसता हुआ नवीन की ओर
आ रहा है। नवीन दौड़कर छाती से चिपक गया। भाव-प्र
वश उसकी आँखों की तरैयाँ भर आईं। नवीन की पीठ स
हुए प्रकाश ने कहा—"नवीन ! मैं तुम्हारी अपेक्षा में था, त
कितने मधुर और कटु सम्वाद दूँगा, चलो चलें।"

दोनों बातचीत करते आश्रम की ओर चले। नवीन
की सारी खबर जानने के लिए व्याकुल था। यह सारी दुनिय
नई मालूम दे रही थी। दीर्घ निद्रा के समय देखे गये स्व
बाद जब आँखें खुलती हैं, तो नई घटना की अनुभूति-सी
है। ठीक वैसा ही नवीन को लग रहा था। लेकिन दुनिया
अपनी गति पर चल रही थी। आँखों देखने लायक परिवर्तन
भी नहीं; घोड़ा गाड़ी, साइकल पूर्व से चलते हैं।

प्रकाश ने कहा—"नवीन ! गत वर्ष के अन्दर कहाँ क्या
टनाएँ घटी हैं—प्रथम जान लो," इतना कहकर हँसते हुए कहा—
मैं तुम्हारे घर गया था, वहाँ कुछ दिन टिका भी था।"

नवीन अपने घर के सम्बन्ध में क्या पूछे, कुछ सोच नहीं पा
हा था। मन में आता, पूछूँ, "प्रतिभा कैसी है ?" फिर सोचता—
गर पिता जी ने इनके साथ दुर्व्यवहार किया हो तो ? फिर
ोला—"कहिए, क्या खबर है वहाँ की ?"

प्रकाश ने उसी प्रकार हँसते हुए कहा—"तुम्हारी माँ तो मुझे
हुत मानती थीं।" नवीन विस्मित हो गया। "घर के भीतर
गये क्यों कर ? माँ के साथ इनकी मुलाकात हुई कैसे ?"

जिस समय प्रकाश ने कहा—"प्रतिभा तो वास्तव में प्रतिभा
," तो नवीन रोमाञ्चित हो उठा।

प्रकाश ने कहा—"उन्होंने एक पत्र मुझे लिखा है। वह पत्र
ुमको उद्देश्य करके लिखा गया है। आश्रम में दिखलाऊँगा।"

नवीन के आश्चर्य की सीमा नहीं थी। वह स्वप्न देखता
कि वास्तविक-जगत में है—इसमें भी उसे शक हो रहा था।
क वर्ष के भीतर क्या इतना परिवर्तन हो सकता है ? जहाँ
ठोर पर्दा का साम्राज्य हो, वहाँ पर प्रकाश का प्रवेश ? और
फर चिट्ठी-पत्री का आदान-प्रदान ! यह सब क्या व्यापार है ?

प्रकाश ने नवीन की आश्चर्य-जनित कुञ्चित-भ्रू की ओर
क्ष्य किया। बोला—"इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं नवीन !
क वर्ष का समय कम नहीं है और फिर विप्लव का युग !
ाधारण समय में जिस काम को करने में पाँच वर्ष लगेगा इस समय
ही ५-६ मास में हो जायेगा। ५ दिन भी लग सकते हैं।
वप्लव के मन्त्र में यही तो गुण है कि जिस प्रकार बादल ऊपर
ठ आते हैं उसी प्रकार सारे दुर्गुण भी ऊपर आ जाते हैं। एक

वर्ष के भीतर इस समय तुमको इस प्रकार के परिवर्तन
करना होगा। उसी के अनुसार अपने-आपको चलाना होगा
नवीन आश्रम आया, देखा, आश्रम मानो श्रीहीन हो ग
प्रथम जिस प्रकार की कर्ममय जीवन की चहल-पहल थी,
भाव थे और न प्रेरणा ही थी।

विस्मय में डूबे हुए नवीन से प्रकाश ने कहा—"प्रथम
कर्मियों के कोलाहल से आश्रम परिपूर्ण था, आज वह न
एक-एक करके सब चले गये। जो हैं भी वे ठीक उसी प्र
जैसे बाढ़ से बहे हुए किसी किनारे लगने पर प्राण-रक्षा क
करते हों। सम्भल-सम्भलकर चलते हैं। फिर भी म
जलाये बैठे हैं।"

नवीन ने अस्थिरता के साथ पूछा—"देश की
हालत है?"

प्रकाश अन्यमनस्क हो बोला—"आश्रम ही तो देश क
बिम्ब है। जैसा आश्रम है वैसा देश है।"

प्रकाश का अवहेलना-जनक उत्तर सुनकर नवीन के
जरा विरक्ति आई—"ये तो अति उत्साही थे—लेकिन
के भीतर यह परिवर्तन! ये क्या कहते हैं?" नवीन के f
गम्भीर चिन्ता का विषय बन गया। मन-ही-मन प्रश्न वि
"तो क्या विप्लव वृथा गया?"

नवीन को चिन्तित देख प्रकाश ने हँसते हुए पूछा-
नवीन, अवसन्न हो गये? जय-जयकार से तुम्हारा अभिनन्द
के तुमसे विप्लव की दीक्षा लेनेवाली विराट जनता नहीं है
तुम्हारी ओर लोग देखेंगे कि नहीं सन्देह है।"

बातचीत बन्द करके नवीन के खाने-पीने का ब
करने के लिए प्रकाश ने एक स्वयंसेवक से कहा। जेल के
रहते नवीन जिस आनन्द की कल्पना करता था, वह इतन

प्रमाणित होगी—यह बात उसे स्वप्न में भी नहीं आई थी। ...कन आज वह मुक्त है, यही अनुभव आनन्द के लिए ...ष्ठ है।

नवीन के घर से जो पत्र आया था उसे उसके हाथ में देकर ...ाश ने कहा—"तुम इसे देखो, मुझे काम है।"

नवीन ने पत्र को बार-बार पढ़ा, फिर भी मन की साध नहीं ...ट रही थी। एक वर्ष के बाद नवीन जेल-मुक्त होकर आया ... जो आश्रम में थे, सभी नवीन के साथ मुलाकात करने आये। ...ी समय नवीन की निगाह उस सहकर्मी के ऊर पड़ी, जिसको ...ल में पढ़ते समय उसके पिता ने इस आन्दोलन में भाग लेने ... लिए मना किया था। न मानने पर थप्पड़, मुक्का—यही ...ीं, नये छाते के बेंट से मार-मार कर बेदम कर दिया था। ...तों का बेंट टूट गया था; लेकिन बालक ने एक न माना। ...ो प्रकार क्षत-विक्षत देह लिए इस विप्लव में शामिल हुआ ...। नवीन ने उसे देखकर हँसते हुए पूछा—"क्यों पुरन्दर, घर ... कुछ खबर मिली है?"

पुरन्दर ने स्वाभाविक मुस्कान के साथ कहा—"ना, मुझे ...छ भी मालूम नहीं। सुना है, पिता ने मुझे त्याज्य पुत्र कह ...या है।"

नवीन ने गौर से उसके मुख की ओर देखा। पूछा—"पुरन्दर, ... क्या सोचते हो?"

पुरन्दर ने उत्साह के साथ कहा—"कुछ भी नहीं। देश-मुक्ति ... प्रतिज्ञा कर के घर से आया हूँ, लौट नहीं सकता।"

नवीन कुछ काल तक नीचे सिर किए कुछ सोचता रहा—...किसके लिए यह अद्भुत त्याग?" बाहर जो-जो अत्याचार ... कहानियाँ सर्वत्र उछल रही थीं, सभी सुनाने के लिए आतुर-... थे।

जगतसिंह पुर की एक विराट सभा में पुलिस ने ला चलाकर किस प्रकार लोगों को जख्मी किया। एक बूढ़ी सिर लाठी की चोट से फट कर किस प्रकार रक्त की नदियाँ बालेश्वर जिले में अवकारी निलाम के समय स्वयंसेवकों ने ध दिया, तो पुलिसवालों ने किस प्रकार उनके मलद्वार में बिछुअ की डाल जबरदस्ती भर दी थी। पुरी के स्वयंसेवकों को ७ तक बिना अन्न-जल के हाजत में रखा गया था और फिर कपड़े छीन कर नङ्गा करके हाजत से बाहर कर दिया गया घरों में किस प्रकार आग लगाने की तरकीब गाँव-गाँव परिव्र हो गई थी। कनिका के अत्याचार की करुण कहानी--कि प्रकार नारियों के ऊपर अकथनीय पाशविक अत्याचार किये थे। यहाँ तक कि पति को बाँधकर उसके सामने स्त्री पर ब त्कार किया गया था और फिर पति को जेल भेजा गया। स्त्री प्रतिशोध की भावना लिए खुले सिर पगली बनी कहीं घूम फिरती है।

यह सब सुनकर नवीन का खून खौलने लगा। वह सो लगा कि अगर मैं बाहर होता, तो प्राण देकर भी मैंने इस प्रतिशोध लिया होता। दीर्घ निश्वास लेकर उसने पूछा—" क्या हालचाल है?"

सभी ने कहा--"अत्याचार से लोग दब गये हैं यह सच लेकिन उनको अगर उत्साह मिले तो फिर उठ खड़े होंगे।"

कुछ समय के बाद सभी अपने-अपने काम में जा लगे। नव उस चिट्ठी को खोल कर फिर पढ़ने लगा। गंभीर चिन्ता के भार आँखों की पलकें लाजवन्ती के पत्तों के समान मुँद रही थ नवीन महासङ्कट में आ पड़ा। उसने अनुभव किया कि जि समय आन्दोलन में शामिल होने के लिए इस आश्रम में आया उसका उत्साह आकाश को छुए था लेकिन आज तो धरती छो

के लिए भी तैयार नहीं है। इसका यथार्थ कारण भी सामने था। उस समय विप्लव सफलता की प्रतिछवि लेकर घूम रहा था, लोगों को आह्वान करता था; लेकिन आज उसने अपनी प्रतिश्रुति भङ्ग कर दी थी। कोई भला विफल प्रयत्न का अनुभव करता है ? उसने खुद क्या नहीं किया ! पिता की आज्ञा का उल्लङ्घन किया, नव-विवाहिता पत्नी की ओर भी नहीं देखा। तो क्या विप्लव कभी सफलता की प्रतिश्रुति दिए बिना नहीं आता ? इसकी प्रतिश्रुति का रक्षाभार तो उन लोगों पर है, जो उसके आह्वान पर इसमें शामिल हैं। उन्हीं की कर्म-तत्परता के ऊपर सब निर्भर करता है। आज मेरी कर्मतत्परता का अभाव ही उसकी सफलता में बाधक होगा। मैंने सोचा था--मैं माया मोह की रस्सी काट चुका हूँ, लेकिन मैं तो फिर उसी रस्सी में खिंचा जा रहा हूँ, क्यों ? वास्तव में रस्सी पूर्णतया कटी नहीं थी। शायद अज्ञान में कहीं रस्सी का एक तार लगा रह गया था वही मुझे खींच रहा है। इस विप्लव में कितने आदमियों ने कितना त्याग नहीं किया ? वे मुझे आगे रखकर चल रहे थे। अगर मैं न अग्रसर होऊँ, तो वे और भी दब जायेंगे। संसार की सभी आशा, माया, ममता को छोड़कर मेरे समान व्यक्ति अगर आगे न आयेंगे, प्राण न देंगे, तो देश की मुक्ति कैसे होगी ?

दोनों प्रकार की चिन्ताओं से खिंचा नवीन बहुत व्याकुल और अस्थिर था।

रात्रि के भोजनोपरान्त नवीन हठात् उठा और लालटेन लाकर उस चिट्ठी को फिर पढ़ने लगा—प्रतिभा ने प्रकाश को लिखा था--"अगर वे यह सोचते हैं कि इस विवाह के सम्बन्ध में उनका हाथ नहीं है, अतएव विवाह सम्बन्धी कोई दायित्व लेने के लिए वे तैयार नहीं हैं, तो मैं भी यह कह सकती हूँ कि इसमें मेरा भी तो हाथ नहीं था। मैं भी तो दायित्व से मुक्त हो सकती हूँ।

समाज की प्रचलित प्रथा के अनुसार विधि ने हम दोनों
आकस्मिक भाव से मिलाया। यह मिलन परीक्षा के उप
अहितकर समझा जा सकता था। लेकिन प्रथम परीक्षा
जरूरत थी। बिना परीक्षा के मिलन का अनादर करने का अ
विधि का अपमान करना। अगर वे अपनी बनाने के लिये
अनुपयुक्त समझते हैं, तो मैं भी उनको अपने पति के योग्य
समझ सकती हूँ। अगर वे अपने को एक बड़े विप्लवी समझ
मेरी उपेक्षा कर सकते हैं, तो मैं भी अपने को उनसे बड़ा विप्ल
समझकर उनकी उपेक्षा कर सकती हूँ। आपकी प्रेरणा से मैं
वह अबला नहीं रही जो कि जिन्दगी भर पति के नाम की रट लग
कुढ़ा करूँगी। मेरे लिए भी विप्लव का पथ खुला है। अ
साधारण प्रजा जमींदार के विरुद्ध होकर मुझे ही अपना हितै
समझती है। अब मैं भी इस बन्धन में पड़े रहना पसन्द न
करती। मैं संसार छोड़ दूँगी, नदी की बीच धारा में जीवन
फक दूँगी। मुझ में भी तैरने की ताकत है, साहस है। मैं आप
अनुगत हो, बहकर हो या तैरते- तैरते हो, समुद्र की ओर ग
करूँगी, अगर बीच में डूब भी जाऊँ तो मुझे दुःख नहीं। कारण
तब मैं दुनिया में अकेली रहूँगी, मेरा कोई नहीं होगा।"

प्रतिभा, ऐसा पत्र लिख सकती है? वह विप्लव का
प्रकार का चित्र खींच सकती है? उसमें अगर अपनी ही कृ
प्रतिभा न होती, तो प्रकाश इन कई दिनों में उसे ऐसी प्रेरणा न
दे पाते। वह इस प्रकार का विचार रखनेवाली प्रतिभा का अना
करके चला आया है—नवीन के मन में यही एक गम्भीर परित
का विषय था।

"पिता के विरुद्ध मेरी स्त्री आन्दोलन का नेतृत्व कर र
है"—यह सोचते ही नवीन का शरीर सिहर उठा। जिस विप्ल
का प्रचार उसने खुद किया है अगर उसी का प्रचार उसकी पत्न
करे तो उसमें उसका क्या दोष! अगर विप्लव पथपर वह अ

उसकी पत्नी दोनों चलें तो फिर पिता-माता का साथ छोड़ना होगा—-यह चिन्ता नवीन को अस्थिर किए थी।

अपने विचारों के बल विप्लव को अपने ही ऊपर चलाने और प्रचार करने की बात वह सोचता था। अपनी भूल को समझना भी एक बड़ा गुण है; लेकिन उस गुण के अधिकारी बनने में बाधक होता है। दुष्ट मन। वह दूसरों के दोष खोजने में लगा रहता है।

नवीन उस अनिश्चितता में अपने को असुविधा के अन्दर देख रहा था। अतः वह प्रकाश के दोष खोजने में लग गया। बार-बार चिन्ता करके वह सोच रहा था कि इन्होंने कालेज में पढ़ते समय अच्छी तरह से विषय को समझने का मौका नहीं दिया और अन्त में उसे पुरानी टूटी नौका में बैठाकर समुद्र में छोड़ दिया है।

✤

बिस्तर पर पड़े-पड़े नाना प्रकार की चिन्ता करते-करते वह क्रमशः चेतनावस्था से अर्द्ध-चेतनावस्था में पहुँचा, ऐसी दशा में आँखों के सामने घटती हुई घटना स्वप्न में घटने लगी। उसने देखा—-काठयोड़ी नदी बढ़ी है। दोनों किनारों को तोड़ती-फोड़ती, छाती फुलाए हुए नदी दौड़ रही है। किनारे से बहुत दूर फेनराशि के बीच एक काठ-सा बहा जा रहा है। उसके ऊपर नवीन ने अभी निगाह फेरा ही था कि कहीं से एक मुर्छनामयी सङ्गीत लहरी कान के पर्दों को गुदगुदा उठी। मालूम होता है मानो बहुत दूरी

पर प्रतिभा गा रही हो, "मु ँ एका जीवन नई रे, केति मोर साहा (मैं इस जीवन की नदी में अकेले तैर रही हूँ, सहायक कोई नहीं है)।" उसे ऐसा जान पड़ा कि प्रतिभा न भीतर स्रोत के अन्दर पड़ी रो रही है। वह नवीन की ओर फैलाकर उसे बुलाती है। किनारे पर खड़े अनेक आदमी भी ची करते हैं--"अहा, बही जाती है।" वह खुद नदी में कूदकर प्रतिभ बचाने जा रहा है---उसी समय प्रकाश पीछे से आकर उसे लेता है। निष्ठुर रूप से हँसते हुए प्रकाश कहता है---"जान कहाँ तक बहकर आती है, जाय।" इसी समय नवीन का भङ्ग हुआ। अर्द्धजाग्रत अवस्था में भी मन की गति उसी प्र चञ्चल थी। अस्थिरता और भय से उसका दिल भरा हुआ उसने चारों ओर देखा, कहीं कोई नहीं था। केवल लालटेन ज थी और प्रतिभा की चिट्ठी जमीन पर पड़ी थी।

नवीन उठा, बाहर गया और फिर आकर बिस्तर पर बैठ स्वप्न के सम्बन्ध में पागुर-सी करने लगा। असहाय प्रतिभा करुणध्वनि कानों से आकर मन में झङ्कार करने लगी। अपने वह एक बहुत बड़ा अपराधी समझने लगा। घर जाना निश् करते ही जो कर्मी जेल में हैं, आते समय घेर कर बैठे थे, सभी के बाद एक सामने आने लगे। चारों ओर जो दमन लीला रही थी, उसके लिए सभी के घरों में जाना और उनको सान्त् देना भी तो कर्तव्य है। इस काम को किए बिना अपने घर ज उनके प्रति भयानक विश्वासघात होगा।

प्रतिभा ने जो पत्र प्रकाश के पास लिखा था, वह जान्हवी देवी के कहने पर ही लिखा था। प्रजा जैसे-जैसे एकताबद्ध होती जाती, वैसे-वैसे रामहरि असहयोग आन्दोलन को, प्रकाश को और इन सबके साथ नवीन को भी गाली देते। उससे जान्हवी देवी की आशङ्का मजबूत होती जाती कि नवीन अब शायद ही घर लौटे!

"अगर प्रजा मिलकर कुछ करना या कहना चाहती है, तो कह दो कि नवीन के आने तक चुप रहे, नवीन को आने दें। वही करेगा जो कुछ करेगा। ऐसा कहने से प्रजा तो चुप हो जायगी, वह भी तो तुम्हारा पुत्र है इतना क्यों नहीं कह देते।" रोते-रोते जान्हवी देवी ने रामहरि बाबू से कहा था। यह सुनकर हिंस्र जन्तु के समान चीत्कार करके रामहरि ने कहा--"नवीन क्या जानता है जमींदारी की बातें; उसे भला क्या मालूम? २० वर्षों से मैं जमींदारी सम्भाले हूँ। मुझसे जो न होगा सो वह भला क्या कर सकता है? वह तो अमनुष्य है, उसके साथ पढ़नेवाले आज सौ, दो सौ रुपये कमाते हैं और वह पागल बना घूमता है। पिता की सम्पत्ति है, बैठे-बैठे खायेगा।" जान्हवी देवी नीरव हो गयीं। इसी नीरवता ने प्रकाश को एक पत्र लिखने के लिये बाध्य किया--जिसको प्रकाश और नवीन पढ़ चुके थे। चिट्ठी लिखने के तीन दिनों बाद प्रतिभा अपने भविष्य के सम्बन्ध में बैठी चिन्ता कर रही थी। जान्हवी देवी स्नान करने गईं, उन्हें पूजा-पाठ में भी कुछ समय तो लगता ही है। अतएव बालक नौकर रामा ने सोचा कि यही समय है छोटी मालकिन से बातचीत करने का। इधर-उधर देखता रामा भीतर घुसा। प्रतिभा ने अन्यमनस्क रूप से पूछा—"क्या है रामा?"

रामा बोला--"बहुत बातें कहनी हैं।"

प्रतिभा घूमकर बैठ गई, उसने पूछा--"क्या कहता है, बोल?"

रामा एक बार नीचे को, एक बार ऊपर को, फिर इधर
देखकर बोला—"प्रजा ने कल एक सभा करने का निश्चय
है। मुझे उन लोगों ने आपसे कहने के लिये कहा है औ
उपाय नहीं रह गया। हाकिम लोगों को मिला करके बाबू
जबरदस्ती से प्रजा को दबा कर उन पर शासन करना चाह
वे प्रजा का नाम-निशान मिटाने पर तुले हैं। अतएव अब
कुछ भी मानने को तैयार नहीं है—चाहे कुछ भी हो।"

"यह तो पुरानी बातें हैं।" प्रतिभा ने व्यग्र हो कर पू
"कुछ नई बात है?"

रामा ने साहस बटोर कर कहा—"उस दिन मारते-मार
आदमी को मार डाला गया। उसके बारे में कुछ भी नहीं
जो प्रजा की एकता के नेता थे उन पर आठ नम्बर का मु
दायर किया गया है। पुलिस के पास जाने पर वह भी
दौड़ती है। हाकिम के पास प्रार्थना-पत्र देने पर सब फाड़कर
दिया जाता है। मनुष्य कब तक चुप रह सकता है,—" रामा
हो गया।

प्रतिभा ने व्यग्रता सहित पूछा—"उसके बाद क्या हु
डरता क्यों है, साफ-साफ सब कहता क्यों नहीं?"

रामा ने धीरे-धीरे कहा, उसका स्वर नरम पड़ गया थ
"सारी प्रजा इस ताक में बैठी है कि एक रोज जमी
साहेब को......"

प्रतिभा जरा व्यग्र हो बोली—"तो, मारेंगे क्या? क्या
है, कहता क्यों नहीं?"

रामा की आँखों ने प्रतिभा के प्रश्न का उत्तर 'हाँ' में दि
लेकिन वह कुछ बोल न सका।

प्रतिभा समझ गई। उसने जोर से कहा—"तेरे समान
सारी प्रजा भीरु होगी, तो वह जमींदार की बोली सुनकर प्रा
भाग खड़ी होगी, मारेगा कौन?"

रामा हँसी को मुख में दबाये पूर्ण नम्रता प्रकाश करते हुए, बोला—"नहीं, प्रजा उत्तप्त हो उठी है। अब उनका विश्वास किसी पर नहीं रहा। केवल यही उन लोगों का कहना है कि नयी मालकिन हमारी बातें सुनें। उनसे अपनी बातें कहने के बाद फिर हमें जो करना होगा, करेंगे।"

प्रतिभा नीचे सिर किये कुछ काल तक सोचती रही। फिर उसने कहा—"नये मालिक आ जायें, इतने दिन तो हो गये, कुछ ही दिन के बाद तो वे यहाँ आयेंगे। मैंने चिट्ठी लिखी है।"

रामा गरीब था; लेकिन पेट में चतुरता थी, सब समझता था। धीरे-धीरे बोला—प्रजा में यह प्रचार हो गया है कि नये मालिक अब घर नहीं लौटेंगे। वे गांधी जी के साथ मिल गये हैं। उनकी राह देखते रहेंगे तो इधर सब सत्यानाश हो जायेगा।"

हठात् एक बात प्रतिभा को सूझी—वह इतनी प्रसन्न हुई कि मुख से गम्भीरता की छाया भी गायब हो गई। बोली—"सब मिलकर नये मालिक को आने के लिए चिट्ठी क्यों नहीं लिखते? आज के ५ रोज बाद शुक्रवार के दिन वे जेल से मुक्त होंगे। उसी समय कोई कटक क्यों नहीं चला जाता और उनको सब बातें समझा कर लिवा लाता। तू जाकर प्रजा के नेता से कहना कि मैंने ऐसा कहा है।"

कुछ काल चुप रहने के बाद कहा—"अच्छा तो मैं यही बात सबसे कह दूँगा। जो वे लोग कहेंगे आपसे आकर कहूँगा।"

दूसरी बेला आकर रामा ने कहा—"सबने कहा है वे चिट्ठी लिखेंगे और कटक आदमी भी भेजेंगे। किन्तु अगर न आयें तो?"

यह सुन प्रतिभा के मन में क्रोध जाग उठा, उसने उत्तेजित हो कर कहा—"अगर नहीं आयेंगे तो फिर मैं तुम लोगों की बातें सुनूँगी और यथोचित व्यवस्था भी करूँगी। इस शुक्रवार से पन्द्रहवें दिन

जो शुक्रवार पड़ेगा उसके दूसरे दिन शनिवार को तुम सब एक
बुलाना, मैं खुद उस सभा में जाऊँगी। वे आयेंगे क्यों न
निश्चय आयेंगे। नहीं आयेंगे तो मैं सब समझूँगी।"

चाणक्य के समान कूटनीतिक-चतुरता भी उत्कल की
जनता के भीतर प्रच्छन्नरूप से छिपी ग्राम्य-चतुरता के आग
मान जायेगी। रामा प्रजा की खबर लाकर प्रतिभा को देत
प्रतिभा की खबर प्रजा को देकर अपने आपको सरल-सीधा म
कहलाने लगा था। इसी सम्पर्क को लेकर लोग रामहरि के
एक प्रकार का डर घुसाने की चेष्टा कर रहे थे। उनको विश्वा
कि अगर प्रतिभा के कान में बात जायेगी तो वह सास से जरूर
और बड़ी मालकिन फिर मालिक को समझायेंगी, फलस्वरूप मा
के मन में यह भय घुस जायेगा कि प्रजा मौका पाकर उन्हें पीट
एक दिन बातचीत के सिलसिले में प्रतिभा जान्हवी देवी से बो
"मैंने सुना है उत्तेजित प्रजा ससुर की हत्या करेगी।"

जान्हवी देवी ने अति व्यग्रता से पूछा—"यह खबर
कहाँ से सुनी है? प्रतिभा जरा-सा इतस्ततः हो बोली—"
कहता था। मैं उससे हमेशा बाहर की खबर सुना करती हूँ, व
वहाँ सुनता है, मुझसे कहता है।

जान्हवी देवी ने नाराज होकर कहा—"वह मरा रामा
सब कहता है मुझसे तो कभी कुछ भी नहीं कहता? अरे रा
ओ रामा!!

पुकार सुन रामा भयभीत होकर आकर खड़ा हो ग
जान्हवी देवी ने पूछा—'तूने सुना है प्रजा मालिक को मारेगी

रामा प्रतिभा की ओर देख कर बोला—"नहीं, मुझे कु
मालूम नहीं है। मैंने तो कहीं कुछ भी नहीं सुना है।"

किन्तु उसने सोचा—"प्रतिभा इससे अपदस्थ हो गई
यह ख्याल न रहा कि लोग प्रतिभा को नवीन की पत्नी

जिस निगाह से देखते हैं जमींदार की पत्नी जान्हवी देवी को उस निगाह से नहीं देखते।"

प्रतिभा विरक्त होकर बोली--तूने मुझसे नहीं कहा? मैंने तुझे समझाया था कि वे ऐसा क्यों करते हैं? नये मालिक को आ जाने दें।

रामा ने सिर खजुलाते हुए कहा--"मैंने तो उड़ती खबरें सुनी थीं, यह सच थोड़े ही है। लोग भला क्यों ऐसा करने जायेंगे?"

जान्हवी देवी सिर हिला कर भौंहें चढ़ा कर बोलीं--"चाहे उड़ती खबर हो या सच; लेकिन बातें उठी हैं तो उसमें कुछ अंश सत्य का जरूर होगा? बिना आग के धुआँ निकलता है। मालिक के कानों में ये बातें डाल देनी चाहिए।"

अब प्रतिभा को लगा कि रामा विपद में पड़ा। इन सारी बातों को सुन कर जब उनको यह मालूम हो जायेगा कि रामा इस प्रकार की खबरों का आदान-प्रदान करता है, तो वे मारे क्रोध के आग बबूला हो जायेंगे--इस कल्पना के आते ही प्रतिभा विचलित हो उठी। अधीरता को छिपा न सकी, बोली--"उनसे कहने से क्या लाभ? बिना कारण गुस्सा करेंगे।"

जान्हवी देवी आशङ्का करने लगीं और उन्होंने जोर से कहा—गुस्सा करेंगे, करें! लेकिन उनके कानों में ये बातें डाल देना उचित है, संसार में क्या नहीं हो सकता? आगे से कहने से वे प्रतिकार की कुछ चिन्ता करेंगे।

प्रतिभा के मन में जो आशङ्का थी वह नहीं हुई! जान्हवी देवी के मुख से बात निकते ही रामहरि उत्तेजित हो बोले--"ये सारी बातें मैंने सुनी हैं। उनकी कमेटी में जो होता है, उन्हीं का एक आदमी आकर मुझसे सारी बातें कहता है, खबर पाकर मैंने प्रतिकार की तैयारी कर ली है। मेरे साथ ये कौवे लगे हैं, जब तक कुछ मर नहीं जाते, नहीं मानेंगे। मैंने पुलिस और जाजपुर

के हाकिम को खबर दे दी है। जिस समय बन्दूकधारी
आयेगी उस समय, आज जो कुत्ते भूकते हैं, वे मजा चखेंगे

रामहरि के मुख से बन्दूकधारी पुलिक की बातें सुनकर प्र
सोचने लगी। "सभा होगी, हजार-हजार आदमी बैठे होंगे
लोगों पर गोली चलेगी, कितने आदमी वहीं मारे जायेंगे
घायल होंगे—कितना भयङ्कर दृश्य होगा! और वह सब
किसलिए? इसीलिए कि गरीब आदमी अत्याचार से मुक्त
के लिए सिर उठाते हैं? उन लोगों का सिर नीचा रखने के
यह सब व्यवस्था होती है। धन क्या ऐसी वस्तु है कि उसके
दुनिया में सब कुछ किया जा सकता है? पुलिस, हाकिम
इसी धन के अधीन हो गये हैं? परन्तु धन आया कहाँ से है
तो उन्हीं गरीबों से संगृहीत होकर मुट्ठीभर लोगों के पास जमा
है और उसे फिर उन्हीं दाताओं के विरोध में खर्च किया
वास्तव में इस अन्याय का अवसान जितना जल्दी हो उतन
उत्तम है। उसके पति घरद्वार छोड़ कर इस अन्याय के
लड़ रहे हैं, यह अच्छा काम है।" नवीन के कार्य के प्रति प्र
के मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई। उसके मन से एक प्रकार की
सी खुल गई। आज उसे मालूम हुआ है कि चले जाने के पीछे
महत् कार्य की प्रेरणा थी; किन्तु यह खबर पाकर उनका
उचित है और प्रजा की सहायता करना जरूरी है। अगर
काम अन्याय के विरुद्ध लड़ना है, तो यह खबर पाकर वे नि
आयेंगे। उनके आने से सब ठीक हो जाएगा। इस विचा
प्रतिभा के मन में अज्ञात भाव से प्रसन्नता खेलने लगी।
रामा को बुला कहा—"तुम किसी प्रकार का भय मत करना
सबसे कहना कि डरें नहीं। सभी नवीन के आने तक प्र
करें।

एक-एक कर दिन बीत रहे थे। नवीन की जेल मुक्ति
खबर समाचारपत्रों में प्रकाशित हो गई। उसके बाद एक

तीन करके दिन महीने के समान बीत रहे थे, अब पन्द्रहवाँ दिन बीतनेवाला है। 'बस आते ही होंगे--आधे रास्ते में होंगे'--इसी प्रकार की कल्पना प्रतिभा अपने मन में कर रही थीं। इस बीच में उसे खबर मिली है कि नवीन को लाने के लिए जनता ने कटक आदमी भेजा है किन्तु उस सूत्र से भी कुछ खबर नहीं मिली। पन्द्रहवें दिन प्रतिभा रामा से गम्भीर होकर बोली—कल सभा करें, मैं आऊँगी।

रामा को विश्वास नहीं हुआ। इधर-उधर देखता खड़ा रहा। लेकिन जब प्रतिभा ने जोर देकर कहा तब उसे विश्वास हुआ। वह धीरे-धीरे वहाँ से गया और गाँववालों को यह खबर दी।

प्रतिभा के मन में कितना अभिमान है और अत्याचारियों के प्रति कितनी सहानुभूति है, समझना कठिन है। क्योंकि नाना प्रकार के भावों के घात-प्रतिघात से मनुष्य का मन ऐसा हो जाता है जिससे पूरापूरी समझना मुश्किल होता है। प्रतिभा के मन में ज्वार-भाटा उठा—"इतना अहङ्कार! इतना गर्व! उस दिन मैं खुद बुलाने लिए गई थी--भिखारी को दुरदुराने की तरह मुझे भगा दिया, फिर इतनी विनय के साथ चिट्ठी लिखी, उस चिट्ठी को तो उन्होंने जरूर देखा होगा। आने की बात तो दूर रही उत्तर तक भी नहीं दिया। गाँववालों ने आदमी भेजे, उनकी बात भी नहीं रखी। गाँववाले कोई नहीं, माता-पिता कोई नहीं, मैं कोई नहीं हूँ। वे यदि इतना बेपरवाह हो सकते हैं तो मैं क्यों इतना संकोच रखूँ। मैं दूसरे के घर की लड़की हूँ। सास-ससुर मिलेंगे इसलिए नहीं आई थी। मेरा भी आत्म-सम्मान है। मैंने लोगों को १५ दिन के बाद सभा करने के लिये वचन दे दिया है। मैं उसमें भाग लूँगी, लूँगी, लूँगी।"

उसका मन अपने आपको भविष्य के एक अपरिचित पथ की ओर तैयार कर रहा था। कुछ देर के बाद जान्हवी देवी ने आकर

कहा—"बहू ! सुना, वे सब डुग्गी पीटकर कह रहे हैं, कि
शाम को हाट के मैदान में एक सभा होगी और तू वहाँ व्या
देगी। ससुर सुनकर गुस्सा होते हैं, उन्होंने पुलिस को आ
लिए खबर दे दी है। बहू के नाम से डुग्गी पीटते हैं इसलि
ससुर उनको गाली देते हैं कि इन लोगों की मान-मर्यादा कुछ
नहीं है। कुलवधू के नाम से नारा दे रहे हैं !"

कल की सभा के लिए लोगों के भीतर जिस
उत्तेजनापूर्ण उत्साह रामहरि के घर में भी उसी प्रकार की उत्
खेल रही थी। रामहरि उसी दिन सभी को शिक्षा देंगे—
लिए उनका खून खौल रहा था। लोगों के मुख से जान्हवी
ने जो अफवाह सुनी थी—सोचती थी, कहीं वास्तव में सत्य
जाय, इसलिए उनका मन चञ्चल था। नवीन नहीं आयेग
खबर को सुन प्रतिभा अपने-आप को पिंजरे से निकालने के
तैयार कर रही थी; इसलिए उसके मन की चञ्चलता
गति पर थी। उस रात को प्रतिभा अपने पलङ्ग पर न
जमीन पर एक चटाई बिछाकर सोयी थी। मन-ही-मन पलङ्
उसने उसी दिन विदा ले ली। जो गहने उसने पहिने थे वे
उतार कर बक्से में बन्द कर दिये, केवल हाथ में दो-दो चूड़िय
गई थीं। "बाल्यकाल, स्कूल में पढ़ते समय 'अगुछि' नाम से
प्रकार प्रतिभा बना ! महेन्द्र बाबू के नाम से मिथ्या प्रचार !
में माता-पिता की ताड़ना ! विबाह के बारे में माता-पिता
सुख-स्वप्न, सास का स्नेह ! स्वामी की अवहेलना आदि म
स्मरण कर रही थी। "इस अतीत के साथ उसके भविष्य का
सम्बन्ध नहीं रहेगा। वह इस संसार से कूदेगी और किसी
अज्ञात संसार में जाकर गिरेगी। नयी दुनिया से अपरिचित
के कारण वह उसके बारे में अधिक सोच नहीं पा रही थी अ
उसका मन परिचित विषयों की ओर अधिक जा रहा था।

जितना ही सोचती थी, उसका मन क्रोध और अवसाद से भर जाता था। रातभर छटपटाती, करवटें बदलती रही। सबेरे की शीतल वायु के स्पर्श से उसे जरा-सी शान्ति मिली और मालूम नहीं हुआ कि कब वह सो गई।

किवाड़ों के खुड़कने से प्रतिभा की नींद टूट गई। जान्हवी देवी का स्नेहपूर्ण स्वर सुनाई पड़ा——बहू आज अभी तक क्यों सोई हो? प्रतिभा का मन निद्रा त्यागते ही नवीन की ओर गया। उसके मन में यह आशा लगी हुई थी कि कोई आकर कहेगा कि नवीन आ गया है। उसने निराश दृष्टि से सास की ओर देखा। दीर्घ निःश्वास लिया। उसने मन में कहा——"आज का दिन शेष है।"

सबेरा हो गया। रामहरि जल्दी-जल्दी स्नान पूजा कर हाकिम और पुलिस के रहने-खाने की व्यवस्था में लग गये। खबर मिली कि हाकिम, २० बन्दूकधारी पुलिस के सिपाही, इन्सपेक्टर, सब-इन्स्पेक्टर सभी ११ बजे तक पहुँच जायेंगे। दाल, चावल, ईंधन, हाँड़ी, आदि सब ठीक ठाक करके एक बकरा काटकर लाने की आज्ञा रामहरि ने दे दी। कुछ आदमियों को लगा दिया कि वे सभा के सम्बन्ध में कहाँ क्या होता है उसकी खबर ला कर दें।

नाना प्रकार की अफवाहें रामहरि के कानों तक आ रही थीं।

वे अग्निबाण बने कभी इस घर में, तो कभी उस घर में आ-जा रहे थे। जान्हवी देवी भी सबेरे ही स्नान करके पूजा करने में लगी थीं ताकि किसी प्रकार का विघ्न न आवे।

उस दिन प्रतिभा सवेरे के नित्य कर्म शेष कर मन-
प्रत्येक वस्तु से, काम से मानों विदा ले रही थी।

प्रतिभा अपने गहनों की पेटी सास के कमरे में रखत
बोली—"गहने की पेटी आपके कमरे में रहे।"

जान्हवी देवी इस कथन का अर्थ कुछ भी न समझ
उन्होंने सोचा, बहू के मन में डर है कि कहीं आदमी घुसकर
न ले जायँ। हँस कर बोलीं—"तू पगली हुई है बहू! घ
भीतर कौन आएगा जहाँ है—वहीं रहने दो न!

लेकिन प्रतिभा बिना अपेक्षा किये गहने की पेटी सास के
में रख आयी। जान्हवी देवी ने इस घटना को अधिक
दिया। प्रतिभा आ कर सास के लिए पान लगाने बैठ
लेकिन आज प्रतिभा ने पान भी नहीं खाया। भोजन भी
बना था, लेकिन प्रतिभा खा नहीं सकी।

रामहरि हाकिमों की चर्चा में व्यस्त थे। रोज की
चटाई बिछाकर जान्हवी देवी जरा आराम करने लगीं और प्र
पैर दबाने लगी। बहू की सेवा से खुश हो सास ने पूछा-
खाया नहीं, जा जरा-सा लेट रह!" किन्तु प्रतिभा उस कथ
ध्यान न देकर पैर दबाती रही। जान्हवी देवी को नींद लग
इसी समय प्रतिभा कुछ काल सास के तलवों पर सिर रख
गई। 'माँ! मुझे विदा दो।' उसकी आँखों से आँसुओं की धा
चली। वह हृदय के भाव सँभाल न सकी, उठकर चली
और अपने कमरे के फर्श पर बैठकर बड़ी देर तक रोती
चलचित्र के समान भविष्य उसकी आँखों के आगे घूम रहा

✤

हाट बाजार के मैदान में सभा होगी, इसलिए चारो ओर से आदमी दोपहर से ही चलकर आ रहे थे। सभा होते ही अत्याचार एकदम बन्द हो जायगा, ऐसा लोगों को विश्वास था। रामहरि की जमींदारी के बाहर के आदमी भी आ रहे थे। आखिर वे भी तो अपने-अपने जमींदारों के द्वारा प्रताड़ित थे। तमाम जगह यह प्रचार हो गया था कि प्रतिभा इस सभा में भाषण देगी। "नवीन देश के काम के लिए जेल गया है। उसी के लिए उसने अपना सारा जीवन दान करने का निश्चय किया है—सीता देवी के समान उसकी पत्नी भी उसका अनुकरण कर रही है"—यह दर्शन बड़े सौभाग्य की बात थी। विद्रोह के सरदार अपने को गौरवान्वित समझते थे कि बहू आकर ससुर के विरुद्ध खड़ी हो रही है। हाकिम, पुलिस का डर नहीं था।

शाम होने के प्रथम प्रायः २-३ हजार आदमी जमा हो गये। सभा में लोगों को शान्ति से बैठाने की जानकारी किसी में नहीं थी। जनता अपने में सम्मिलित शक्ति तथा उत्साह अनुभव करती थी। हल्ले की सीमा नहीं थी। लोगों का समागम और कोलाहल सुनकर बन्दूकधारी पुलिस दौड़ आई। पुलिस को देखकर भय का सञ्चार नहीं हुआ; बल्कि उससे उत्तेजना और अधिक बढ़ी। सभा के बीच में चौकीदार के द्वारा लाई गई कुरसी पर हाकिम बैठ गये। एक मेज सामने रखी गई। मेज के दोनों ओर इन्स्पेक्टर, सबइन्स्पेक्टर कापी पेंसिल लेकर बैठ गये और सभा के चारों ओर आँखें घुमाकर देखने लगे। इस निर्भय वायुमण्डल के पास वे हीन जन्तु से प्रतीत होते थे। हाकिम उत्साहहीन हो चारों ओर देख रहा था उसके मुख पर विषाद की छाया दिखा रही थी।

धीरे-धीरे कोलाहल शान्त होने लगा, लोग बैठने लगे। दूर से "बैठ जाइये", "बैठ जाइये", की आवाज लोगों को प्रोत्साहित कर रही थी। प्रकाश और पुरन्दर घूम-घूमकर सभा में सबको बैठा रहे थे। प्रकाश के ऊपर हाकिम की आँखें पड़ीं, उन्होंने उनको पास बुलाया।

"प्रकाश जरा हँसते हुए भीड़ से निकल कर हाकिम से बेप
के साथ बोले—"कहिये महेन्द्र बाबू ! आप आये हैं गोली
का आदेश देने के लिए ? बहुत अच्छा, आज इस रङ्गमञ्च
इतने आदमियों को आपका अन्तिम अभिनय देखने का सौ
मिलेगा।"

हाकिम के सामने प्रकाश को इस प्रकार की निर्भीक बात
करते देख उपस्थित जनता अवाक् हो ताकती रह गई।

प्रकाश महेन्द्र के एक परिचित बन्धु थे, एक समय वे उ
सम्मान भी करते थे। लेकिन हाकिम होकर दब जाना अनु
था; इसलिये गम्भीर होकर बोले—'अगर आप लोग अशांति
तो गोली चलानी ही पड़ेगी। इसमें विस्मित होने की कोई भी
नहीं है।'

"गोली का डर तो तब होता जब देखते कि इस गो
हमारी मुक्ति है"—यह कह प्रकाश ठट्ठा मारकर हँसने लगे

महेन्द्र के मन में जरा विरक्ति का भाव आया। विरक्ति
मुस्कान के साथ कहा—"सब जगह व्याख्यान देना तो आपका
हो गया है। कहिये और क्या खबर है ? सभा किस समय अ
होगी ?"

"शाम को" प्रकाश ने कहा।

महेन्द्र ने हँसकर घड़ी देखते हुए कहा—"शाम किस सम
कहते हैं ?"

वहाँ से जाते हुए प्रकाश ने कहा—"बड़े आदमियों के पास
होती है, गरीब कैसे समझेंगे उनके पास तो तीन जून हैं, स
दोपहर और शाम। उसके बाद रात।"

महेन्द्र बाबू व्यग्र हो बोले—"जरा ठहरिये, ठहरिये !
प्रतिभा देवी सभा में किस समय आवगी ?" महेन्द्र का मुखम

म्भीर हो गया था। पिछली नाना प्रकार की बातें महेन्द्र को किस रह मथने लगी थीं यह केवल वही जानता था।

कुछ काम में व्यस्त रखने के लिए प्रकाश चेष्टा करने लगा। ुरन्दर खड़ा होकर देश की परिस्थिति के बारे में व्याख्यान देने लगा। पंजाब के अत्याचार से लेकर अंग्रेजी राज्य में यह देश किस कार दुरवस्था को पहुँचा, आदि विषय पर उसका एक लम्बा याख्यान प्रारम्भ हुआ। उपस्थित जनता नीरव-निस्तब्ध होकर सुन रही थी। बीच-बीच में व्याख्यान की गति सरकारी कर्मचारियों की ओर भी मुड़ जाती थी।

शाम हो गई। सभा के बीच में चार गैस बत्तियाँ जला दी यीं। पुरन्दर अनर्गल व्याख्यान दे रहा था। जो देहाती अपने गाँव को या अधिक से अधिक आस-पास के कई गाँवों को जिसे कि वे अञ्चल कहते हैं, उसी को अपना देश समझते हैं। जिनकी दृष्टि से जिले का अर्थ है—जहाँ मुकदमे की सुनाई होती है; प्रदेश का अर्थ जो नहीं समझते, जीवन में जिन्होंने देश का मानचित्र कभी नहीं देखा, वे भला आयरलैंड के विप्लव, रूस की राज्यक्रांति, कैसे समझेंगे पंजाब किस जन्तु को कहा जाता है, उनके दिमाग में नहीं घुसता था। फिर भी उत्साह के बल पुरन्दर अपनी ओजस्विनी भाषा में व्याख्यान दिये चला जा रहा था। फूल को बिना देखे भी गन्ध के द्वारा जैसे उसका अनुभव होता है उसी प्रकार

बातों को न समझते हुए भी पुरन्दर को उत्साहमयी ओज
भाषा से लोग प्रभावित थे। उनके मन में कुहरा-सी एक ध
हो गई थी कि अब उनके सारे कष्ट दूर होंगे। यही आशा
मन्त्रमुग्ध किये हुए थी। सँपेरे की बीन से साँप के समा
वक्ता के मुख की ओर देख रहे थे।

सभा के पीछे धीरे-धीरे सुरसुराहट-सी होने लगी। एक
करके सभी उधर देखने लगे। धीरे-धीरे सभी की निगाह
मञ्च की ओर चली गयी, कोलाहल भी बढ़ चला। पु
श्रोताओं से विरक्त नहीं हुआ। उल्टे वह भी उधर देखने
वह चुप हो गया। "प्रतिभा देवी आयी हैं, नई मालकिन
हैं।" कहते-कहते वह 'महात्मा गांधी की जय' के नारे
लगे। जयध्वनि से सभास्थल हिलोरें मारने लगा। पुरन्दर चिल
कह रहा था—"भाइयो! बैठ जाइये।" लेकिन कौन
है? हाकिम भी अपनी कुरसी पर खड़े होकर उधर देखने
सोचने लगे, यह वही बालिका है जिसे एक दिन अपने हृ
स्थान दिया था, जिसके मुख मण्डल को अनेक दिनों तक
के सामने रखा था।" पिछली सभी स्मृतियाँ महेन्द्र बाबू के स
नाचने लगीं। प्रकाश रास्ता दिखाता हुआ प्रतिभा को स
बीच में ले आया।

प्रतिभा के मन में लज्जा संकोच का चिन्ह भी नहीं
उसके नेत्रों से एक प्रकार की अपूर्व ज्योति निकल रहीं
प्रतिभा ने दृढ़ता के साथ सभा के चारो ओर देखकर प्रका
ओर देखा। प्रकाश ने चुपके से कहा—'तुमको जो कहना है
आदमी देर से बैठे हैं और उन्होंने काफी सुना भी है।'

प्रतिभा चुपचाप धीर-स्थिर कुछ काल खड़ी रही,
अपने स्वर को जितना ऊँचा कर सकती थी करके बोली—भाइ